नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

# नंदन

५ रुपए

अगस्त '९२

हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

## पत्र मिला

☐ मैं 'नंदन' का नियमित पाठक हूं। भारत रत्न स्व. सत्यजित राय का चित्र देखकर, मन खुशी से भर आया। अंक की सबसे अच्छी कहानियां 'रसीले आम' और 'तीन महीने तेरह दिन' रहीं।

**—संजय पांडेय, जगदल (प. बं.)**

☐ रंग-बिरंगे गुलाब इस अंक की शान थे। इस बार मैंने अपने सभी मित्रों को 'नंदन' खरीदवाई। सभी ने पत्रिका की खूब प्रशंसा की। **—संदीपकुमार सिंहल, फरीदाबाद**

☐ जब मैं 'नंदन' पढ़ने बैठती हूं,तो खाना-पीना सब भूल जाती हूं। अपने घर में रहूं या पहाड़ पर इस पत्रिका को कभी नहीं भूलती। सत्यजित राय के चित्र और कहानी के लिए बधाई।

**—दीपज्योति गुप्ता, भिंड**

☐ 'गिरा राजा' और 'कतरन' कहानियां खूब मजेदार थीं। रंगीन झांकी 'खिलते हैं गुलाब' का तो कहना ही क्या! कृपया आप 'कार्टून प्रतियोगिता' करें।

**—अनिल गर्ग, पटियाला**

☐ नंदन (जून अंक) बच्चे लाए,तो आदि से अंत तक पढ़ गया। सदैव की भांति पत्रिका उपयोगी सामग्री से भरपूर है।'अनमोल माटी'और 'बिना बालक के शहर' विशेष रूप से पसंद आईं।एरिख कैश्नर की अन्य रचनाएं भी छापिए।

**—लोकेश्वर सक्सेना, १८६/७९ गोविन्द नगर, कानपुर**

☐ 'नंदन' मेरी पुरानी दोस्त है। जून अंक में प्रकाशित कहानियों के बारे में दादाजी ने कहा—''एकमात्र ऐसी पत्रिका देख रहा हूं, जो मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धन भी करती है।'' हमारी मम्मी भी 'नंदन' की पुरानी पाठिका हैं।

**—रजनी झा, मोतिहारी (बि.)**

☐ जून '९२ अंक पढ़ा तो पढ़ता ही गया। यह एकमात्र पत्रिका है जो अट्ठाईस वर्षों से अपनी प्रसिद्धि बरकरार रखे हुए है। ताजा अंक इसी प्रसिद्धि में चार चांद लगाने वाला था।

**—सोमेश शर्मा, कुचामन (राज.)**

☐ योगेन्द्र कुमार लल्ला की कविताएं अनोखी थीं। 'जादूगर को चकमा', 'अनमोल माटी', 'छोटी परी' तथा 'घर चलो अपने' कहानियां अनमोल थीं।

**—हरिचंद, डुलियानी (हरि.)**

☐ 'नंदन' एक नदी रूपी पत्रिका है। इसकी कविताएं कहानियां, चुटकुले इसका बहता पानी, जिसे पीकर कोई भी अपनी प्यास बुझा सकता है। और इसकी प्रतियोगिताएं मोती समान, जो मेहनत करे सो पाए।

**—बसंतकुमार मंडल, झुमरी तलैया**

**इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : धीरज लोढ़ा, भिनासर (राज.); मनोज मिश्र, कलकत्ता; मुरारी लाल गुप्ता, सासाराम।**

# आओ बात करें

चोल देश के गांव में एक बालक ने जन्म लिया। माता-पिता ने उसका नाम रखा नीलन। पिता खुद बड़े शूरवीर थे। बालक को भी उन्होंने ऐसी ही शिक्षा दी। नीलन जल्दी ही घुड़सवारी और बाण चलाने में निपुण हो गया। उसके साहस के कारनामों की चर्चा होने लगी। राजा को पता चला, तो उन्होंने सेना में रख लिया। कुछ समय बाद वह सेनानायक बन गया।

दक्षिण के तिरुवालि में कुमुदवल्ली नाम की एक कन्या थी। देखने में बहुत सुंदर थी। वह श्रीनारायण की भक्त थी। नीलन ने उसे देखा, तो उस पर मोहित हो गया। उसके पिता से विवाह की बात चलाई। कुमुदवल्ली ने कहा कि वह उसी से विवाह करेगी जो विष्णु का भक्त हो। नीलन ने शर्त मान ली। वह वैष्णव आचार्य के पास गए। उनसे दीक्षा ली। लौटकर आए, तो कुमुदवल्ली बोली— "मात्र दीक्षा से कोई एकदम बदल नहीं जाता। आप एक वर्ष तक एक हजार आठ दीन-हीन लोगों को भोजन कराएं।"

नीलन ने यह दूसरी शर्त भी मान ली। वर्ष बीतने पर दोनों का विवाह हो गया।

हर रोज निर्धन लोगों को भोजन कराने से नीलन का मन बदल गया। दिनोंदिन मन भगवान की ओर लगने लगा। वह सोचते—'धन-सम्पत्ति का भला क्या उपयोग ? यह भक्तों के काम आए तभी ठीक है।' इसलिए उनके यहां भंडारा ही चालू हो गया।

धन-सम्पत्ति खत्म हो गई। लेकिन उन्होंने सेवा के इस काम को बंद नहीं किया। उन्होंने चोल राजा को सालाना कर देने के लिए जो रुपया रखा था, वह भी खर्च हो गया। कई महीने निकल गए, राजकोष में कर जमा नहीं हुआ। लोगों ने राजा के कान भरे। राजा ने नीलन को गिरफ़्तार करने का आदेश दे दिया। सेना की एक टुकड़ी भेज दी गई। पर नीलन के सामने कौन टिकने वाला था ? राजकीय सेना को खाली हाथ लौटना पड़ा तब राजा स्वयं काफी सेना लेकर आए। नीलन ने वीरता के साथ मुकाबला किया।

राजा ने नीलन से कहा—"तुमने सेनानायक होकर सेना के साथ युद्ध किया। यह गलत किया। सालाना कर तो भरना ही होगा। जब तक राजकोष में कर जमा न हो, तुम कारागार में रहोगे।"

बंदी के रूप में कारागार में नीलन दीन-हीन लोगों की सेवा कैसे करते ? उन्होंने उपवास शुरू कर दिया। भक्त के लिए भगवान का आसन डोला। उन्होंने सपने में नीलन को बताया—"कांची नगरी में वेगवती नदी के तट पर अमुक जगह अतुल सम्पत्ति गड़ी है।"

नीलन ने राजा से कहलवाया कि कांची नगरी जाकर वह सारा कर चुका देंगे। राजा ने बात मान ली। उन्हें कांची नगरी जाने दिया। नीलन ने कर चुका दिया। फिर से निर्धनों को भोजन कराने का काम भी शुरू कर दिया। लेकिन दीन-हीन लोगों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी। सारा धन फिर खत्म हो गया।

अब नीलन ने एक गिरोह बना लिया। वह अमीरों को लूटने लगा। लूट के माल में से वह अपने लिए कुछ न रखता। सब गरीबों में बांट देता।

एक दिन एक महाजन और उसकी पत्नी कहीं जा रहे थे। सेठानी गहनों से लदी थी। नीलन ने उन्हें घेर लिया। धमकी देकर सारे गहने उतरवा लिए। ढेर-सा सोना और हीरे-मोती। गठरी में सब बांध लिया। पर यह क्या—गठरी तो किसी से उठाई नहीं जा रही थी!

नीलन ने महाजन से कहा—"तुमने क्या मंत्र फूंका है ? बताओ, नहीं तो यहां से जाने न दूंगा।"

महाजन नीलन को एक ओर ले गया। उसके कान में अष्टाक्षर मंत्र पढ़ा। नीलन के शरीर में जैसे बिजली कौंध गई। तभी उसने देखा कि वहां न महाजन है, न उसकी पत्नी। नीलन समझ गया कि गलत मार्ग से बचाने के लिए स्वयं नारायण और लक्ष्मी ही वहां आए थे। नीलन का जीवन बदल गया। मंत्र से उसके सब पाप धुल गए। उन्होंने भगवान की स्तुति में हजारों पद रचे, जिन्हें महावाक्य कहा जाता है।

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं लो।

—तुम्हारे भइया

# नंदन

अगस्त '९२
वर्ष : २८ अंक : १०

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

## कहां क्या है

कहानियां



कविताएं



इस अंक में विशेष



स्तम्भ



मुखपृष्ठ , एलबम : देवव्रत बनर्जी, अखिलेश

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चंद्रप्रकाश, डा. नरेन्द्रकुमार; चित्रकार : प्रशांत सेन

# मेरी पोटली

—कविराज ओमप्रकाश

अचलगढ़ पर उदासी की छाया मंडरा रही थी। कारण था सीमाओं पर चलने वाला युद्ध। अचलगढ़ अपने कलापूर्ण मंदिरों के लिए प्रसिद्ध था। दूर-दूर से लोग वहां आते थे।

लेकिन युद्ध शुरू होने के बाद से सब ठप्प हो गया था। अब तो रात भर धांय-धांय की आवाजें सुनाई देती थीं। सैनिक दस्ते युद्ध भूमि की ओर जाते थे और दिन भर घायल सैनिकों से लदी गाड़ियां नगर में आती रहती थीं।

नगर के अस्पतालों में सब घायलों के लिए स्थान नहीं था। इसलिए मैदानों में तम्बू लगाकर काम चलाऊ अस्पताल बना दिए थे। लेकिन घायलों के इलाज की समुचित व्यवस्था नहीं थी। वे हर समय चीखते-चिल्लाते रहते थे। नगर के एकमात्र अस्पताल में बड़े सैनिक अधिकारियों के इलाज का इंतजाम था। वहां साधारण सैनिक नहीं जा सकते थे।

इस बात से अचलगढ़ के नागरिक रुष्ट थे। यह बात अक्सर सुनाई दे जाती थी—'सीमाओं की रक्षा करने वाले वीर सैनिकों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों ?' पर खुले आम कहने का साहस किसी में नहीं था।

अचलगढ़ के सेनापति थे रामसिंह। युद्ध के संचालन की जिम्मेदारी उन्हीं पर थी। राजा देवप्रिय को अपने सेनापति पर पूरा भरोसा था। रामसिंह एक वीर सैनिक थे, पर उनमें घमंड की भावना बहुत अधिक थी। वह अपने अधीन सैनिकों से बहुत कड़ा व्यवहार करते थे। लोगों को सेनापति से शिकायत थी, पर किससे कहते ? एक बार कुछ घायल सैनिकों ने राजा देवप्रिय से मिलना चाहा, पर राजा उनसे नहीं मिले। घायल सैनिक निराश लौट आए। कोई कुछ समझ नहीं पा रहा था कि क्या किया जाए।

एक दिन की बात। सेनापति रामसिंह रथ में कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक घायल सैनिक को बैसाखी के सहारे जाते देखा। सैनिक ने इशारे से सेनापति का रथ रोकना चाहा, पर रामसिंह रुके नहीं। रथ धड़धड़ाता हुआ आगे चला गया।

रथ को तेजी से जाते देख घायल सैनिक निराश हो उठा। वहीं सड़क के किनारे बैठ गया। वह पीड़ा से कराह रहा था। उसे उम्मीद थी कि सेनापति उसका निवेदन अवश्य सुनेंगे, पर.....

तभी वहां एक बूढ़ा आया और सैनिक के पास बैठ गया। बूढ़े के सिर पर पगड़ी थी, बदन पर फटे-पुराने कपड़े। उसने सैनिक से पूछा—''क्यों भैया, सेनापति ने तुम्हारी बात नहीं सुनी ?''

बूढ़े के इतना कहते ही सैनिक की आंखों में आंसू आ गए। उसने कहा—''मैं एकदम बेसहारा हो गया हूं। क्या करूं, कहां जाऊं ?''

बूढ़े ने उसकी कमर थपथपा दी। बोला—''ईश्वर की बनाई दुनिया बहुत बड़ी है। चिंता मत करो।'' अपने थैले से निकालकर रोटियां उसे दीं। फिर कुछ पत्तियां तोड़कर लाया। कहा—''इन्हें चबा लो।'' पत्तियों में जैसे जादुई प्रभाव था। सैनिक की पीड़ा कम हो गई। बूढ़े ने कहा—''मैं तुमसे हर दिन मिला करूंगा। अब तुम नगर वापस चले जाओ।''

''बाबा, आप कौन हैं ? आप मुझे कैसे और कहां मिलेंगे ? इतना और बता दो।''—सैनिक ने कृतज्ञ भाव से पूछा।

सुनकर बूढ़ा हंस पड़ा और बिना कुछ बोले वहां से चला गया। सैनिक आश्चर्य से देखता रह गया।

कुछ समय बाद सेनापति रामसिंह का रथ उसी मार्ग से वापस लौटा। पीछे-पीछे घुड़सवार आ रहे थे। एकाएक रामसिंह को गहरी थकान महसूस हुई। मन हुआ, रथ रुकवा कर उतर पड़ें और कुछ देर विश्राम करें। रथ रोका गया। तभी रामसिंह के सामने एक बूढ़ा आया। उसने कहा—"सेनापति, आप बहुत थक गए हैं। यहां से थोड़ी दूर पर एक मंदिर है। वहां भगवान के दर्शन करने से आपका चित्त प्रसन्न होगा, थकान मिट जाएगी।"

सचमुच वहां पहुंचते ही रामसिंह की थकान जैसे छूमंतर हो गई। कुछ देर वहां बिताने के बाद रामसिंह चलने लगे, तो बूढ़े से पूछा—"मैंने पहले कभी यह मंदिर नहीं देखा। इसे किसने बनवाया?"

"ईश्वर ने।"—बूढ़ा अब भी हंस रहा था।

"यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है।"—सेनापति रामसिंह ने गुस्से से कहा।

—"उत्तर यही है। अब मैं आपसे प्रश्न करता हूं। आप घायल सैनिकों के इलाज का सही प्रबंध क्यों नहीं करवाते?"

"तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मुझे सीख दो।"—रामसिंह का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। उन्होंने सैनिकों से कहा—"पकड़ लो इसे।" सैनिक आगे आए, पर बूढ़ा वहां था ही नहीं। न जाने कहां गायब हो गया था? रामसिंह हैरान रह गए। पर करते क्या! मन-ही-मन निश्चय किया—'अगर वह बूढ़ा फिर कभी नजर आया, तो कड़ा दंड दूंगा।' इसके बाद रथ में बैठकर राजधानी लौट आए। मन में रह-रहकर प्रश्न उठता —'कौन था वह बूढ़ा?'

कुछ समय बाद सीमा पर चल रहा युद्ध बंद हो गया। अचलगढ़ के नागरिकों ने चैन की सांस ली। उन्हें लगा—अब जल्दी ही सब ठीक हो जाएगा। पर घायल सैनिक उसी तरह परेशान होते रहे। उनके लिए राजा या सेनापति के मन में जैसे कोई सहानुभूति नहीं थी।

युद्ध बंद होने के कुछ दिन बाद की घटना। सेनापति रामसिंह अपनी हवेली के उद्यान में टहल रहे थे। तभी एक सैनिक दौड़ा-दौड़ा आया। "हुजूर, सरकार!" —उसने हाथ जोड़कर कहा—"वह पागल नहीं मानता। हवेली की दीवार के पास बैठा है।"

"कौन नहीं मानता? किसे पागल कह रहे हो?"— रामसिंह ने पूछा।

"सरकार, आप स्वयं देख लीजिए।"—कहकर सैनिक ने हवेली के दूसरी तरफ संकेत किया। रामसिंह तेजी से उधर बढ़े। उन्होंने देखा, हवेली की दीवार के पास एक बूढ़ा खड़ा था। नजरें मिलते ही रामसिंह उसे पहचान गए। यह वही बूढ़ा था, जो उन्हें कुछ दिन पहले मिला था। फिर रहस्यमय ढंग से गायब हो गया था।

"क्या बात है?"—रामसिंह ने अपने क्रोध को दबाते हुए पूछा।

"कुछ नहीं, मैं कुछ देर आराम करना चाहता हूं। इसलिए यहां पोटली रखकर बैठा हूं।" बूढ़े ने कहा—"पर आपके नौकर मानते ही नहीं। मुझे आराम नहीं करने देते।"

रामसिंह ने देखा, दीवार के साथ एक बहुत बड़ी पोटली रखी हुई थी। उन्होंने चीखकर कहा—"इसे भगा दो। नहीं, नहीं, गिरफ़्तार कर लो।"

आदेश सुनकर दो जने बूढ़े की तरफ लपके। तभी एक चीख सुनाई दी। कोई चीज ऊपर से आकर बूढ़े की पोटली पर गिरी।

"साहब, बिटिया छत से गिर गई। साहब....." हवेली के अंदर से एक नौकर चीखता हुआ बाहर आया।

रामसिंह ने देखा, सचमुच उनकी छोटी बेटी नंदिता पोटली के ऊपर पड़ी थी। उसकी आंखें बंद थीं। वह जोर-जोर से सांस ले रही थी। रामसिंह ने झपटकर नंदिता को गोद में भर लिया।

तब तक रामसिंह की पत्नी भी हवेली के अंदर से निकल आईं। वह जोर-जोर से रो रही थीं। रामसिंह ने कहा—"घबराओ मत, नंदिता को कुछ नहीं हुआ है। बस, जरा डर गई है।" नंदिता न जाने कब हवेली की छत पर पहुंच गई थी। वहां से वह सीधी जमीन पर रखी पोटली पर गिरी। रामसिंह चौंक उठे—'अगर बूढ़े की पोटली यहां न रखी होती, तो नंदिता सीधी जमीन पर आकर गिरती और ....'

"वह बूढ़ा कहां गया? बुलाओ, उसी के कारण हमारी बेटी के प्राण बचे हैं। हम उसे इनाम देंगे।"— वह एक सांस में कह गए।

नौकरों ने इधर-उधर ढूंढा, पर बूढ़े का कहीं पता न चला। वह जैसे हवा में घुल गया था।

नगर में इस घटना की चर्चा होने लगी। सब हैरान थे। रामसिंह रह-रहकर सोचते—'अगर बूढ़े ने अपनी पोटली वहां से हटा ली होती, तो....' और इससे आगे सोचने की हिम्मत उनमें नहीं थी।

लेकिन जल्दी ही एक नई समस्या पता चली। नंदिता ने बोलना बंद कर दिया था। गिरने से पहले तीन साल की लड़की खूब बोलती थी। गिरने से शायद उसके दिमाग पर चोट आई थी। ऐसा आघात लगा था कि वह एकदम चुप हो गई थी।

नंदिता का इलाज चलता रहा, पर उसकी चुप्पी न टूटी। रात-रात भर सेनापति रामसिंह तथा उनकी पत्नी नंदिता के सिरहाने बैठे रहते। एक रात उन्होंने सुना, नंदिता नींद में कुछ बड़बड़ा रही है। वह ध्यान से सुनने लगे। वह कह रही थी—"बाबा.... बाबा.... ?"

"यह बाबा किसे कह रही थी ?" —रामसिंह ने पत्नी से पूछा। फिर एकाएक स्वयं ही बोल उठे—"कहीं उसी बूढ़े को तो नहीं। क्योंकि वह बूढ़ा बाबा ही तो था। पर उसे कहां ढूंढूं ? मुझे लगता है, वही नंदिता को ठीक कर सकता है।" कहते-कहते उनकी आंखों में आंसू आ गए। उन्हें बूढ़े के प्रति अपना व्यवहार याद आ रहा था। वह मन-ही मन पछता रहे थे।

सुबह होते ही रामसिंह बूढ़े की खोज में निकल पड़े। वह घोड़े पर बैठकर सुबह से शाम तक घूमते रहे पर बूढ़ा उन्हें कहीं नजर न आया। दिन ढले लौटते, तो एकदम थके हुए—उदास।

इसी तरह कई दिन बीत गए। एक शाम रामसिंह भारी कदमों से हवेली में घुसे। उन्हे देखते ही पत्नी ने हंसकर कहा—"आज बूढ़ा बाबा आया था। उसने आकर नंदिता को गोद में उठाया, तो वह एकदम बोलने लगी।

रामसिंह ने झपटकर बेटी को गोद में उठा लिया, उसे प्यार करने लगे। नंदिता कह रही थी—"बूढ़ा बाबा आया था।"

अब जाकर रामसिंह को चैन पड़ा। उन्होंने पत्नी से कहा—"तुमने उसका नाम-पता पूछा? मैं स्वयं जाकर उससे माफी मांगूंगा।"

"पूछा था, पर उसने बताया नहीं। बस, इतना कहकर चला गया—'मैंने सेनापति जी से कुछ कहा था।" —पत्नी ने बताया।

रामसिंह को एकदम याद आ गया कि बूढ़े ने घायल सैनिकों के बारे में उनसे क्या कहा था। उन्होंने उसी समय घायलों की विशेष चिकित्सा के आदेश दिए। स्वयं जाकर सारा प्रबंध कराया। अब रामसिंह स्वयं सुबह-शाम जाकर घायलों के हाल-चाल पूछते थे। लोग उनके परिवर्तन को देखकर चकित थे लेकिन असली कारण कोई नहीं जानता था। ●

# हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

# तालाब में पगड़ी

—डा. भैंरूलाल गर्ग

मेवाड़ के महाराणा जगतसिंह की मृत्यु के बाद उनका पुत्र राजसिंह गद्दी पर बैठा। राजसिंह उस समय किशोर ही था।

महाराणा जगतसिंह का एक सामंत था—कुंवारिया का दूदिया चंद्रभानु। संयोग की बात थी कि चंद्रभानु और उसके राजा राणा जगतसिंह की एक साथ मृत्यु हुई। अब चंद्रभानु के स्थान पर सामंत बना चंद्रभानु का पुत्र सरदारसिंह। मेवाड़ के राणा राजसिंह और उनका सामंत सरदारसिंह, दोनों की उम्र लगभग बराबर ही थी। दोनों साथ-साथ खेला करते थे और इच्छानुसार घूमने के लिए जाया करते थे।

किशोर राणा राजसिंह प्रायः सरदारसिंह को साथ लेकर राजधानी स्थित सहेलियों की बाड़ी नामक बगीचे में जाया करता। उसके पास ही एक तालाब है—उसमें दोनों स्नान किया करते थे।

एक दिन स्नान करते समय राजसिंह के मन में आया कि स्नान करते समय सरदारसिंह पगड़ी क्यों नहीं उतारता है? उसे संदेह हुआ कि इसमें कुछ रहस्य है। उसने सोचा, शायद सरदारसिंह अपने सिर की किसी

खराबी को छिपाने के लिए ही ऐसा करता है।

अब राणा राजसिंह, सरदारसिंह के पगड़ी न उतारने के रहस्य को जानने की कोशिश करने लगा। वह सीधे-सीधे उससे कुछ पूछना नहीं चाहता था। हो सकता है, इससे सरदारसिंह नाराज भी हो जाए। इसके लिए राणा अब किसी उचित अवसर की तलाश में था।

एक दिन राणा ने सरदारसिंह से कहा—"आओ, आज हम सहेलियों की बाड़ी के तालाब में स्नान करने चलते हैं। आज जल क्रीड़ा भी करेंगे।" सरदारसिंह राणा के साथ हो गया।

दोनों तालाब में उतरे और लुका-छिपी का खेल खेलते हुए, जल क्रीड़ा करने लगे। खेल ही खेल में सरदारसिंह की पगड़ी राजसिंह के हाथ में आ गई। उसने उसे जोर से खींचा, तो सरदारसिंह की पगड़ी खुलकर पानी में गिर गई। तभी राजसिंह ने सरदारसिंह के सिर को देखा। उसके सिर पर बाल नहीं थे। अब राजसिंह को समझते देर न लगी कि सरदारसिंह गंजा है। अपने गंजेपन को छिपाए रखने के लिए ही वह किसी के सामने अपनी पगड़ी नहीं खोलता है। सरदारसिंह के बिना बालों के सिर को देखकर राजसिंह को हंसी आ गई। एकाएक उसके मुंह से निकल पड़ा—"आपके सिर के बाल कहां गए ?"

यह सुनकर सरदारसिंह को लज्जा अनुभव हुई। उसने सोचा, राणा ने ऐसा मजाक करके उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाई है। आखिर वह भी एक सामंत है। वह भी कम बुद्धिमान नहीं। तुरंत सरदारसिंह ने एक युक्ति सोची।

अपनी हाजिर जवाबी का परिचय देते हुए राजसिंह ने कहा—"महाराज ! पूर्वजन्म में मैं आपका शिष्य था और आप योगी थे। बद्रीनाथ के ऊंचे शिखर पर जब आप तपस्या करते थे, उस समय आपके यज्ञ कुंड के लिए मैं अपने सिर पर लकड़ियों का गट्ठर रखकर लाया करता था। लम्बे समय तक ऐसा करने से एक समय ऐसा आया कि मेरे सिर के सारे बाल उड़ गए।"

सरदारसिंह का उत्तर सुनकर राणा जल-भुन गया। उसने आवेश में आकर सोचा— 'सरदारसिंह हमारा सामंत है। उसे इस तरह अपने राणा को जवाब देने का क्या अधिकार है ?' अपने क्रोध पर नियंत्रण रख, राणा ने कहा—"सरदार, तुमने जो कुछ कहा है, इसका तुम्हें प्रमाण देना होगा। अगर तुम प्रमाण दे सके, तो तुम्हें पुरस्कृत किया जाएगा, अन्यथा अपने राणा को जवाब देने की सजा है प्राणदंड।"

सामंत सरदारसिंह राणा राजसिंह की बात मान गया। उसने कहा—"महाराज, कुंवारिया के मंदिर का देवता इसका प्रमाण दे सकता है।"

राणा ने सरदारसिंह की बात सुनी। उसने सोचा—'देवता के प्रमाण के लिए सरदारसिंह की बात पर ही कैसे विश्वास कर लिया जाए ?' राणा ने अपने विश्वासपात्र सेवकों को सरदारसिंह के साथ भेज दिया। उसने कहा कि देवता जो प्रमाण देता है, उसे उसी रूप में तुम्हें मेरे सामने प्रस्तुत करना होगा।

सरदारसिंह सेवकों के साथ कुंवारिया आ गया। कुंवारिया के पास ही गोपालपुर नामक एक छोटा-सा गांव है। यहां बगड़ावत शाखा के लोग रहा करते थे। इन्हीं के गांव में देवनारायण का एक मंदिर था। सरदारसिंह ने यहां पहुंचकर देवनारायण की आराधना की।

जब सरदारसिंह की आराधना से देवनारायण प्रसन्न हो गए, तो उनकी मूर्ति पर से एक फूल गिरकर सरदारसिंह के हाथ में आ गया। उसी समय आकाशवाणी हुई—"तुम इस फूल को ले जाओ और

इसे राणा को दे दो। यह फूल ही तुम्हारी बात का प्रमाण है।''

यह देख-सुन राणा के सेवक हतप्रभ रह गए। सभी ने देवनारायण का जय-जयकार किया।

सामंत सरदारसिंह राणा के सेवकों के साथ उदयपुर लौट आया। राणा के हाथ में फूल देते हुए उसने आकाशवाणी की बात सेवकों की उपस्थिति में राणा को सुनाई। राणा को अपनी भूल का अहसास हुआ। राणा ने सरदारसिंह की बात पर विश्वास कर लिया कि पूर्व जन्म में वह योगी था और सरदारसिंह उसका शिष्य।

अब राणा को पश्चात्ताप हुआ कि मैंने ही सामंत सरदारसिंह का मजाक उड़ाया और उसे अपनी सही बात का प्रमाण देने के लिए भी विवश किया।

राणा ने अपने किए के प्रायश्चित स्वरूप सरदारसिंह से कहा—''तुमने मुझे अपने पूर्वजन्म के बारे में बताकर उपकार किया। हो सकता है, पूर्वजन्म की कठिन तपस्या के बल पर ही मैं इस जन्म में राजा बना। मैं तुम्हारी बात से बड़ा प्रसन्न हूं। मांगो, तुम्हें क्या पुरस्कार चाहिए ?''

सरदारसिंह ने कहा—''अगर आप पुरस्कार में कुछ देना ही चाहते हैं, तो मुझे कुंवारिया गांव से लगा लावा नामक गांव और उसकी सम्पूर्ण भूमि दे दी जाए।''

राणा राजसिंह उस समय अवयस्क था। उसकी माता ही उस समय उसके नाम से मेवाड़ के शासन का संचालन कर रही थी। राणा ने तो अपनी मां की स्वीकृति के बिना ही सरदारसिंह के पुरस्कार की बात को मान लिया था। उसने सोचा था कि मां भी उसकी बात को मान जाएगी।

राणा ने राजमहल में पहुंच, अपनी मां को सारी बात कह सुनाई। लावा और उसकी समस्त भूमि रानी के अधिकार में थी। यह भूमि राज्य की खास भूमि होने के कारण किसी को नहीं दी जा सकती थी।

लेकिन मां ने राजसिंह के पूर्वजन्म में योगी और सरदारसिंह के उसके शिष्य होने की बात पर सहज ही विश्वास कर लिया। उसने राजसिंह को समझाते हुए कहा—''बेटे, सरदारसिंह हमारी खास भूमि को न लेकर दूसरी कोई भी भूमि ले सकता है। अगर वह चाहे, तो उसे मेवाड़ का राज्य तक दिया जा सकता है।''

माता की यह बात सुनकर, राणा को गहरा धक्का लगा। उसने सोचा, वह अपने वचन से कैसे टल सकता है ? राणा को इतना असंतोष हुआ कि उसने आवेश में आकर कह डाला—''अच्छा, मैंने सरदारसिंह को मेवाड़ का राज्य दिया।''

उसी समय सामंत सरदारसिंह को बुलाया गया। राजसिंह ने कहा—''मैंने तीन दिन के लिए सम्पूर्ण मेवाड़ राज्य आपको दे दिया। उन तीन दिनों में आप मेवाड़ राज्य में जो चाहें, कर सकते हैं। मेरा शस्त्रागार, खजाना, राज्य की सेना, सिंहासन तथा मंत्री और सामंत आदि सब कुछ तीन दिनों के लिए आपके अधिकार में होगा।''

सरदारसिंह ने राणा राजसिंह के इस निर्णय को स्वीकार कर लिया और वह तीन दिनों के लिए मेवाड़ राज्य का शासक बन गया।

सामंत सरदारसिंह ने सोचा, ऐसा अवसर फिर कहां आएगा ? अपने प्रदेश में इसी बहाने अवश्य कुछ हो सकता है। यही सोच, उसने राजधानी की कीमती चीजों और खजानों के रुपयों को कुंवारिया भेजना शुरू कर दिया। राणा राजसिंह अब कुछ कर भी नहीं सकता था।

राणा ने तीन दिन के लिए अपने आपको अपने निजी महल में बंद कर लिया। तीन दिन में सरदारसिंह ने तो जैसे मेवाड़ का खजाना ही खाली कर दिया। चौथे दिन उसने राणा को राज्य सौंप दिया।

सामंत सरदारसिंह ने मेवाड़ राज्य के धन से लावा में कई निर्माण कार्य कराए। उसने एक अभेद्य दुर्ग बनवाया। एक महल और एक विशाल तालाब का निर्माण करवाया।

लावा ग्राम का नाम बाद में सरदारसिंह के नाम पर लावा सरदारगढ़ पड़ा जो आज भी प्रचलित है। सामंत सरदारसिंह 'तीन दिन का राजा' के रूप में इतिहास में सदा-सदा के लिए अमर हो गया।

# छोटा-बड़ा

—गणेश सेंगर

महाराजा मणिदीप के दो पुत्र थे। भद्रसेन तथा रुद्रसेन। दोनों राजकुमार जुड़वां पैदा हुए थे, परंतु दासियों की गलती से यह स्पष्ट नहीं हो सका कि इनमे से बड़ा राजकुमार कौन है और छोटा कौन?

दोनों के व्यवहार में बड़ा अंतर था। एक ओर जहां भद्रसेन सुशील, नम्र और सरल स्वभाव का था, वहीं रुद्रसेन क्रोधी, स्वार्थी और झगड़ालू। जब राजकुमार भद्रसेन प्रजा के बीच जाते, तो सब आदर के साथ प्रणाम करते। राजकुमार रूद्रसेन का रथ आता, तो सब लोग उसके भय से भागकर घरों में छिप जाते।

महाराजा मणिदीप अब वृद्ध हो चले थे। एक दिन उन्होंने सोचा, राजकुमारों में बड़े-छोटे का पता नहीं है इसलिए राज्य को बराबर-बराबर दो भागों में बांट देना ठीक रहेगा। उन्होंने दोनों बेटों को बुलाकर कहा—"मुझे यह पता नहीं है कि तुम दोनों में से बड़ा कौन है। इसलिए मैं चाहता हूं कि राज्य तुम दोनों को बराबर-बराबर दे दिया जाए। तुम दोनों अपना-अपना राज्य संभालो। मुझे तपस्या करने के लिए वन जाने दो।" यह सुनकर राजकुमार रूद्रसेन क्रोधित हो उठा और बोला—"मैं आधा भाग नहीं, सारा राज्य लूंगा। मैं भद्रसेन को राज्य का जरा-सा भाग भी नहीं दूंगा।"

राजा मणिदीप रूद्रसेन की धृष्टता से अत्यंत क्रोधित हो उठे। बोले—"तो मेरा निर्णय है कि तुम्हें राज्य का थोड़ा-सा भी भाग नहीं दिया जाएगा।" इस पर रूद्रसेन ने तलवार निकाल ली। भद्रसेन भाई का इरादा समझ गया। स्थिति के बिगड़ने से पहले ही भद्रसेन ने बीच-बचाव किया और महाराज को शांत कर निवेदन किया— "आप संपूर्ण राज्य भाई रूद्रसेन को दे दें। मुझे राज्य की कोई लालसा नहीं है। मैं तो आपकी सेवा करना चाहता हूं। आप वन में तपस्या करने जाएंगे तो मैं भी साथ चलूंगा।"

वन में पहुंचकर नदी के किनारे भद्रसेन ने कुटिया का निर्माण किया। उसमें माता-पिता के रहने की व्यवस्था कर की। जंगल से मधुर फल और कंद-मूल लाकर भोजन का प्रबंध कर दिया। वह प्रातः महाराजा मणिदीप तथा रानी मां के लिए आवश्यक सामग्री ले आता। फिर स्वयं नदी में नहा-धोकर बरगद के नीचे बैठकर ध्यान मग्न हो जाता।

एक दिन भद्रसेन वन में जा रहा था। तभी उसने किसी की पुकार सुनी—'रुको भद्रसेन।' भद्रसेन ठहर गया। उसने देखा, एक वृक्ष के नीचे एक तपस्वी खड़े थे। भद्रसेन ने बढ़कर उनके चरण छू लिए। हाथ जोड़कर बोला—"आज्ञा दीजिए प्रभु।"

तपस्वी ने अपना वरद हस्त राजकुमार के सिर पर रख दिया। बोले—"देवता तुम्हारी निष्ठा, भक्ति से प्रसन्न हैं, तुम अपने माता-पिता के योग्य बेटे हो। देवताओं की आज्ञा से हम तुम्हारे लिए विशेष उपहार लेकर आए हैं।"

तपस्वी के संकेत करने पर भद्रसेन ने देखा, आकाश से एक घोड़ा नीचे उतर रहा था। वह आश्चर्य में डूब गया। तपस्वी बोले—"यह उड़ने वाला घोड़ा है। इस पर बैठकर जहां जाने की इच्छा करोगे, यह तुम्हें वहीं पहुंचा देगा। जब चाहोगे अदृश्य भी हो जाएगा। हम चाहते हैं, अब तुम अपने खोए राज्य को प्राप्त कर लो। इस काम में देवताओं का दिया हुआ यह घोड़ा तुम्हारी सहायता करेगा।"

भद्रसेन को जैसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था। पर महात्मा जी का दिया दिव्य घोड़ा पास ही खड़ा

था। भद्रसेन ने स्वयं उसे आकाश से उतरते हुए देखा था। आखिर उसने निश्चय किया—'मुझे महात्मा जी की आज्ञानुसार भाई को सुधारने का प्रयास करना ही चाहिए।'

भद्रसेन ने एक योजना बनाई। और एक रात घोड़े पर बैठकर रूद्रसेन के महल में चलने को कहा। घोड़ा उसे लेकर हवा में उड़ा और बात की बात में राजमहल में पहुंच गया।

भद्रसेन ने पहले कक्ष में जलते दीपक बुझा दिए, फिर धक्का मारकर रूद्रसेन को पलंग से नीचे गिरा दिया। वह डरकर जोर-जोर से चीखने लगा। पहरेदारों को पुकारने लगा। इस बीच भद्रसेन उड़ने वाले अश्व पर बैठकर वहां से चला गया।

उस घटना के बाद से रूद्रसेन के मन में डर बैठ गया। उसने राजमहल में चौकसी कड़ी कर दी। सब तरफ सैनिक तैनात कर दिए गए। लेकिन भद्रसेन के उड़ने वाले घोड़े को भला कौन रोक सकता था? अगली रात वह फिर राजमहल में आ पहुंचा। उड़ने वाले घोड़े पर बैठकर वह भी अदृश्य हो जाता था। उसने बाण चलाकर राजमहल के सारे दीप बुझा दिए। सैनिक रूद्रसेन के शयन कक्ष की ओर दौड़े, तो भद्रसेन ने कई सैनिकों को गिरा दिया। सैनिक समझे महल में शत्रु घुस आए हैं, वे आपस में ही लड़ने लगे। सब तरफ चीख-पुकार गूंजने लगी।

इसके बाद भद्रसेन भाई के शयन कक्ष में पहुंचा। रूद्रसेन डर से चीख,चिल्ला रहा था। अंधेरे के कारण उसकी घबराहट और भी बढ़ गई थी। भद्रसेन ने उस पर पानी से भरा मटका उड़ेल दिया, फिर धक्का देकर बाहर निकल गया। उड़ने वाला घोड़ा पहले की तरह उसे सकुशल वन में वापस ले आया।

उधर रूद्रसेन बेतरह परेशान था। सोच रहा था—'ये क्या अनहोनी घटनाएं हो रही हैं! कोई मनुष्य तो मालूम नहीं देता।' उसने सेनापति और मंत्री को बुलाकर डांटा-फटकारा तथा सुरक्षा व्यवस्था ठीक करने को कहा। वे लोग स्वयं परेशान थे पर अन्यायी रूद्रसेन को इस तरह घबराया हुआ देखकर मन ही मन प्रसन्न भी थे। सच कहा जाए तो पूरे राज्य में कोई उसका मित्र नहीं था।

अगली रात भद्रसेन फिर महल में आ गया। उड़ने वाला घोड़ा अदृश्य होकर महल की छत पर खड़ा रहा। भद्रसेन अंधेरे में छिप गया, फिर जोर से आवाज बदलकर बोला—"रूद्रसेन तुम अन्यायी हो। इस तरह तुम सुखी नहीं रह सकोगे।"

रूद्रसेन चिल्लाया—"तुम कौन हो! हिम्मत हो, तो सामने आओ। मैं तुम्हें कड़ा दंड दूंगा।" भद्रसेन छिपकर भाई की परेशानी का आंनद लेता रहा, फिर लौट आया।

इस तरह बार-बार परेशान होने पर रूद्रसेन की आंखें खुलीं। वह आने वाले को लाख कोशिश करके भी पकड़ नहीं पाया था। उसे लगा, वन में जाकर माता-पिता से बात करनी चाहिए। शायद वह कोई रास्ता सुझासकें। वह वन में राजा मणिदीप की कुटिया पर जा पहुंचा। माता-पिता के चरण छुए। भद्रसेन को प्रणाम किया। कहा—"पिता जी, मैं क्षमा चाहता हूं! मुझे राज्य पाने के लिए आपको अपशब्द नहीं कहने चाहिए थे। जैसा आप चाहते हैं, मैं राज्य भद्रसेन को देने को तैयार हूं।"

भद्रसेन ने पहले ही माता-पिता को पूरी घटना बता दी थी। उद्दंड और अहंकारी बेटे के स्वभाव में परिवर्तन देखकर उन्हें संतोष हुआ। तभी भद्रसेन ने कहा—"भैया, हमें पिता जी की आज्ञा माननी चाहिए। हम दोनों मिलकर शासन चलाएंगे, प्रजा के दुःख दूर करेंगे। फिर सब ठीक हो जाएगा।"

रूद्रसेन बोला—"लेकिन मेरी भी एक शर्त है! मां और पिता जी को राजधानी वापस चलना होगा। हमें उनका आशीर्वाद हर समय चाहिए।"

महाराज मणिदीप ने रूद्रसेन की बात मान ली और वे रानी के साथ राजधानी लौट आए। एक शुभ मुहूर्त में भद्रसेन का राज्याभिषेक कर दिया गया। अब दोनों भाई मिलकर न्यायपूर्वक शासन करने लगे। प्रजा सुखी हो गई।

एक दिन उड़ने वाला घोड़ा जैसे आकाश से उतरा था, उसी तरह उड़कर अदृश्य हो गया। उसका काम पूरा हो गया था। ●

# आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट**।

## कहानी लिखो : १०५

सामने प्रकाशित चित्र को देखकर एक रोचक कहानी लिखिए। उसे १० अगस्त '९२ तक **सम्पादक 'नंदन', हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा। उसे प्रकाशित भी किया जाएगा। **परिणाम—अक्तूबर '९२**

## चित्र-पहेली : १०५

**पुलिस ने पकड़े चोर** विषय पर रंगीन चित्र बनाकर १० अगस्त '९२ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें। चित्र पेंसिल से नहीं, चटख रंगों में बनाकर भेजें। चुना हुआ चित्र पुरस्कृत कर,प्रकाशित किया जाएगा। **परिणाम—नवम्बर'९२**

# अतिथि बना लो

—रमेश चंद्र शर्मा

महर्षि दुर्वासा अपने क्रोध केलिए तीनों लोकों में जाने जाते थे। उनके क्रोध से देवता, ऋषि-मुनि, मनुष्य, नाग-किन्नर सभी कांपते थे। किसी का साहस नहीं होता था कि महर्षि दुर्वासा से कुछ कहें या उनकी कही हुई बात को न मानें। एक बार महर्षि दुर्वासा कमंडल लिए घूमते फिर रहे थे। वह पहले देवलोक में पहुंचे। वहां चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—"कोई है जो मुझे अपने घर ठहराए? मैं अतिथि बनकर कुछ दिन किसी के घर ठहरना चाहता हूं। मगर मेरी एक शर्त भी है। जो ठहराएगा, उसे मेरी हर बात माननी होगी। यदि मुझे किसी बात पर क्रोध आ गया, तो उसे भरपूर दंड दूंगा। है किसी में साहस जो मेरी शर्तों को स्वीकार कर, मुझे अपना अतिथि बना ले?"

इतना साहस किसी में न था। कौन बेबात की मुसीबत अपने सिर ओढ़ता। उनकी ललकार सुनकर सभी चुप रह जाते। किसी ने भी उनको अपना अतिथि बनाकर रखना स्वीकार नहीं किया। दुर्वासा बड़े परेशान। देवलोक के बाद नाग लोक जा पहुंचे। लेकिन किसी ने उन्हें अपना अतिथि नहीं बनाया। अब वह पहुंचे पृथ्वी पर। यहां भी दुर्वासा अपनी बात कहते हुए घूमते रहे। अंत में घूमते हुए द्वारिका में पहुंचे। श्रीकृष्ण को उनके आने की सूचना मिली। सेवकों ने आकर यह भी बता दिया कि दुर्वासा क्या कह रहे हैं। सुनकर कृष्णजी मुसकराए। उन्होंने अपने सेवकों को आज्ञा दी—"जाओ, उन्हें आदर के साथ राजमहल में ले आओ।" आज्ञा पाकर सेवक दौड़े-दौड़े गए। उन्होंने महर्षि दुर्वासा से कहा—"महर्षि, महाराज श्रीकृष्ण ने आपको निमंत्रण भेजा है। आप अतिथि होकर राजमहल में पधारें।" दुर्वासा तुरंत सेवकों के साथ कृष्णजी के महल की ओर चल पड़े।

राजमहल के द्वार पर श्रीकृष्ण और रुक्मिणी ने उनका स्वागत किया। अंदर ले गए। वहां अतिथिगृह में उनके ठहरने की व्यवस्था कर दी गई। अनेक सेवकों को देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया। उनसे कह दिया गया कि महर्षि जब भी जिस वस्तु के लिए कहें, तुरंत उपलब्ध कराई जाए। उनकी सेवा में जरा भी चूक न होने पाए।

महर्षि दुर्वासा आनंद पूर्वक राजमहल में रहने लगे। जो कहते वह तुरंत हाजिर हो जाता। इसी तरह दो दिन बीत गए। महर्षि दुर्वासा परेशान। यहां तो क्रोध का अवसर ही नहीं मिल रहा था। सोचने लगे यहां तो उनके क्रोध से कोई भयभीत ही नहीं हो रहा है। जब उनकी हर इच्छा की पूर्ति हो रही थी, तब क्रोध कैसे आता!

जब दुर्वासा जी से न रहा गया, तो उन्होंने अपने मन में कुछ सोचा और अतिथिगृह में रखी बहुमूल्य वस्तुओं को तोड़ना-फोड़ना शुरू कर दिया। यह खबर श्रीकृष्ण जी के पास पहुंची। उन्होंने सेवकों से कहा—"महर्षि जो भी कर रहे हैं, करने दो। उन्हें बिल्कुल मत रोकना और जो चीजें टूट गई हैं, उनके स्थान पर दूसरी चीजें रखवा दो।"

श्रीकृष्ण की आज्ञा का तुरंत पालन हुआ। दुर्वासा भी आश्चर्यचकित थे कि इतना नुकसान होने के बाद भी किसी ने कुछ नहीं कहा। वह फिर सोच में पड़ गए। तीसरे दिन उन्होंने अपने कक्ष में आग लगा दी। जब तक सेवक दौड़े आए, सारा सामान राख हो गया। सेवक मन में बहुत झल्लाए, किंतु श्रीकृष्ण जी की आज्ञा थी, क्या कहते। उसी समय श्रीकृष्ण स्वयं दुर्वासा के पास आए। बोले—"महर्षि, मुझे बड़ा खेद है, आपकी समुचित सेवा नहीं हो पा रही है। मेरे अपराध क्षमा करें।" दुर्वासा जी कुछ कह न पाए। श्रीकृष्ण उन्हें क्रोध करने का एक भी अवसर नहीं दे रहे थे। महर्षि के रहने के लिए नए कक्ष में प्रबंध कर दिया गया।

एक दिन दुर्वासा जी श्रीकृष्ण से बोले—"कृष्ण, मुझे तुम्हारे राजमहल में ठहरे कई दिन हो गए हैं, मगर मैंने अभी तक खीर नहीं खाई। मैं खीर खाना चाहता हूं। तुरंत मेरे लिए खीर लाओ।"

"जो आज्ञा महर्षि!"—कहते हुए श्रीकृष्णजी दौड़े और चांदी के कटोरे में खीर ले आए। बोले—"लीजिए महर्षि, खीर खाइए।" महर्षि दुर्वासा खीर खाने लगे। खीर खाते-खाते उन्होंने जूठी खीर की ओर संकेत करके श्रीकृष्ण से कहा—"तुम यह खीर अपने शरीर पर मलो।"

श्रीकृष्णजी ने जूठी खीर अपने शरीर पर मलनी शुरू कर दी। तभी रुक्मिणी जी भी वहां आ गई। यह तमाशा देखकर वह हंसने लगीं।

इसके बाद दुर्वासा जी ने श्रीकृष्ण से कहा—"तुरंत रथ मंगवाओ। मैं तुम्हारी राजधानी में घूमना चाहता हूं।" रथ आ गया और दुर्वासा जी उछलकर उस में बैठे, फिर बोले—"आज मेरा रथ रुक्मिणी खींचेंगी।" यह सुनकर सेवक बड़े झल्लाए किंतु श्रीकृष्ण ने इशारे से उन्हें चुप रहने को कहा। फिर श्रीकृष्ण का संकेत पाकर रुक्मिणी जी रथ खींचने लगीं। मगर बेचारी रथ खींचते-खींचते गिर गईं। यह देखकर श्रीकृष्ण ने उन्हें उठाया और हाथ जोड़कर महर्षि दुर्वासा से बोले—"महर्षि, यह आपका रथ नहीं खींच पा रही हैं। आज्ञा हो, तो मैं आपका रथ खींचूं?"

श्रीकृष्ण जी की विनम्रता और क्षमाशीलता देखकर महर्षि दुर्वासा का घमंड चूर-चूर हो गया। वह रथ से उतरे और बोले—"हे श्रीकृष्ण, तुम्हारे संयम के आगे मेरी तपस्या डोल गई। मैं तुमसे प्रसन्न हूं। तुम्हें वर देता हूं कि तुम्हारी कीर्ति दुनिया में युगों-युगों तक फैली रहेगी। सभी लोग तुम्हें भगवान मानकर पूजते रहेंगे। तुम्हारी तरह ही रुक्मिणी भी इस संसार में आदर पाएंगी।"

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी जी ने उनके आगे सिर झुका दिया। दुर्वासा जी फिर बोले—"श्रीकृष्ण, तुमने अपने अंगों पर जो जूठी खीर पोती है, यह अकारण नहीं जाएगी। इसी के प्रभाव से तुम्हारा शरीर वज्र के समान कठोर हो जाएगा। उस पर किसी भी अस्त्र-शस्त्र का प्रभाव नहीं होगा। मगर तुमने खीर अपने तलवों पर नहीं लगाई। सावधान रहना कोई तलवों पर चोट न पहुंचाए।" यह कहकर दुर्वासा जी प्रसन्न होते हुए चले गए। ●

# हमारी नदी हमारा पानी

—विकास सिंह 'डब्बू'

बहुत पहले गोवर्धन नाम का राजा था। वह बड़ा ही सनकी था। अपनी नासमझी के कारण वह अक्सर अपनी प्रजा को मुसीबत में डाल देता था। उसके मंत्री का नाम चतुरसिंह था, जो बड़ा चतुर था। समय-समय पर अपनी बुद्धि से प्रजा को मुसीबतों से छुटकारा दिलाता।

नगर के एक ओर नदी बहती थी। नदी के पानी का बहाव पश्चिम से पूर्व की ओर था। एक दिन सुबह-सुबह गोवर्धन अपने मंत्री के साथ नदी किनारे सैर के लिए गया। उसे नदी में कल-कल बहता पानी देख कर बड़ा आनंद आ रहा था।

अचानक उसके मन में एक प्रश्न कौंधा। उसने चतुरसिंह से पूछा—"मंत्री जी, हमारे राज्य का इतना सारा पानी रोज कहां जाता है?"

"पूर्व दिशा में महाराज!"— मंत्री ने उत्तर दिया।

"क्या!"—राजा चौंका—"हमारा पानी पूर्व दिशा के लोग इस्तेमाल करते हैं! तुरंत राज्य की सीमा पर नदी के आर-पार एक दीवार बना दी जाए। हमारा पानी हमारे ही राज्य में रोका जाए।"

मंत्री ने सोचा—'यह राजा कितना सनकी है। पर आज्ञा तो माननी ही होगी।' बस, उसने तुरंत नदी पर दीवार बनाने का आदेश दे दिया।

बहाव रुकने के कारण पानी धीरे-धीरे जंगलों और खेतों से होता हुआ नगर में भरने लगा। लोग आश्चर्य से कहने लगे—"अरे, इस समय तो बरसात भी नहीं है। फिर अचानक यह बाढ़ कैसी?" लोग भागे-भागे मंत्री चतुरसिंह के पास पहुंचे।

"मंत्री जी, घोर अनर्थ हो रहा है। नगर में बाढ़ आ गई है। हमारा जीवन खतरे में हैं। हमें बचाइए।"—वे सब चिल्लाए।

"दोस्तो, आप लोग जानते हैं कि राजा ने नदी पर दीवार बनवा दी है। वह चाहते हैं, हमारे राज्य का पानी पूर्व के राज्यों में न जाए। इसी कारण नगर में बाढ़ आ रही है।" मंत्री बोला।

"तब तो हम सब डूब जाएंगे। आप कुछ उपाय कीजिए न। आपने सदैव ही हमें राजा की सनक से उत्पन्न मुसीबतों से छुटकारा दिलाया है।"—राज्य के लोगों ने कहा।

"अच्छा।"—मंत्री कुछ सोचकर बोला—"आप लोग अपने-अपने घर जाइए। अपने सामान की रक्षा कीजिए। मैं शीघ्र ही कोई उपाय करता हूं।" लोग डरते-सहमते चले गए, तो मंत्री महल की ओर चल दिया।

महल तक पहुंचते-पहुंचते उसने इस मुसीबत से निपटने का उपाय भी सोच लिया।

महले के ऊपर एक बड़ा-सा घंटा लगा था। एक सेवक हर घंटे के बाद उसे बजाकर समय की सूचना देता था। मंत्री ने उसे बुलाकर आदेश दिया—"आज शाम छह बजे से समय की सूचना एक घंटे की बजाय हर आधे घंटे के बाद देना। साढ़े छह बजे, सात बजे का घंटा बजना चाहिए। सात बजे आठ का। पर किसी को इसकी कानोंकान खबर न हो।"

सेवक सिर झुकाकर वापस अपने स्थान पर चला गया। आदेशानुसार वह हर आधे घंटे बाद एक-एक घंटे की सूचना देने लगा। जब रात के बारह बजे, तो सेवक ने सुबह के छह बजे का घंटा बजा दिया।

गोवर्धन महाराज ने छह बजे का घंटा सुना, तो चौंककर बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। उसकी आंखें नींद के कारण चिरमिरा रही थीं। शरीर टूट रहा था। आंखें फाड़-फाड़ कर वह चारों ओर फैले अंधकार को निहारते हुए सोच रहा था—'कमाल है। सुबह के छह बजे भी इतना अंधेरा। आज सूरज क्यों नहीं निकला? दिन के समय तारे कैसे चमक रहे हैं!'

उसने तुरंत मंत्री को बुलवा भेजा। मंत्री तो इसके लिए पहले ही से तैयार था। वह पलक झपकते ही वहां आ पहुंचा। उसे देखते ही राजा ने क्रोधित होकर पूछा—"यह सब क्या हो रहा है? सुबह के छह बज

गए और सूरज का नामों निशान नहीं ? दिन में तारे दिखाई दे रहे हैं ?''

मंत्री अपनी योजना पर प्रसन्न होता हुआ बोला—''महाराज, अब आप सूर्य को शायद कभी नहीं देख सकेंगे।''

''क्या कहा ?''—राजा ने भय और आश्चर्य से पूछा—''क्या हम सूर्य को अब कभी नहीं देख सकेंगे ? लेकिन ऐसा क्यों ?''

—''बस महाराज, जिसका सूरज, उसके पास।''

''क्या मतलब है तुम्हारा ? साफ-साफ क्यों नहीं बताते ?''— राजा ने कड़ककर पूछा।

मंत्री बोला —''महाराज, जीवन-दान की याचना करते हुए मैं पूछता हूं कि सूर्य किधर से आता है ?''

—''पूरब से और किधर से।''

''तो सुनिए महाराज, आपने उनकी तरफ अपना पानी भेजना बंद कर दिया। इसलिए उन्होंने आपकी तरफ अपना सूरज भेजना बंद कर दिया। हिसाब बराबर। अब न सूरज इस ओर आएगा और न राज्य में रोशनी होगी।''

यह सुनकर राजा सन्न। अचकचा कर बोला—''नहीं, नहीं। खड़े-खड़े मुंह क्या देख रहे हो! अरे, जाओ, जल्दी दीवार तुड़वाओ। पानी भेजो, पूर्व की ओर। वहां से सूरज मंगाओ सूरज। जल्दी करो।''

''जो आज्ञा महाराज। आप विश्राम कीजिए। आपकी नींद अभी पूरी नहीं हुई है। तब तक मैं नदी पर बनी दीवार तुड़वाता हूं।''—कहकर मंत्री वहां से चला गया।

सुबह तक दीवार टूट चुकी थी। सारा पानी फिर से नदी में बहने लगा था। नगरवासी खुशियां मना रहे थे और राजा गोवर्धन सूर्य को फिर से पाकर प्रसन्नता से झूम रहा था। •
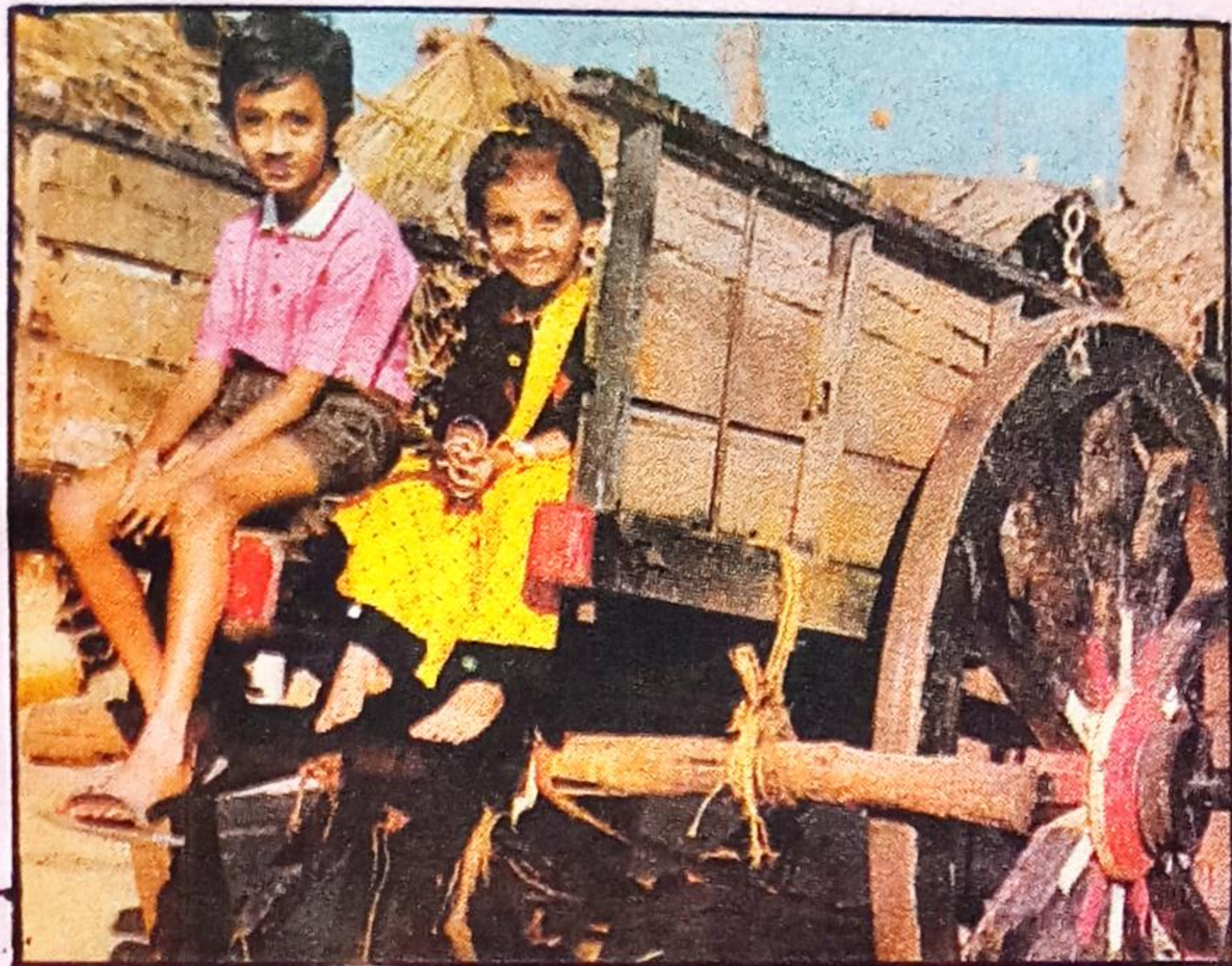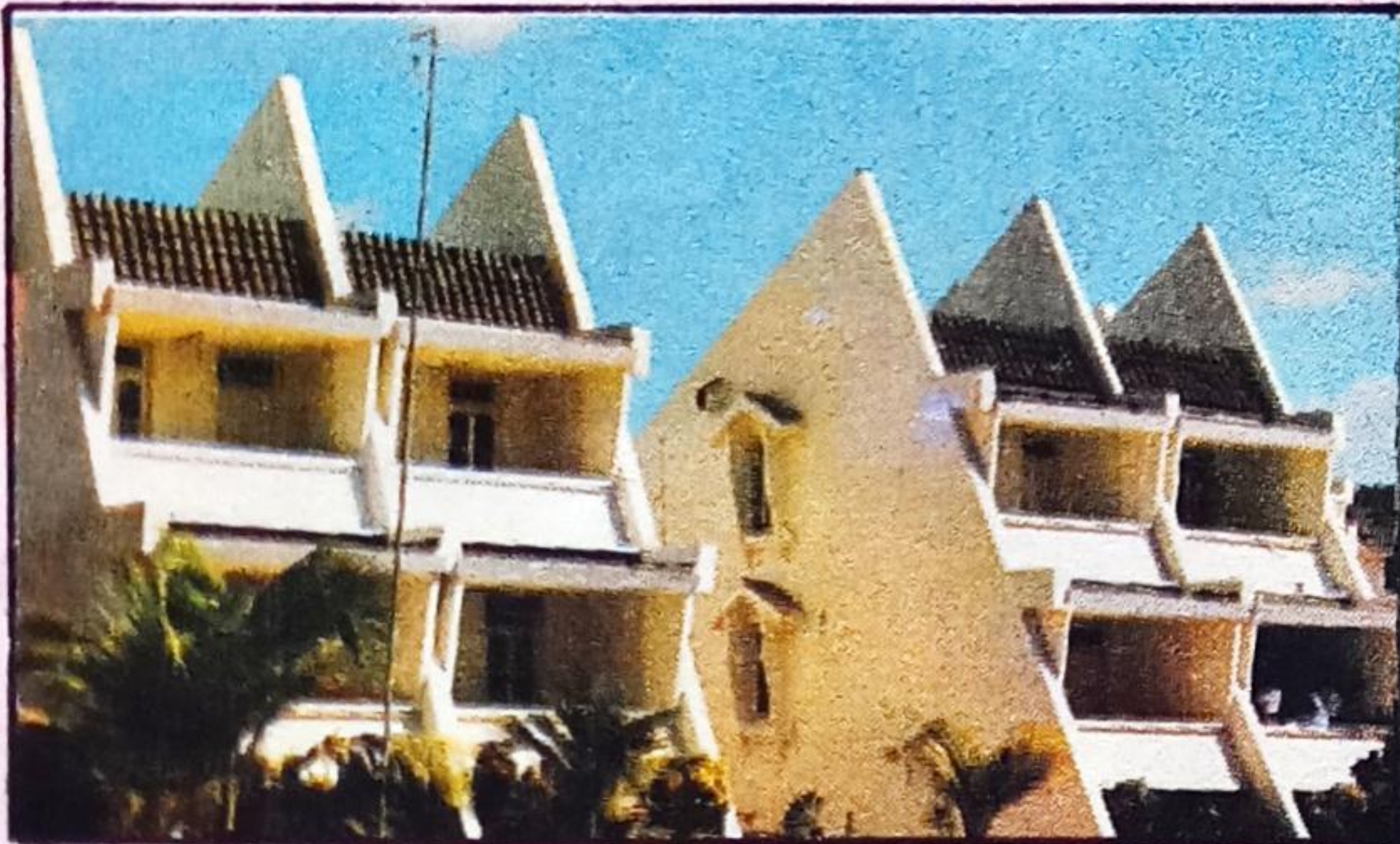
रिमझिम-रिमझिम
पड़ें फुहार गोवा में
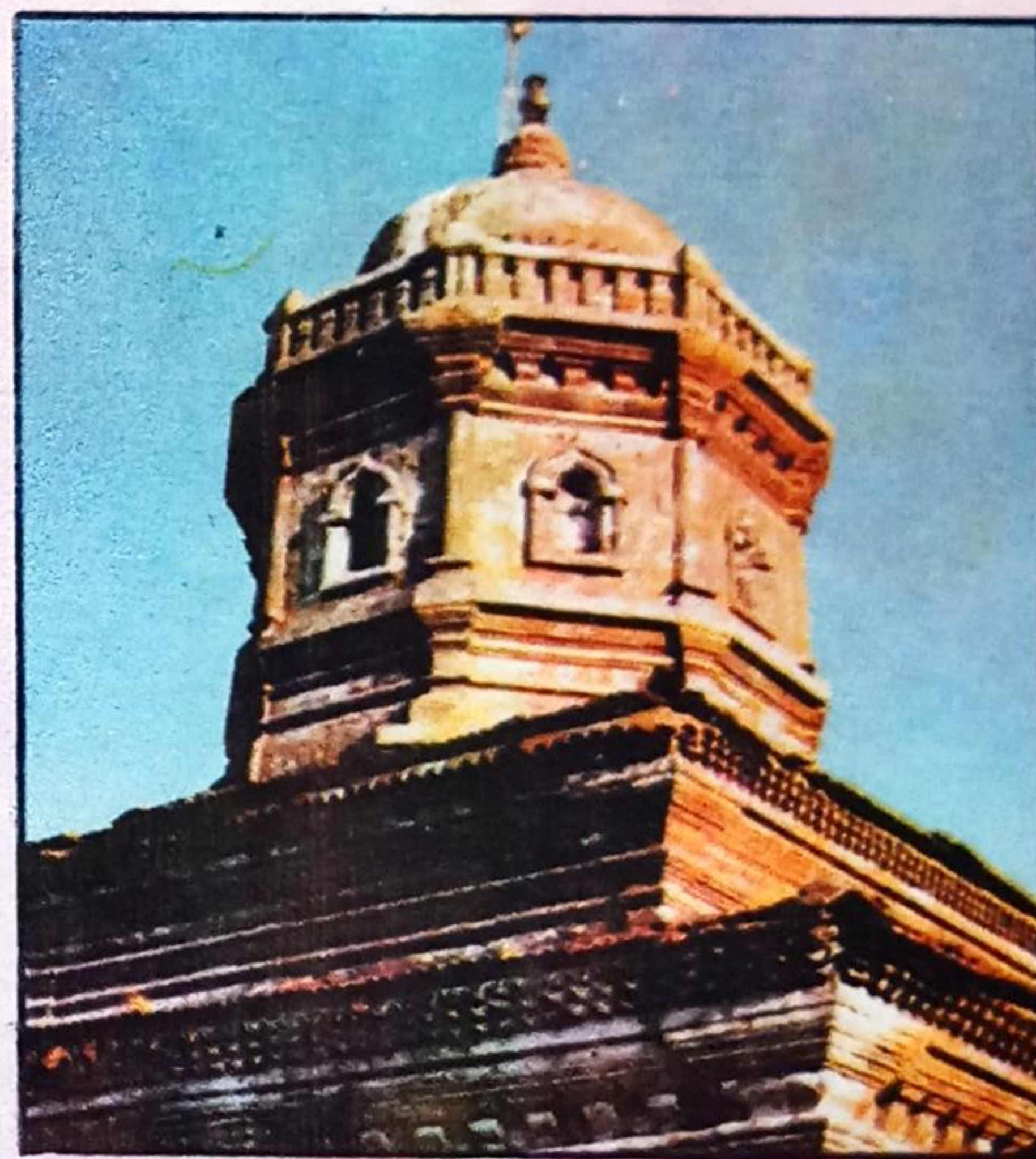
# सपनों का देश

—ए. पोलिलो

वह सपना था या सच ? आज इतने वर्षों बाद भी यह कहना कठिन है। कभी लगता है, जो कुछ हुआ एकदम सच था। लेकिन फिर मन कह उठता है—'वह सपना था, कोरी कल्पना।'

सच और सपने की ऊहापोह में इतने वर्ष बीत गए हैं। सपनों की दुनिया की यात्रा के समय मैं कुल बारह वर्ष का था, आज बूढ़ा हो गया हूं। मैं तीन वर्ष तक घर से गायब रहा था—सपनों की दुनिया ओनीर में। लौटने पर मैंने घर में झूठमूठ कुछ कह दिया था कि मुझे बंजारे पकड़कर ले गए थे। स्वप्न देश में अपने अनुभवों के बारे में कुछ नहीं बताया था। मुझे लगता था—लोग सुनकर पागल, गप्पी और न जाने क्या-क्या कहेंगे। लेकिन आज मैं उन दिनों की घटनाएं सच-सच बताने जा रहा हूं।

मेरा जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। पर मैं दूसरे बच्चों से कुछ अलग था। मेरा मन पाठ्य पुस्तकों में नहीं लगता था। रहस्य-रोमांच की काल्पनिक कथाओं में ही खोया रहता था। मन कहता—'काश, यह सच हो जाए ! कभी मैं अपने को राजा के रूप में सिंहासन पर बैठे देखता, तो कभी सामंत बनकर लड़ाई लड़ते हुए। जो कुछ मैं पढ़ता था, वैसी ही कल्पनाएं करने लगता था।

मेरे माता-पिता मुझे बहुत समझाते थे। अध्यापक उनसे मेरी शिकायत करते थे, पर मुझे सपनों की दुनिया ही अच्छी लगती थी। एक रात को विचित्र घटना घटी। मैं कुर्सी पर बैठा, एक पुस्तक पढ़ रहा था। उसमें एक भारतीय राजा का जिक्र था। मुझे लगा—जैसे मैं स्वयं ही राजा हूं और शानदार

राजमहल में सिंहासन पर बैठा हूं। चारों ओर अनेक नौकर-चाकर मेरे आदेश की प्रतीक्षा में खड़े हैं। और फिर न जाने क्या हुआ। मैंने सचमुच अपने को एक राजमहल में पाया। इस तरह शुरू हुई थी स्वप्न देश की यात्रा।

मैं एक भव्य भवन में हीरे जड़े सिंहासन पर बैठा था। चारों ओर दरबारी, सैनिक, नौकर-चाकर। मैं जो आदेश देता, वह तुरंत पूरा किया जाता। राजकाज निबटाकर, मैं शयन कक्ष में गया। सब कुछ कितना भव्य था।

आंख खुली, तो स्वर सुनाई दिया—"ओनीर में महाराज का स्वागत है।" मैंने देखा—एक नाटे कद का आदमी सामने बैठा है, उसने अपना नाम अतामर बताया। उसने कहा—"ओनीर में तुम्हारे जैसे न जाने कितने राजा और सामंत हैं। हां, तुम्हारा महल उन सबसे शानदार है।"

"लेकिन यह तो सपना था। मैं घर में बैठा पुस्तक पढ़ रहा था, फिर न जाने क्या हुआ ?"—मैंने कहा

—"हां, तुम जो सपना देख रहे थे, वह सच हो गया है।"

इसके बाद अतामर ने मुझे ओनीर में घूमने का निमंत्रण दिया। वाह ! क्या अद्भुत दृश्य था। हवा में बड़े-बड़े किले और महल तैर रहे थे। कुछ तो पर्वत शिखरों पर बने थे।

अतामर ने कहा —"यह सपनों की दुनिया है। ओनीर में आकर सबके सपने सच हो जाते हैं। यहां रात में तुम जो सपना देखोगे, अगले दिन वह सच हो जाएगा। आज तुम राजा हो, शानदार महल में रहते हो। हो सकता है, रात को तुम नाविक बनकर समुद्र में यात्रा करने का सपना देखो। बस, कल सुबह तुम अपने को नाविक के रूप में पाओगे। यहां ऐसा ही होता है। पुराने सपनों का संसार गायब होता जाता है। उसका स्थान नए-नए सपने ले लेते हैं।"

मैं हैरानी से इधर-उधर देख रहा था। सब तरफ भागदौड़ थी। कहीं युद्ध चल रहा था, तो कुछ लोग रथों और घोड़ों पर दौड़े जा रहे थे। सबके सब शानदार वस्त्रों में सजे हुए। एक बात और विचित्र लगी।

तभी अतामर का स्वर सुनाई दिया —"ओनीर की बस एक ही शर्त है —यहां आने वाला कभी ओनीर से वापस जा नहीं सकता।"

यह सुनकर मैं चौंक पड़ा। एकाएक घर की याद आई। मां का चेहरा आंखों के सामने तैर गया। न जाने क्यों मन उदास हो उठा। अतामर की यह बात मुझे अच्छी न लगी। क्या मैं ओनीर का कैदी था ?

अतामर और मैं सारा दिन ओनीर में घूमते रहे। मैंने ऐसे-ऐसे विचित्र दृश्य देखे कि क्या कहूं। सब लोग अतामर का बहुत सम्मान कर रहे थे, पर मेरी ओर किसी का ध्यान नहीं था। जल्दी ही इसका कारण

समझ में आ गया। मैं जान गया कि ओनीर का स्वप्न लोक अतामर के इशारों पर चलता है। उसी ने सबके सपने सच किए थे। वही मुझे दूसरों की तरह ओनीर में लाया था। इसका मतलब यह था कि ओनीर का असली राजा तो अतामर था। हम थे अपने सपनों के कैदी।

लेकिन फिर भी ओनीर ने जल्दी ही मुझे अपने आकर्षण में बांध लिया। रात को मैं जो सपना देखता, अगले दिन वही सच हो जाता। इसी कारण ओनीर का रूप हर दिन बदलता रहता था। मैं अपने पुराने दिन भूल गया था।

तभी एक दिन विचित्र घटना हुई। मुझे ओनीर के स्वप्न लोक में आए दो वर्ष बीत चुके थे। एक सुबह शोर सुनकर मैं अपने महल से बाहर आया। देखा, लोग एक मैदान की तरफ भागे जा रहे हैं।

मैंने देखा, भीड़ के बीच एक लड़का घास पर बैठा था। बदन पर फटे-पुराने कपड़े —गंदा शरीर। वह आराम से तरबूज खा रहा था। भीड़ में खड़े लोग हंस रहे थे, लड़के की खिल्ली उड़ा रहे थे। सच ओनीर में ऐसा दृश्य मैंने कभी नहीं देखा था। मैं सोच रहा था —'यह गरीब लड़का भला स्वप्न लोक में कैसे आ गया?'

कोई भी समझ नहीं पा रहा था कि ऐसा क्यों हुआ? उस सुखी संसार में वह फटेहाल लड़का दुःख की छाया जैसा लग रहा था। उसने अपना नाम गिआनिनो बताया था। तभी कोई बोल उठा —"ऐ छोकरे, कम से कम साबुन का ही सपना देखते।" "अपना गंदा मुंह तो धो लेते। अगली बार एक जोड़ी चप्पल और कमीज का सपना देखना। यहां सब कुछ मुफ्त मिलता है, समझे।"—किसी ने व्यंग्य से कहा और सब हंस पड़े।

तभी अतामर वहां आ पहुंचा। उसे देखकर सब खामोश हो गए। अतामर ने प्यार से गिआनिनो का सिर सहलाया। वह धीरे-धीरे सुबकियां ले रहा था। अतामर बहुत क्रोध में था। उसने चिल्लाकर कहा —'मूर्खो, क्या तुम ओनीर के नियम भी भूल गए? यहां हर किसी को दूसरे के सपने का सम्मान करना होता है।'

अतामर ने ठीक कहा था। हमें गिआनिनो की गरीबी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए था। भीड़ छंट गई। गिओनिनो वहीं बैठा तरबूज खाता रहा।

वह मेरे लिए एक रहस्य था। ओनीर के सपनों की कैद में हम उदास थे, पर गिआनिनो खुश था। मैं और वह जल्दी ही मित्र बन गए। पर फिर भी मैं सोचता रहता —भला अतामर उसे ओनीर में क्यों ले आया था? गिआनिनो के सपने तो बहुत मामूली थे। गिआनिनो ने कुल्हाड़ी और झरने का सपना देखा, जो सच हो गया था। वह खुश था, बहुत खुश।

एक दिन मैं गिआनिनो की झोंपड़ी में जा पहुंचा। वहां एक बुढ़िया बैठी थी। गिआनिनो ने बताया कि वह मां थी। अनाथ गिआनिनो ने मां का सपना देखा था, जो सच हो गया था। उसकी मां को देखकर मेरा मन उदास हो गया। मैंने कहा —"गिआनिनो, तुम्हें सपनों की दुनिया में मां मिल गई और मैं मां-पिता तथा घर छोड़कर यहां आ गया हूं।"

"लेकिन आपने अपनी मां को क्यों छोड़ दिया?"— गिआनिनो ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा।

—"मैं समझता था कि घर से दूर रहकर मैं खुश रहूंगा। यह मेरी गलती थी।"

एक रोज मैं अतामर से मिला, तो वह कुछ परेशान और नाराज दिखाई दिया। उसने कहा —"मैंने जिनके सपने सच किए, वही मुझे परेशान कर रहे हैं।"

"ऐसा क्यों ?"— मैंने जानना चाहा।

"इसलिए कि कुछ लड़के ओनीर की दुनिया से अपने घरों को लौटना चाहते हैं। पर मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।"

अगले दिन ओनीर में बहुत हलचल थी। बहुत से लड़कों ने चुपचाप एक सभा की। उसमें फैसला हुआ —'चाहे जैसे भी हो, हम अपने घर वापस जाएंगे। हम ओनीर में नहीं रहना चाहते।'

सबने मिलकर अतामर से प्रार्थना की, पर वह हमें ओनीर की कैद से मुक्त करने को तैयार न हुआ। एक रात मैंने घर का सपना देखा, पर सपना सच न हुआ। मैंने अतामर से इसका कारण पूछा, तो वह बोला —"ओनीर में सपने सच होते हैं। जो कुछ सच है, वह यहां नहीं हो सकता। तुम्हारे माता-पिता सच हैं, इसलिए तुम्हारे सपने उन्हें ओनीर में नहीं ला सकते।"

एक रात हमने एक गुफा में गुप्त बैठक की। उसमें ओनीर के सारे रहने वाले मौजूद थे। बस गिआनिनो नहीं था। वहां लुकास नामक लड़के ने एक तरकीब सुझाई —"हमने स्वयं ओनीर के स्वप्न लोक का निर्माण किया है। आज की रात हम मिलकर इसके विनाश का स्वप्न देखेंगे।"

उस रात हम सब साथियों ने ओनीर के विनाश का सपना देखा। फिर नींद खुली, तो मैंने स्वयं को एक खुले मैदान में पाया। यानी ओनीर नष्ट हो चुका था। मेरे राजसी वस्त्र गायब हो चुके थे। मैं पुराने कपड़े पहने हुए था।

मैं और मेरे साथी खुशी से उछल पड़े। हम जंगल के बीच खुली जगह में खड़े थे। हम लोग दौड़ते हुए एक तरफ को बढ़े। लेकिन फिर हमें अतामर और गिआनिनो के घर दिखाई दिए। यानी हमारा अनुमान गलत था। हम अभी ओनीर में ही थे —अपने स्वप्न लोक की कैद में।

तभी हमें अतामर आता दिखाई दिया। वह मुसकरा रहा था। उसने कहा —"आखिर आपने ओनीर को नष्ट कर ही दिया।"

"लेकिन गिआनिनो का घर तो बचा है।"— मैं बोला।

"हां, वह बचा रहेगा। उसका घर, मां, स्कूल —क्योंकि उसी का सपना सच्चा होने लायक था। आप सबके सपने कल्पना की उड़ान थे। उनका नष्ट होना ही ठीक था। अब आप अपने-अपने घर जा सकते हैं।" —यह कहकर अतामर वहां से चला गया।

इसके बाद हम सबने मिलकर गिआनिनो को बधाई दी। हमारे यों जाने से वह दुखी हो रहा था। पर हमें अपने सपनों की दुनिया से मुक्ति चाहिए थी। इसीलिए उससे अलविदा कहकर हम लोग आगे चल दिए। धीरे-धीरे रात घिर आई। मेरी आंखें नींद से बोझिल होने लगीं। मैं एक पेड़ के नीचे जा लेटा।

नींद खुली, तो मैं अपने शहर में था। सामने ही मेरा घर दिखाई दे रहा था। मैं तेजी से उस तरफ दौड़ने लगा।

**(प्रस्तुत : ब्रह्मप्रकाश गुप्त)**

# दूसरा अचरज

—रवि दिवाकर

पुरानी बात है। श्यामगढ़ का नाम दूर-दूर तक मशहूर था। जनता खुशहाल थी। श्यामगढ़ के राजा अजीतसिंह शूरवीर और पराक्रमी तो थे ही, जनता के दुःख-दर्द का भी उन्हें हर समय ख्याल रहता था। उनमें एक ही अवगुण था, वह तुरंत निर्णय नहीं कर पाते थे। राजा की इस कमी को सब महसूस करते, मगर कहने का साहस किसी में न होता।

अजीतसिंह की रानी का नाम था चंद्रा। वह महल की व्यवस्था देखती थी। राजकाज में राजा की मदद भी करती थी। वह कुशाग्र बुद्धि की थी। तुरंत निर्णय लेने की अद्‌भुत क्षमता थी उसमें। जब-जब श्यामगढ़ पर हमला होता, चंद्रा ही पूरी रणनीति तैयार करती थी।

रानी चंद्रा की सूझबूझ और चतुराई के किस्से घर-घर कहे जाते थे। जनता की छोटी से छोटी बातें भी उसके पास पहुंच जाती थीं।

एक दिन की बात। अजीतसिंह अपने कुछ चुने हुए सैनिकों को लेकर जंगल में शिकार खेलने गए। सुबह से घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते उन्हें दोपहर हो गई, कोई भी शिकार नहीं मिला। शिकार की तलाश में राजा ऐसे दीवाने हो गए कि वह जंगल में इधर-उधर सरपट घोड़ा दौड़ाते रहे। आखिर रास्ता भटक गए और सैनिक-अंगरक्षक सब पीछे छूट गए।

राजा को होश आया, तब तक अंधेरा घिरने लगा था। घोड़े को दौड़ाते हुए वह जंगल में एक ऐसे स्थान पर आए, जहां कुछ रोशनी थी। पेड़ और झाड़ियां ज्यादा घनी नहीं थीं। राजा और घोड़ा दोनों थककर चूर हो गए थे। शिकार का विचार छोड़कर, राजा घोड़ा मोड़ने ही वाले थे तभी उन्हें एक गीदड़ अपनी ओर आता दिखाई दिया।

गीदड़ को देखते ही राजा ने कंधे से अपना धनुष उतारा। तरकश से बाण निकालकर धनुष पर चढ़ा लिया। गीदड़ की नजर राजा पर पड़ी, तो वह सहम गया। बोला—"हे राजन, मुझे मत मारो।"

राजा बोले—"क्यों न मारूं ? पूरा दिन धक्के खाते बीत गया। इतने बड़े जंगल में एक भी शिकार नहीं मिला। बड़ी देर बाद तुम दिखाई दिए हो। वैसे गीदड़ का शिकार करना मैं कायरता समझता हूं। लेकिन उससे बड़ी बेइज्जती यह है कि मैं खाली हाथ लौटूं।"

गीदड़ चिल्लाकर बोला—"राजा, मुझे मत मारो। मैं मर गया, तो जग प्रलय हो जाएगी।"

"बकवास कर रहे हो ? तुम्हारे मरने से जग प्रलय कैसे हो जाएगी ?"—राजा ने पूछा।

गीदड़ बोला—"महाराज, इस बात का जवाब आपको आपकी रानी चंद्रा देंगी।"

गीदड़ के मुंह से रानी का नाम सुनकर राजा अचरज में भर उठे। वह गीदड़ से कुछ पूछना ही चाहते थे कि आसमान पर बादल मंडराने लगे।

गीदड़ भी न जाने कब का खिसक चुका था। राजा ने अब जंगल में ठहरना उचित नहीं समझा। फिर गीदड़ की बात ने भी उनके मन में जाने क्या-क्या शंकाएं पैदा कर दी थीं।

अजीतसिंह ने तीर तरकश में डाला, धनुष कंधे पर लटकाया। फिर घोड़े की लगाम खींचकर उसे भगाते हुए चले गए। कुछ दूर जाने पर उन्हें सैनिक भी मिल गए। मगर राजा ने सैनिकों से किसी तरह की बात नहीं की। बस, महल की ओर घोड़ा दौड़ाते रहे।

राजमहल तक पहुंचते-पहुंचते रात हो गई। राजा के देर तक न लौटने से महल में घबराहट और चिंता छाई थी।

महल में घुसकर भी राजा बीच में कहीं नहीं रुके। सीधे रानी के कमरे में जा पहुंचे। जाते ही उन्होंने रानी को आवाज लगाई।

रानी छज्जे से दौड़ी-दौड़ी आई। देखा, तो राजा खड़े हैं। चेहरे पर चिंता—परेशानी और खीझ देख, रानी ने व्यग्रता से पूछा—"बैठिए महाराज, खड़े क्यों हैं ? बड़ी देर कर दी आपने आने में।"

राजा को जैसे रानी की बात सुनाई ही नहीं दी। सपाट से स्वरों में पूछा—"रानी, आज जंगल में एक गीदड़ मिला था। क्या तुम उसे जानती हो ?"

रानी ने सिर हिलाकर कहा—"नहीं।"

"लेकिन वह तो तुम्हें जानता है।" —राजा ने कहा।

फिर उन्होंने पूरी घटना बताकर कहा—"मैंने उससे एक सवाल किया था। उसने कहा कि इसका जवाब आपको आपकी रानी चंद्रा देगी। इसका मतलब है, वह तुम्हें जानता है।"

राजा की बातें रानी को पहेली-सी लग रही थीं।

राजा ने फिर कहा—"मेरे मन में दो शंकाएं हैं। एक तो यह कि गीदड़ ने अपने मारे जाने पर जग प्रलय की बात क्यों कही ? दूसरे उसने इसका उत्तर देने के लिए तुम्हारा नाम क्यों लिया ?"

रानी चतुर थी ही। राजा की बात अब उसकी समझ में आ गई। वह मुसकराने लगी। राजा और भी उलझन में पड़ गए। बोले—"तुम मुसकरा रही हो ? बताओ, गीदड़ के मरने से जग प्रलय कैसे हो जाएगी ?"

रानी ने उत्तर दिया—"इसमें परेशान होने की क्या बात है ? जो मर जाता है, उसके लिए पूरा संसार ही खत्म हो जाता है। यह तो मामूली बात है, लेकिन असली बात तो यह है गीदड़ कितना चतुर निकला। उसने अपनी जान बचाने के लिए आपको 'आप मरे जग प्रलय' का गच्चा दे दिया।"

राजा के चेहरे पर छाई शंका की लकीरें कुछ कम हुईं। तभी रानी ने एक सवाल और खड़ा कर दिया। वह बोली—"महाराज, यह कितनी विचित्र बात है कि एक गीदड़ मनुष्यों की बोली बोले। मैं आपके साथ उस जंगल में चलूंगी और उस गीदड़ को तलाश कर, उससे यह भेद उगलवाऊंगी।"

राजा ने इस ओर ध्यान नहीं दिया था। वह तुरंत मान गए। अगले दिन सवेरा होते ही स्नान, पूजा-पाठ से निवृत्त होकर रानी और राजा घोड़ों पर सवार हो, जंगल की तरफ रवाना हो गए।

संयोग की बात, उस दिन उन्हें ज्यादा दौड़-धूप नहीं करनी पड़ी। जंगल के बीच में पहुंचते ही उन्हें वह गीदड़ दिखाई दे गया।

राजा और रानी को देख गीदड़ भागने लगा। राजा ने तुरंत तीर निकालकर उस पर निशाना साधा। गीदड़ फिर मौत सामने देखकर रुक गया। राजा और रानी के सामने गिड़गिड़ाने लगा।

राजा ने गीदड़ से कहा—"हम तुम्हें छोड़ देंगे, मगर तुम्हें यह बताना होगा—तुम मनुष्यों की बोली कैसे बोल लेते हो ? यह भी बताना होगा कि रानी का नाम कैसे जानते हो ?"

पहले तो गीदड़ सकपका गया, फिर बोला—"महाराज ! यहां से थोड़ी दूर पर एक झरना है। उस झरने के पास एक पेड़ है। वह इच्छादानी पेड़ है। उसके नीचे अगर थोड़ी देर तक रुक जाता हूं, तो मुझे एक दिन के लिए मनुष्य की बोली बोलने की शक्ति मिल जाती है। रही रानी जी का नाम जानने की बात, तो इनका नाम मनुष्य क्या, पशु-पक्षी तक जानते हैं। यह हैं ही इतनी दयालु और बुद्धिमती।"

राजा ने कहा—"तुम हमको भी उस पेड़ तक ले चलो।"

सुनकर गीदड़ फिर सकपका गया। कुछ देर खामोश खड़ा रहा। फिर बोला—"महाराज, आपको वहां ले जाने में तो मुझे कोई ऐतराज नहीं। लेकिन ऐसा न हो कि उस पेड़ के नीचे खड़े होने पर आप दोनों गीदड़ की बोली बोलने लगें।"

गीदड़ की बात सुनकर, राजा ने रानी की तरफ देखा। दोनों सोच में डूब गए। एक पल बाद, जैसे ही उन्होंने गर्दन घुमाई, गीदड़ वहां से गायब हो चुका था।

रानी ने मुसकराते हुए राजा से कहा—"देखी आपने गीदड़ की चतुराई। वह दूसरी बार भी अपनी जान बचाने में सफल हो गया।"

"हां।"—राजा ने कहा—"और मुझे बता गया कि यह सब मेरे तुरंत निर्णय न कर पाने के कारण हुआ।"

रानी मुसकरा रही थी। ●

# गुड़िया

– रेणु नारायण

एक थी प्यारी-सी, नन्ही-सी लड़की । बिल्कुल गोल-मटोल, गुलाबी गाल, छोटी-सी नाक और छोटी-छोटी काली आंखें । नाम था टीनी । उसी की तरह प्यारी, लाल-लाल गालों वाली थी उसकी गुड़िया । टीनी को वह बहुत पसंद थी ।

टीनी को यह गुड़िया कब मिली ? कहां मिली ? उसे कुछ पता नहीं था । उसे तो लगता था, जैसे गुड़िया हमेशा से उसके पास थी । खाना खाते वक्त, सोते समय, यहां तक कि घूमते-फिरते हुए भी गुड़िया उसके साथ ही रहती थी । वह उससे बातें करती थी, उसके कपड़े बदलती थी । जब टीनी रोती थी, तो जैसे गुड़िया भी रोती थी । हंसती थी, तो उसे गुड़िया भी हंसती हुई लगती थी ।

एक बार देहरादून से टीनी की बुआ जी आईं । अब टीनी का समय बुआ जी के साथ बीतने लगा । बुआ जी उसे रोचक कहानियां सुनाती थीं । जादूगर और परियों की बातें बतातीं । सुनकर टीनी बहुत खुश होती । कभी-कभी एकदम हैरान हो उठती ।

बस, बुआ जी की एक बात ही उसे दुखी कर देती थी । वह थी उसकी मम्मी की चर्चा । दो साल पहले एक कार दुर्घटना में टीनी की मम्मी चल बसी थीं । तब टीनी बहुत छोटी थी । तब से यह गुड़िया ही उसकी सहेली बन गई थी ।

टीनी हरदम बुआ जी के आगे-पीछे घूमती रहती । लेकिन इस समय भी गुड़िया हरदम उसके हाथ में ही रहती थी ।

बुआ जी के जाने का दिन आ गया । उन्होंने टीनी को भी साथ ले जाने की बात कही । टीनी भी अपनी गुड़िया के साथ हंसी-खुशी तैयार हो गई । अपनी याद में टीनी की यह पहली यात्रा थी । यात्रा में उसे खूब मजा आ रहा था । इस बीच उसे नींद आ गई । वह कब बुआ जी के घर पहुंच गई, उसे पता ही न चला ।

सुबह टीनी उठी, तो गुड़िया उसके पास नहीं थी । वह उदास हो गई । अब उसे वहां कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था । बुआ जी ने भी खूब तलाश की, लेकिन गुड़िया कहीं नहीं थी । शायद ट्रेन में ही गिर गई थी ।

बुआ जी टीनी को लेकर एक बहुत बड़े स्टोर में गईं । वहां तरह-तरह की गुड़िया रखी थीं । कोई छोटी, कोई मोटी, तो कोई उसके जितनी लम्बी । कोई हंस रही थी, तो कोई नाच रही थी । तरह-तरह के परिधानों में सजी हुईं । कोई जापान से आई थी, तो कोई फ्रांस से । टीनी एक-एक गुड़िया को देख रही थी । लेकिन इन सब में उसकी गुड़िया कहीं थी ही नहीं । ''नहीं, इनमें से तो कोई भी गुड़िया मेरी नहीं है।''— कहकर वह फिर उदास हो गई ।

तभी बुआ जी एक छोटी-सी, गुब्बारे जैसे फूले गाल और लम्बे बालों वाली गुड़िया लेकर उसके पास आईं । गुड़िया सचमुच बहुत ही सुंदर थी । लेकिन टीनी तो जैसे कहीं और खो गई थी । बुआ जी ने कहा—''देखो टीनी, यह तुम्हें देखकर मुसकरा रही है । तुम इससे बातें करो, तो यह भी बोलेगी । यह तुम्हारी गुड़िया की बहन है । बिल्कुल उस जैसी ।''

बुआ जी ने ऐसा कहा, तो टीनी की छोटी-छोटी गोल-गोल आंखें उस ओर घूम गईं । लगा, गुड़िया जैसे उसे देखकर सच में मुसकरा उठी हो । एकाएक टीनी के मुरझाए चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई । बुआ जी ने ठीक ही कहा था । वह मुसकरा कर गुड़िया को प्यार करने लगी । अब टीनी की उदासी दूर हो गई थी । ●

# लाओ माला

—सुभद्रा मालवी

समुद्र के किनारे दो अनाथ बालक रहते थे। दोनों भाई-भाई थे। मछलियां पकड़कर जैसे-तैसे अपना गुजारा करते थे। एक दिन बड़े भाई की गर्दन में सूजन आ गई। गांव के सयानों ने बताया कि उसे घेंघा रोग हो गया है। यह बीमारी वहां कई लोगों को थी। उस दिन छोटा भाई अकेला ही मछलियां पकड़ने गया। सुबह से शाम तक वह बार-बार पानी में जाल फेंकता रहा। किंतु उसके हाथ एक भी मछली न आई।

आखिर वह थक गया। भूख भी बहुत जोर से लगने लगी। उसने आखिरी बार जाल समुद्र में फेंका। बाहर खींचा, तो देखा-जाल में एक बड़ी-सी सीप अटकी थी। उसने सीप को जाल से निकाला। वह देख ही रहा था कि सीप उसके हाथ से उछलकर नीचे गिरी और खुल गई। खुलते ही उसके अंदर से नन्ही-सी एक सुंदर लड़की निकली। बोली— "मैं सीप राजकुमारी हूं। अपनी छह बहनों के साथ घूमने निकली थी, मगर बिछुड़ गई। मुझे घर तक पहुंचा दो।"

छोटे भाई ने सीप कुमारी को उसके घर के पास छोड़ दिया। फिर अपने जाल के पास आकर उदास मन से उसे समेटा और घर की ओर चलने लगा। तभी उसके कानों में आवाज आई—"भाई, रुको।"

छोटे भाई ने देखा, सीप कुमारी अपनी छह बहनों के साथ समुद्र में खड़ी थी। उनकी रंग-बिरंगी पोशाकें और बालों में गुंथे मोती डूबते सूरज की रोशनी में जगमगा रहे थे। सातों बहनों ने अपने बालों से निकालकर अलग-अलग रंग वाला एक-एक मोती छोटे भाई को दिया। बोलीं—"इन मोतियों से गर्दन की सूजन दूर हो जाती है।"

सीप कुमारियों से विदा लेकर मोती हाथ में लिए छोटा भाई घर आया। उसने उन सातों मोतियों को एक धागे में पिरोकर बड़े भाई के गले में पहना दिया। बड़े भाई के गले का रोग तुरंत दूर हो गया। दोनों बहुत खुश हुए।

अगले दिन से घेंघा रोग से पीड़ित लोग छोटे भाई के पास आने लगे। बड़े भाई ने कहा—"रोग ठीक करने के पैसे लिया करो।" मगर छोटे भाई ने ऐसा करने से मना कर दिया। उसने घर के बाहर लिख दिया 'यहां गले के रोग का मुफ़्त इलाज होता है।'

अब छोटा भाई दिन भर रोगियों का मुफ़्त इलाज करता था। इसलिए बड़ा अकेला ही मछलियां पकड़ने जाता था। आश्चर्य की बात यह थी कि अब दो बार ही जाल फेंकने पर ढेरों मछलियां पकड़ी जातीं।

एक दिन बड़ा भाई इसका कारण जानने के लिए पानी के अंदर गया। उसने देखा, सातों सीप कुमारियां मछलियों को उसके जाल की ओर ला रही थीं।

एक दिन बड़े भाई ने छोटे भाई को बताया —"राजा को भी गले का रोग हो गया है। जो कोई उसे ठीक कर देगा, उसे वह सोने की दस हजार अशर्फियां देगा। अपने दरबार में नौकरी भी देगा। चलो, यह माला हम राजा को दे आएं।"

छोटे भाई ने मना कर दिया। कहा—"मुझे न धन

चाहिए और न नौकरी। मैं तो गांव वालों का ही इलाज करना चाहता हूं। अगर ये मोती एक बार राजा के पास चले गए, तो वह इन्हें कभी वापस नहीं करेगा। तब इन गांव वालों का इलाज कैसे होगा ?''

बड़े भाई ने उसे बहुत समझाया। यहां तक कि डराया-धमकाया भी। परंतु छोटा भाई राजा को मोती देने के लिए तैयार नहीं हुआ। एक दिन बड़े भाई ने छोटे भाई के हाथ से मोती छीनने की कोशिश की। मगर छोटे ने बड़े भाई को धक्का दे दिया और वहां से भाग गया। भागता हुआ वह नील पहाड़ी के नीचे आ पहुंचा। उसे याद आया कि उसकी मां इस पहाड़ी और इसके अंदर एक गुफा के बारे में उसे अक्सर बताया करती थी। वह अपने भाई के डर से पहाड़ी पर चढ़ गया। उसने अपनी मां की बताई गुफा खोज निकाली। गुफा के पास खड़े होकर उसने नीचे झांका, तो बड़े भाई को भी ऊपर आते देखा। राजा से इनाम पाने के लालच में वह छोटे भाई से मोती छीनने आ रहा था। यह देख, छोटा भाई गुफा के अंदर चला गया। वहां उसने देखा कि अंदर से गुफा बहुत बड़ी और सुंदर थी। वहां एक छोटा-सा तालाब था। पानी इतना स्वच्छ था कि तली साफ नजर आ रही थी। उसकी मां ने उसे बताया था कि यहां कभी देवता निवास करते थे। अब तक उसका भाई भी गुफा के बाहर आ खड़ा हुआ था। वह उसे आवाज दे रहा था। छोटे भाई ने झट से मोतियों की माला तालाब में फेंक दी। माला धीरे-धीरे तली में जा पहुंची। तब तक बड़ा भाई भी वहां आ गया था। उसने कहा—''लाओ, माला मुझे दे दो।''

छोटे भाई ने कहा—''मैंने माला पानी में फेंक दी है।'' बड़े भाई ने उसे खूब डांटा-फटकारा। उसे अशर्फियां न पा सकने का बहुत दुःख था। उसने राजा से जाकर सारी बात कह दी।

राजा अपने दरबारियों और सैनिकों को साथ लेकर वहां आया। उसने एक सैनिक को तालाब से माला निकालने की आज्ञा दी। सैनिक तालाब के पानी में उतर पड़ा। पानी में माला देख उसकी ओर हाथ बढ़ाया। मगर आश्चर्य, माला दिखाई तो देती थी, पर हाथ में आती ही नहीं थी।

एक-एक कर सभी ने कोशिश की, परंतु किसी को सफलता न मिली। अंत में राजा ने स्वयं पानी में उतरकर माला लाने का निश्चय किया। वह पानी के अंदर चला गया। उसे भी माला साफ चमकती दिखाई दे रही थी। राजा ने जैसे ही माला उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, तो चकित रह गया। वहां माला थी ही नहीं। उसने हाथ खींचा ही था कि माला फिर चमकने लगी। काफी देर तक राजा कोशिश करता रहा, पर माला उसके हाथ न आई। पानी के अंदर सांस रोके रहने से उसका दम घुटने लगा था, इसलिए वह बाहर आ गया। जैसे ही राजा बाहर आया, उसके दरबारियों और सेवकों ने आश्चर्य के साथ कहा—''महाराज, आपके गले की सूजन दूर हो गई है।''

राजा ने गले पर हाथ फेरा, तो उसे लगा कि सचमुच उसका गला ठीक हो गया है। वह माला वहीं छोड़, खुशी-खुशी महल में लौट आया। छोटा भाई उसके बाद दिखाई नहीं दिया। पता नहीं, वह कहां चला गया था।

कहते हैं, माला अब भी उसी तालाब में पड़ी है। जो कोई उस तालाब का पानी पीता या नहाता है, उसके गले का रोग दूर हो जाता है। ●

# शंख की छाया

मणिधर नासिक का बड़ा व्यापारी था। दूर-दूर जाकर व्यापार करता। धन कमाकर लौटता, तो...

दस सहस्र का लाभ ! आधे धन से धर्मशालाएं...

आप जैसा धर्मात्मा कोई नहीं...

हर बार कुछ न कुछ जनता के लिए...

एक बार...

इस बार कन्याकुमारी तक व्यापार करुंगा। तैयारियां शुरू...

जल्दी लौटना बापू...

वहां से दक्षिणावर्त्त शंख ले आना। इस बार के लाभ से कृष्ण मंदिर...

मणिधर जानता था— दक्षिणावर्त्त शंख अत्यंत पवित्र और भाग्यशाली माना जाता है। दुर्लभ भी होता है। फिर भी उसने 'हां' कर दी।

कृष्ण प्रतिमा के लिए पवित्र शंख ! लाऊंगा,

अनेक बाधाओं को पार करता मणिधर कन्याकुमारी पहुंचा। बहुत खोजने पर वहां उसे दक्षिणावर्त्त शंख मिल गया। कई वर्ष बीत चुके थे। वह नासिक लौट चला, मगर एक रात...

प्राण बचाओ !!

हाथी... हमला ... हे भगवान...

भागते-भागते मणिधर को प्रकाश दिखाई दिया । मदद की आशा में वह तेजी से वहां पहुंचा । देखा...

पांच दिन बाद खाना नसीब हुआ है ।

धीरे-धीरे खाओ !

भले लगते हैं। मदद जरूर करेंगे ।

उन लोगों को सारी घटना सुना, मणिधर ने मदद मांगी । मुंहमांगा इनाम देने की बात कही, तो...

क्या सच ! इतना धन !!

हां, हां, अभी...

मदद जरूर करेंगे । हमें वहां ले चलो !

घटना स्थल पर उन लोगों ने चुन-चुन कर सारा धन गाड़ी में भर लिया । फिर...

मुझे पास की बस्ती में छोड़ दो । जो चाहिए, ले लो !

यह सब कुछ हमारा है । मैं डाकू सावंत हूं । समझे !

तुम्हें जीवित छोड़ रहे हैं ! शुक्र करो ।

मणिधर को अकेला छोड़ डाकू चले गए । मणिधर की आंखें भर आईं ।...
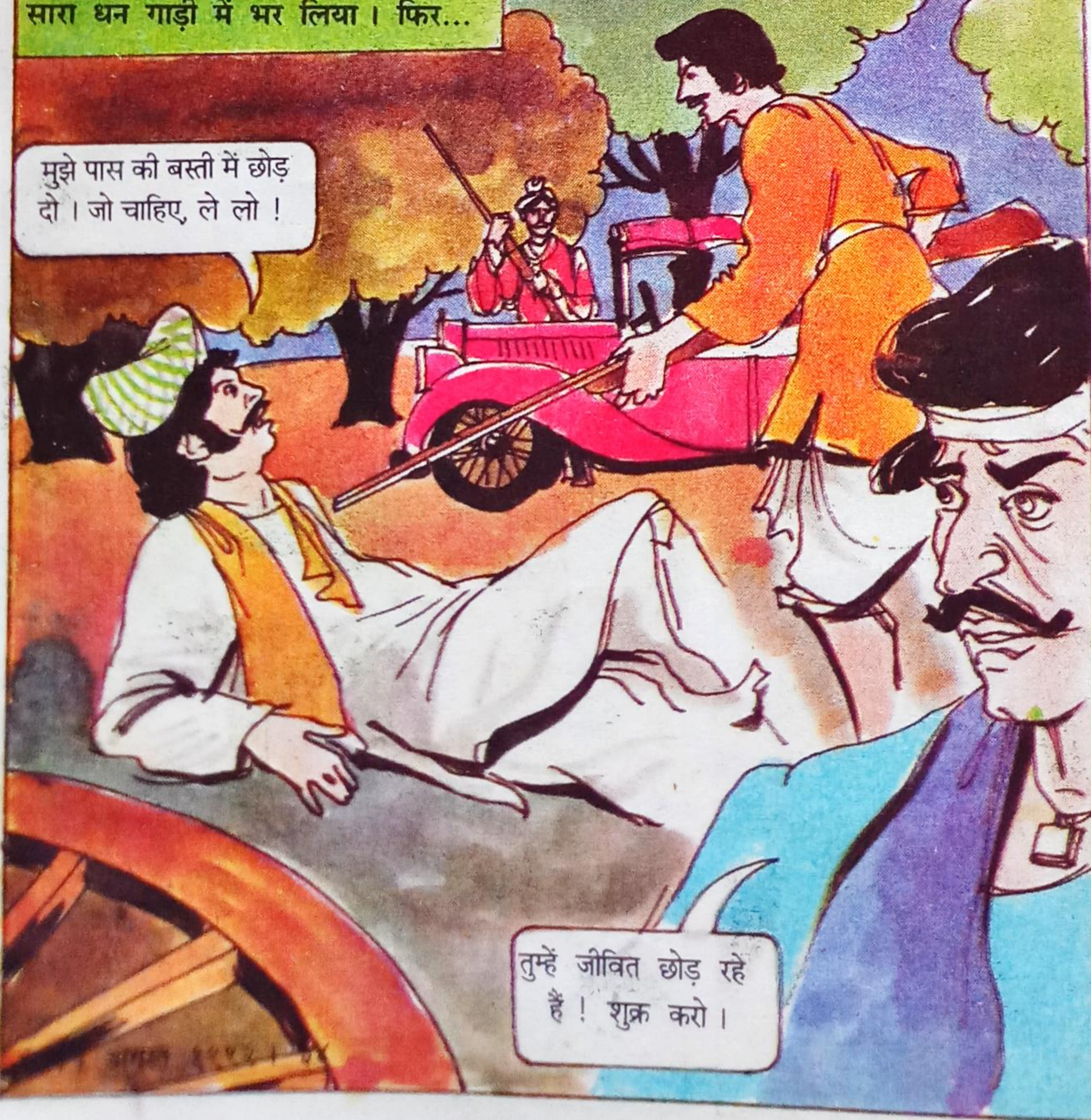
हे भगवान, यह कैसा शंख है ! आते ही अमंगल शुरू... अब मैं क्या करूं ?

जंगली पशुओं के भय से मणिधर एक ऊंचे वृक्ष पर चढ़ गया। थका था, सो गया; किंतु रात के अंतिम पहर में सोते-सोते अचानक पेड़ से गिर गया.

आह !!

पेड़ से गिरकर वह बेहोश हो गया। होश आया, तो देखा— शिकारियों के वेश में कुछ युवा लोग उसे घेरे खड़े हैं...

होश आ गया सरकार !

तुम कौन हो ? यहां कैसे आए ? चोट कैसे लगी ?

मैं... मैं... आह !

मणिधर ने सोचा— कहीं वे भी डाकू न हों। झूठमूठ की बातें बता दीं... मगर...

मान गए। हो जीवट के !... यह शंख कैसा है तुम्हारे पास ?

शंख की बात सुनते ही मणिधर भड़क उठा...

दक्षिणावर्त्त शंख है। एक हजार स्वर्ण मुद्राओं में खरीदा था। मगर जब से लिया, तभी से...

मगर एक शिकारी ने..

इतनी स्वर्ण मुद्राएं कहां से आईं ? जो हो, इसे मुझे दे दो। जमींदार हूं। कृष्ण मंदिर बनवाया है। पत्नी चाहती है, भगवान के हाथ में...

नहीं, नहीं, यह मैं... हां, भगवान को स्वयं भेंट कर सकता हूं।

जमींदार मान गया। मणिधर को गांव लाकर अतिथि-शाला में ठहरा दिया। दवा की व्यवस्था भी कर दी। तीन दिन बाद...
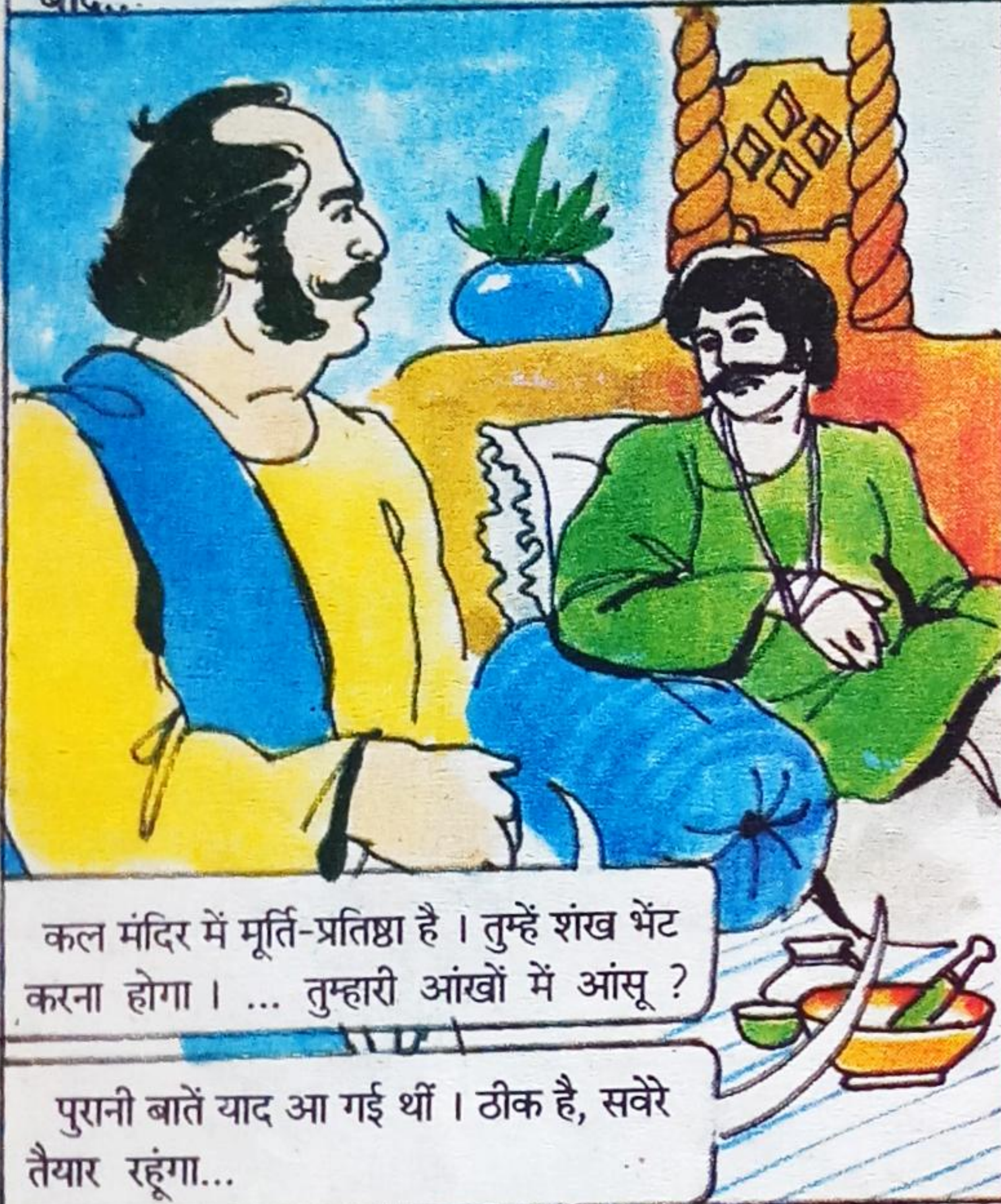
कल मंदिर में मूर्ति-प्रतिष्ठा है। तुम्हें शंख भेंट करना होगा। ... तुम्हारी आंखों में आंसू?

पुरानी बातें याद आ गई थीं। ठीक है, सवेरे तैयार रहूंगा...

अगले दिन...

मणिधर, यह मेरी पत्नी...

लगती तो मेरी बेटी जैसी है!

मणिधर! शंख!! बापू!! यहां.....

और फिर...

आप नहीं लौटे, तो मां ने मेरा विवाह कर दिया..

मगर यह न मंदिर की बात भूली, न शंख की। शंख की खोज करते-करते मैं हार गया...

और उसी शंख ने मुझे मेरे परिवार से मिला दिया... कल मैं नासिक जाऊंगा...

मणिधर नासिक में अपने घर पहुंचा, तो बेटी और दामाद साथ थे...

संदेश मिला था कि शंख मिल गया। मैं जानती थी कि इस शंख की छाया रहते प्राणों पर संकट नहीं आएगा।
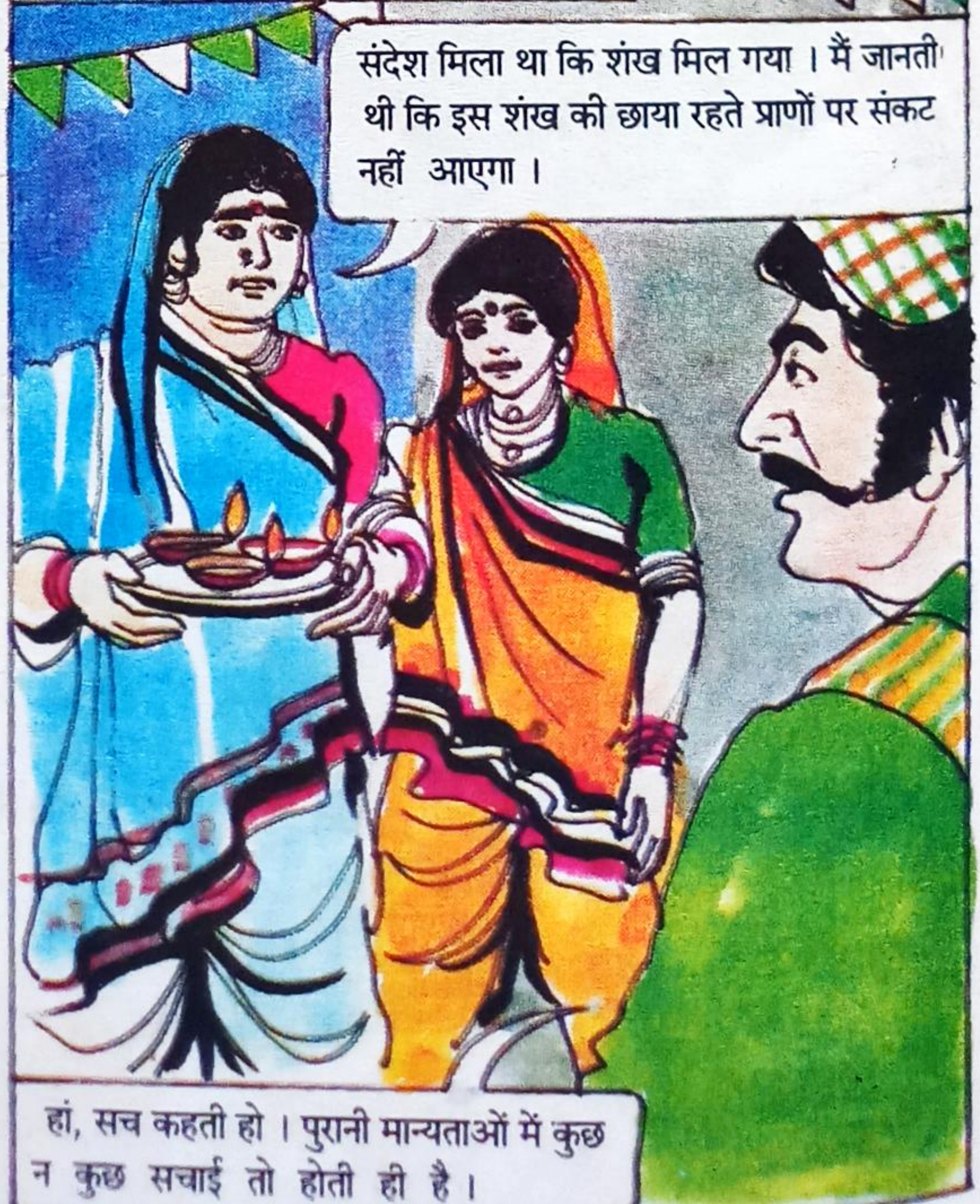
हां, सच कहती हो। पुरानी मान्यताओं में कुछ न कुछ सचाई तो होती ही है।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

# नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष २८, अंक १०; नई दिल्ली; अगस्त '९२ श्रावण-भाद्रपद, शक सं. १९१४

## जगमग-जगमग बार्सीलोना

**मैड्रिड। बार्सीलोना इन दिनों रंग-बिरंगा हो रहा है। उसे देश-देश से आने वाले खिलाड़ियों और अतिथियों का इंतजार है। स्पेन का यह दूसरा बड़ा शहर अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो-टेलीविजन पर छाया हुआ है। इस बार के ओलम्पिक में २८ खेलों का आयोजन होगा।**

आधुनिक ओलम्पिक खेल १८९६ में शुरू हुए थे। स्पेन के शहर बार्सीलोना में २५ जुलाई से ९ अगस्त तक ओलम्पिक खेल होंगे। 'कोबी' ओलम्पिक का शुभांकर है।

जिन तीन खेलों को प्रदर्शनी खेलों में शामिल किया गया है वे हैं—पलेटा, रोलर हाकी और तारक्वांडो। मुख्य ओलम्पिक स्टेडियम मांटुजुबिक है। यह स्टेडियम पैंसठ वर्ष पहले बनाया गया था। यहां सत्तर हजार दर्शक बैठ सकते हैं। अन्य स्टेडियम हैं—डायगोनल, वाल डी ही बारोन और पर्क डी मार। इन चारों में ऐसी व्यवस्था की गई है कि खिलाड़ी को एक स्थान से दूसरी जगह पहुंचने में सिर्फ पंद्रह मिनट लगें।

भारतीय पहलवानों का दल ओलम्पिक में भाग लेगा। इस ओलम्पिक में भाग लेने वाली भारतीय हाकी टीम के कप्तान परगट सिंह हैं।

—यो. रा. था

## निराला के नाम पर

नई दिल्ली। हिन्दी के जाने-माने कवि थे स्वर्गीय सूर्यकांत त्रिपाठी निराला। उनके नाम पर एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय खोला जाएगा। मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने यह जानकारी दी।

## डबलरोटी बनी बंदूक

बान। लुटेरे दुकान में घुस आए। वहां बैठी महिला को धमकाने लगे। महिला को कुछ नहीं सूझा, तो वह डबल रोटी उठा-उठाकर लुटेरों पर फेंकने लगी। घबराकर लुटेरे भाग गए।

## हमारा इनसेट अंतरिक्ष में

भारत में बने, पूरी तरह से स्वदेशी उपग्रह इनसेट-२ए को सफलता पूर्वक अंतरिक्ष में छोड़ दिया गया। यह अब तक छोड़े गए १४ भारतीय उपग्रहों में सबसे वजनी है। इस उपग्रह की मदद से देश में टेलीविजन ट्रांसमीटरों की संख्या ११ से बढ़कर ५५० तक हो जाएगी। मौसम सेवाएं सुधरेंगी और भारत के दूर-दराज स्थित द्वीपों को टेलीफोन द्वारा देश से जोड़ा जा सकेगा।

## गायों को दूध

मास्को। एक ओर परेशान लोग दूध के लिए लम्बी कतारें लगाए खड़े थे। दूसरी तरफ जिन गायों का दूध निकाला गया उन्हें ही पिला दिया गया जिससे कि दूध की कीमतें न कम हो जाएं।

## आधुनिक ओलम्पिक खेल : कब और कहां

१८९६ एथेंस, १९०० पेरिस, १९०४ सेंट लुईस, १९०८ लंदन, १९१२ स्टाकहोम, १९२० एंटवर्प, १९२४ पेरिस, १९२८ एमस्टर्डम, १९३२ लास एंजलस, १९३६ बर्लिन, १९४८ लंदन, १९५२ हैलसिंकी, १९५६ स्टाकहोम, १९६० रोम, १९६४ टोकियो, १९६८ मैक्सिको।

१९७२ म्युनिख, १९७६ मांट्रियाल, १९८० मास्को, १९८४ लास एंजलस १९८८ सोल, १९९२ बार्सिलोना।

१९१६, १९४० और १९४४ के ओलम्पिक युद्ध के कारण नहीं हो सके।

## परियां और राजकुमार

टोकियो। जापान में हर वर्ष बच्चों के लिए खिलौना मेला लगता है। जापानी खिलौने दुनिया भर में बहुत पसंद किए जाते हैं। इस बार के मेले में बच्चों को सबसे अधिक खिलौना परियां और राजकुमार पसंद आए।

## माता-पिता सरकार

तिरुअनंतपुरम्। भूमि खिसकने से प्रीति के माता-पिता की मृत्यु हो गई। अब तेरह वर्ष की प्रीति की देखभाल केरल सरकार करेगी। उसे दो एकड़ जमीन और रहने के लिए मकान दिया जाएगा। उसकी शिक्षा का खर्च सरकार उठाएगी। शिक्षा पूरी होने के बाद सरकार की तरफ से उसे नौकरी भी दी जाएगी।



पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

अच्छा गुरु भगवान की कृपा से मिलता है। — गोस्वामी तुलसीदास

# बालक का सुख

अखबारों में आए दिन बहुत-सी खबरें छपती हैं। कुछ खबरें होती हैं जो बच्चों से सीधी जुड़ती हैं। जैसे ऊंटों की दौड़ के लिए छोटे बच्चों को भारत से बाहर भेजा जाना। कम उम्र की लड़की का विवाह किसी बूढ़े शेख के साथ कर देना। अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में मलयालम बोलने पर सिर मुंडवा देना।....और भी ऐसी ही कई खबरें, जिन्हें पढ़कर सब चौंक उठते हैं।

स्वाधीन भारत में बालक की परेशानियां बढ़ रही हैं। कई नादान लोग पैसे के लिए बालक के साथ कुछ भी कर बैठते हैं। बड़े से बड़ा अत्याचार भी करने से बाज नहीं आते। हम सब यह सोचें कि कैसे बालक सुख से जी सकें। आखिर वे ही कल इस देश को सम्हालेंगे।

## हमारे मेहमान
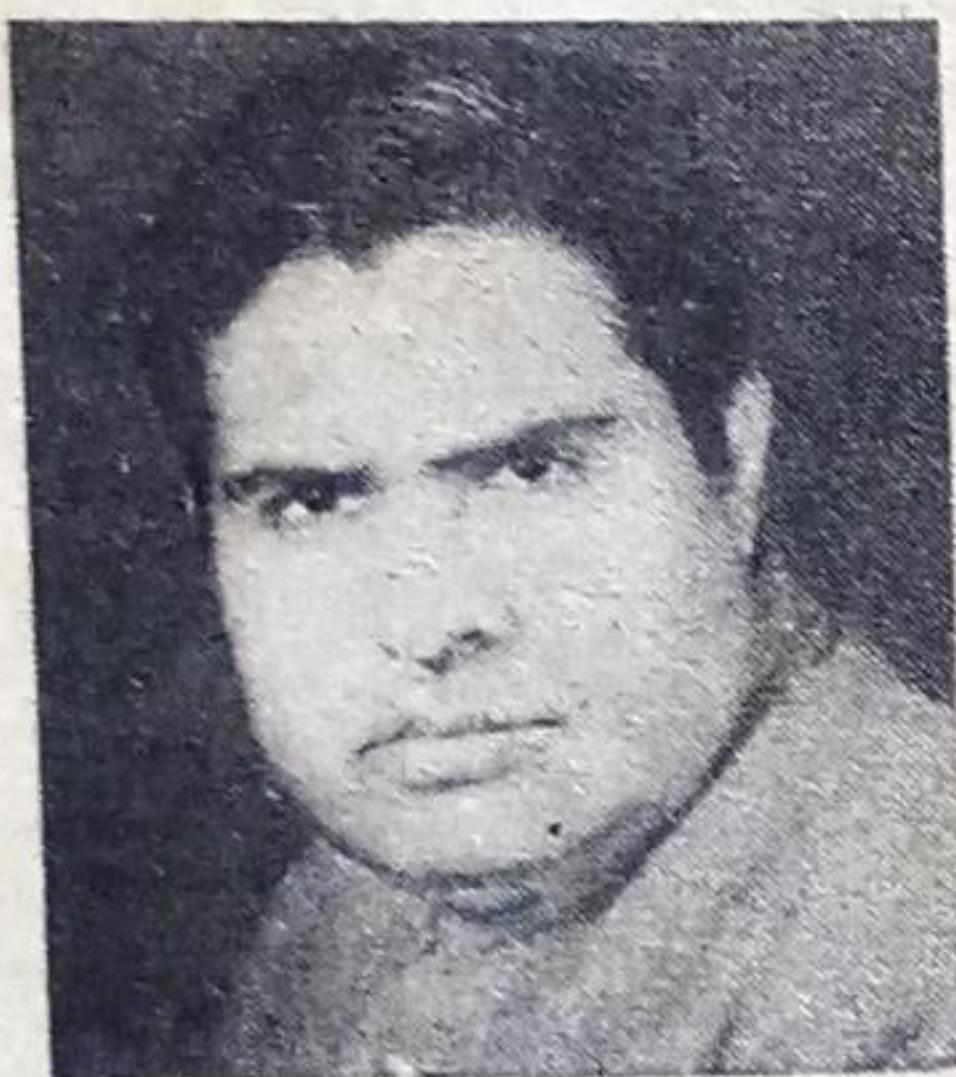
कवि और प्रमुख आलोचक डा. शरणबिहारी गोस्वामी। वृंदावन में जन्म हुआ। किशोर थे तभी से स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया। छात्र जीवन में सदा आगे रहे। कई वर्ष कानपुर तथा दिल्ली में प्रवक्ता। आकाशवाणी, दिल्ली में ब्रजमाधुरी कार्यक्रम के प्रोड्यूसर भी रहे। स्वामी हरिदास पर महाकाव्य की रचना की। इनका लिखा 'पूंछरी का लोठा' ब्रजभाषा का प्रथम उपन्यास माना जाता है। ब्रज-भाषा और साहित्य के मर्मज्ञ हैं।

बाल-शिक्षा और अखिल भारतीय विद्या भारती से जुड़े रहे। हाल ही में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष बने। संस्थान ने कई नई योजनाएं शुरू की हैं। बाल-साहित्य के लिए भी कुछ नया करना चाहते हैं।

## चांदी का सिंहासन

मदुरै। तमिलनाडु की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता को एक आदमी ने चांदी का सिंहासन भेंट किया। सिंहासन का वजन एक सौ दो कि.ग्रा. है। इसमें रत्न जड़े हुए हैं।

## आइसक्रीम पहाड़

मुम्बई। यहां मरीन ड्राइव पर भीड़ जमा थी। आइसक्रीम निर्माता बाडीलाल की ओर से 'आइसक्रीम पहाड़' बनाया जाने वाला था। इसका नाम था 'माउंट संडे'। जब आइसक्रीम की तीन छोटी पहाड़ियां तैयार हुईं, तो वजन था—तीन हजार, छह सौ अट्ठाईस किलो। आइसक्रीम पर तीन सौ साठ किलो सॉस और पचास किलो काजू छिड़के गए। तेरह हजार, तीन सौ लोगों को मुफ़्त खाने को मिली।

## नन्ही लेखिका

ह्यूस्टन। नाम है उसका अरुणा चन्द्रशेखर। अरुणा नौ वर्ष की है। उसने एक किताब लिखी है— 'आलीवर एंड द आयल स्पिल'। यह पुस्तक अलास्का तट पर एक टैंकर से लाखों लिटर तरल पेट्रोलियम बह जाने के बारे में है। यह पर्यावरण की दृष्टि से बहुत बड़ी दुर्घटना थी।

## दो बार सोओ

ओस्लो। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि तरोताजा बने रहने के लिए दो बार सोना जरूरी है। कम नींद के कारण अक्सर वाहन चालक झपकी ले लेते हैं और दुर्घटनाएं हो जाती हैं।

## अनोखा चश्मा

वाशिंगटन। जो लोग टी. वी. ठीक से नहीं देख पाते, उनके लिए चश्मा बनाया गया है। इसे लगाकर तसवीरें साफ और बड़ी दिखेंगी। १९९५ तक यह अमरीका के बाजारों में मिलने लगेगा। कीमत होगी तीन हजार डालर।

## कुत्तों ने बचाया

कोलम्बो। सेना की एक टुकड़ी के साथ दो कुत्ते भी थे। अचानक वे जोरों से भौंकने लगे। वहां खोजने पर बहुत-से बम मिले। कुत्तों की सूझ-बूझ से बहुतों की जान बच गई।

## कत्थई पांडा

बीजिंग। चीन में पहली बार कत्थई और सफेद रंग का पांडा मिला है। इसका वजन अस्सी किलोग्राम है।

## बच्चों का ध्यान रखें

नई दिल्ली। वित्त मंत्री श्री मनमोहन सिंह ने योजना आयोग को पत्र लिखा है। पत्र में मांग की गई है कि बच्चों का योजना आयोग विशेष ध्यान रखे।

## शिक्षक शिविर

नई दिल्ली । सरस्वती शिशु मंदिर और विद्या मंदिरों के बारह सौ शिक्षकों का शिविर यहां हुआ । इसमें जाने-माने शिक्षा शास्त्री डा. सीताराम जायसवाल ने कहा कि क्रोध के कारण बहुत हानि होती है । माता-पिता और शिक्षक क्रोध न करें, डांट-डपट न करें । बच्चे डर जाते हैं । क्रोध करने वाले को पसंद नहीं करते ।

डा. जायसवाल ने शिक्षकों को सलाह दी कि होम वर्क से बचें । स्कूल में अंतिम घंटा ऐसा रखें कि होम वर्क वहीं हो जाए । हो सके तो बच्चों के बस्ते भी स्कूल में ही रखें । भारी बस्ता रोज-रोज लाने-ले जाने की सिरदर्दी बच्चों को न हो । वही अध्यापक सफल होगा जो बच्चों को प्रेम के अनुशासन में रखेगा, उनके मन में भय नहीं बैठाएगा । उन्होंने कहा कि बालक समस्या नहीं होता, बल्कि माता-पिता या शिक्षक ही समस्या बने रहते हैं ।

## गांधीजी के नाम पर

जर्सी । अमरीका के न्यूजर्सी राज्य में एक विद्यालय का नाम महात्मा गांधी के नाम पर रखा गया है । यहां पर रहने वाले भारतीयों ने महात्मा गांधी की एक प्रतिमा भी विद्यालय को भेंट की है ।

## कार दो दांत लो

लंदन । ब्रिटेन में एक औरत गलत जगह कार खड़ी करके चली गई । पुलिस आई और कार में ताला लगाकर चली गई । वापस आकर औरत ने कार चलाने की कोशिश की, मगर वह न चली । जुर्माना भरने के पैसे भी उसके पास नहीं थे । उसने पुलिस के पास अपनी घड़ी गिरवीं रख दी । लेकिन सिपाहियों ने कहा कि घड़ी की कीमत कम है । इससे जुमनि की राशि पूरी नहीं होती । और कुछ नहीं सूझा तो महिला ने अपना सोने का दांत पुलिस के हवाले कर दिया ।

## मेरठ कालिज : सौ वर्ष

मेरठ । पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पुराना और मशहूर है मेरठ कालिज । इस कालिज के पुराने छात्रों ने दिल्ली में मेरठ कालिज एलुमिनी बनाया है । सौ वर्ष पूरे होने पर कालिज का शताब्दी समारोह राजधानी में हुआ ।

## चट्टान उठाओ

नाहवा (संयुक्त अरब अमीरात) । यहां के इस गांव में अनोखी परंपरा है । जो लड़का शादी करना चाहता है, उसे एक बहुत भारी चट्टान उठानी पड़ती है । कोई नहीं जानता कि यह परंपरा कैसे शुरू हुई ? लेकिन यहां जिसने भी विवाह किया है उसे यह चट्टान उठानी पड़ी है ।

## डिज्नीलैंड की सैर

**लेसिस्टर । राजू परिवार की दवाइयों की दुकान है । दुकान के रख-रखाव के लिए उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला है -- पुरस्कार में दस दिन के लिए डिज्नीलैंड की मुफ्त यात्रा ।**

## सबसे बड़ा बैक्टीरिया

**सिडनी । दुनिया का सबसे बड़ा बैक्टीरिया आस्ट्रेलिया में मिला है । यह आम बैक्टीरिया से लाखों गुना बड़ा है । इसे सूक्ष्मदर्शी के बिना देखा जा सकता है ।**

## इनाम में कैक्टस

**ओटावा । ग्रीनप्रीस संस्था ने अमरीका के राष्ट्रपति को 'लूजर्स एवार्ड' दिया । इनाम में एक कैक्टस रखा गया । कैक्टस गरम वातावरण में जिंदा रहता है । संस्था का कहना है कि धरती यदि इसी तरह गरम होती रही, तो सिर्फ कैक्टस ही बचेंगे । धरती को इस हालत में पहुंचाने के लिए अमरीका सबसे अधिक जिम्मेदार होगा ।**

## नन्हे समाचार

☐ बच्चों की कहानियों का प्रसिद्ध नायक है गुलिवर । स्पेन में विश्व मेले के लिए गुलिवर की विशाल लकड़ी की प्रतिमा बनाई गई । उसे मेले तक ले जाना एक समस्या थी । आखिर गुलिवर को पानी में नाव की तरह तैरा कर ले जाया गया ।

☐ भारत में दुनिया का पहला ऐसा बिजलीघर बनाया गया है, जिसमें धान की भूसी जलाकर बिजली बनाई जाती है ।

☐ प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव जापान की यात्रा के दौरान एक टैक्नालाजी संग्रहालय देखने गए । वहां उनका स्वागत एक रोबोट ने किया ।

☐ एस्तोनिया ने रूबल के स्थान पर अपनी नई मुद्रा क्रोन जारी की है ।

☐ नालियों में बहने वाला कचरा एक समस्या है, टोकियो में नहीं । वहां इसे जलाकर इसकी राख से ईंटें बनाई जाती हैं, फिर उन्हें सड़कों के किनारे फुटपाथों पर लगा दिया जाता है ।

☐ इटली का लुइंगा कार्टिसेली सिर्फ दस वर्ष का है, लेकिन अभी से देश में फुटबाल का मशहूर खिलाड़ी बन गया है ।

☐ अमरीका के बिल पिंकी ने नौका में अकेले ही पूरी दुनिया का चक्कर लगाया है । वह ५ अगस्त १९९० को बोस्टन से चला था और १० जून १९९२ को वापस वहां पहुंचा, लगभग २२ महीने बाद ।

☐ एक विदेशी कंपनी ने बिना पट्टियों वाले रबड़ के स्लिपर बनाए हैं । इनमें केवल तला होता है । रबड़ के ऊपर एक विशेष प्रकार का गोंद लगा है, जो पहनने पर तलवों से चिपक जाता है ।

☐ पिछले वर्ष जून में फिलिपाइंस में माउंट पिनाटुबो ज्वालामुखी फटा था । वैज्ञानिकों का कहना है कि उससे उड़ने वाली धूल दुनिया के मौसम को प्रभावित कर रही है ।

# सचित्र समाचार

जानकी कृष्णमूर्ति : हार्ड कोर्ट टेनिस की भारतीय चैम्पियन।

विएना में खिलौना भालुओं की प्रदर्शनी लगी। सैकड़ों टैडी बीयर्स रखे गए। कुछ नब्बे वर्ष से भी अधिक पुराने थे।

भारत सरकार में सबसे कम उम्र की मंत्री सिरसा (हरि.) की शैलजा : शिक्षा उपमंत्री का पद संभाला।

गाजियाबाद में बच्चों के रंगारंग कार्यक्रम : वंदना का नृत्य बहुत सराहा गया।

इंग्लैंड की 'चिल्ड्रंस इंटरनेशनल समर विलेजेज' संस्था ने लखनऊ सिटी मांटेसरी स्कूल के चार छात्रों को आमंत्रित किया। ये हैं (बाएं से दाएं) नेहा भारद्वाज, प्रिया कोचिटी, अतिनकुमार अग्रवाल, गौरव भट्ट। बीच में स्कूल की निदेशक। बाल शिविर नार्वे में हो रहा है।

साहित्य कला परिषद द्वारा बाल रंगमंच कार्यशाला। छह दिन का नाट्य उत्सव हुआ। तीन सौ बच्चों ने भाग लिया।
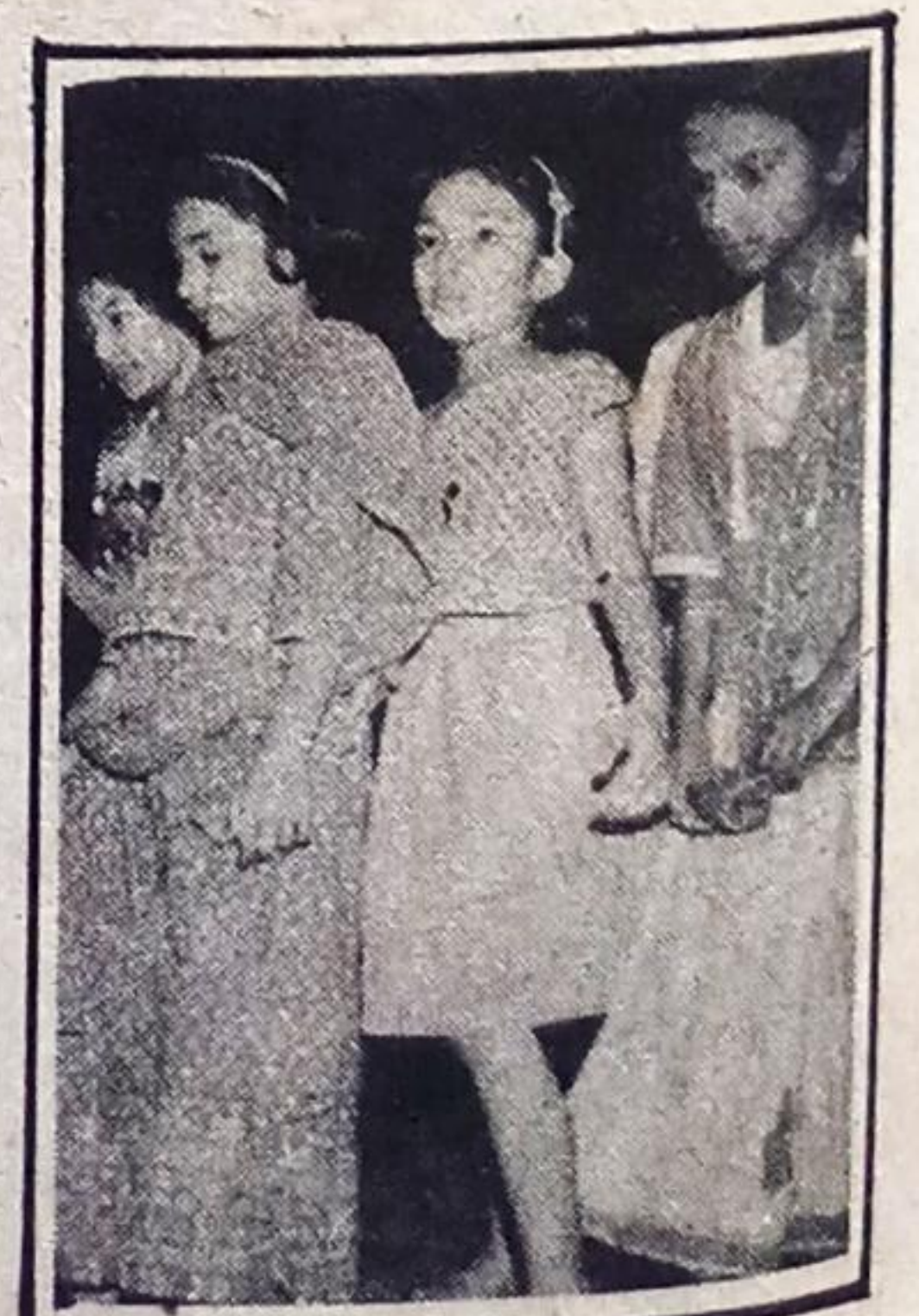
# हार जीत

एक दिन राजा विक्रमसिंह दरबार में बैठे थे। तभी दरबान आया।

महाराज, अभय मुनि आए हैं।

आदरपूर्वक ले आओ।

जो आज्ञा महाराज!

अभय मुनि सिद्ध साधक थे। उनकी विक्रमसिंह पर विशेष कृपा थी। मुनि दरबार में पहुंचे।

महामुनि, मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

सुखी रहो राजन। राज-काज कैसा चल रहा है?

सब ठीक है, मुनिवर

मुनि आसन पर बैठ गए। उनके हाथ में धनुष-बाण था। विक्रमसिंह चौंके।

राजन! यह धनुष-बाण रख लो। हां, इसका प्रयोग अच्छे कामों के लिए करना।

मुनिवर, मेरा अहो भाग्य! बस आपका आशीर्वाद मिलता रहे।

मुनि चले गए। तभी राजकुमार भीमसिंह आ गया। धनुष-बाण लेने की जिद कर बैठा। राजा ने मना कर दिया। लेकिन...

राजन, धनुष राजकुमार को दे दीजिए। इसका भी मन बहल जाएगा।

ठीक है, ले लो धनुष

राजकुमार धनुष लेकर, बाग में मित्रों के साथ घूमने चला गया । उसने एक पेड़ पर निशाना लगाया...

क्या निशाना है ! निशाना लगा और फल टपक पड़े

क्यों न टपकते ? राजकुमार का निशाना कैसे चूक सकता है ?

राजकुमार घोड़े पर चढ़ गया । कुछ सैनिकों के साथ सैर-सपाटे को निकल पड़ा । हरा-भरा जंगल देखा तो...

यहां थोड़ी देर आराम कर लेते हैं

जैसी आपकी इच्छा

उसने पेड़ पर पके फल देखे । उन्हें तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया...

तुम फल नहीं तोड़ सकते ।

मैं राजकुमार भीमसिंह हूं । मुझे रोकने वाले तुम कौन हो ?

राजकुमार को गुस्सा आ गया । दोनों में तकरार हो गई ।

मैं यहां का राजकुमार निर्मलसिंह हूं ।

हां राजकुमार, इस समय हम दूसरे राज्य की सीमा में हैं ।

भीमसिंह घमंडी था। बात बढ़ गई। दोनों ने तलवारें खींच लीं।

तो क्या, मैं वीर नहीं हूं।

कुमारो ! लड़ना ठीक नहीं।
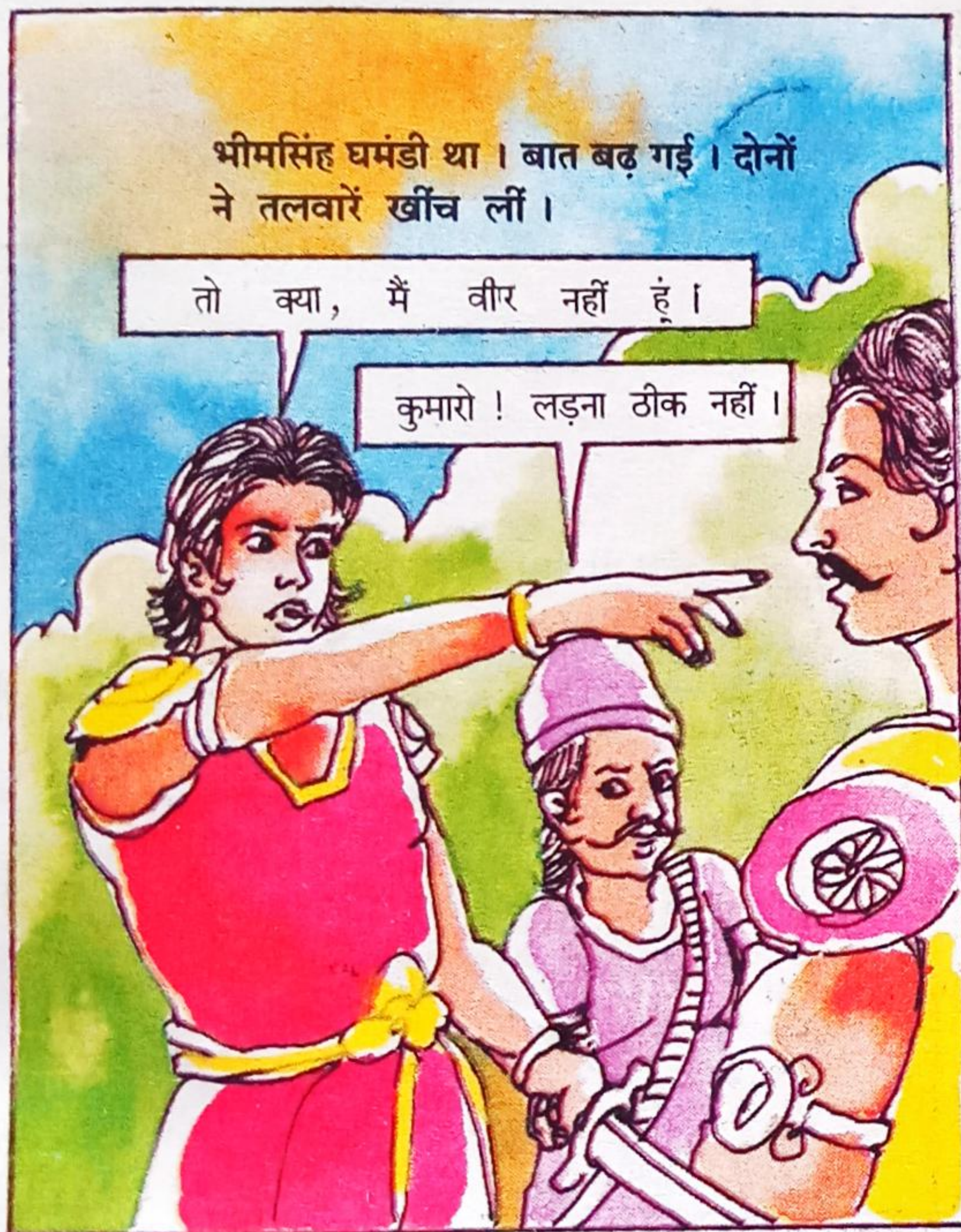
लेकिन वे न माने। एक-दूसरे पर वार करने लगे। निर्मलसिंह ने भीमसिंह को निहत्था कर दिया।

एक बार तलवार फिर हाथ में आ जाए, तो मजा चखा दूं।

लो संभालो अपनी तलवार
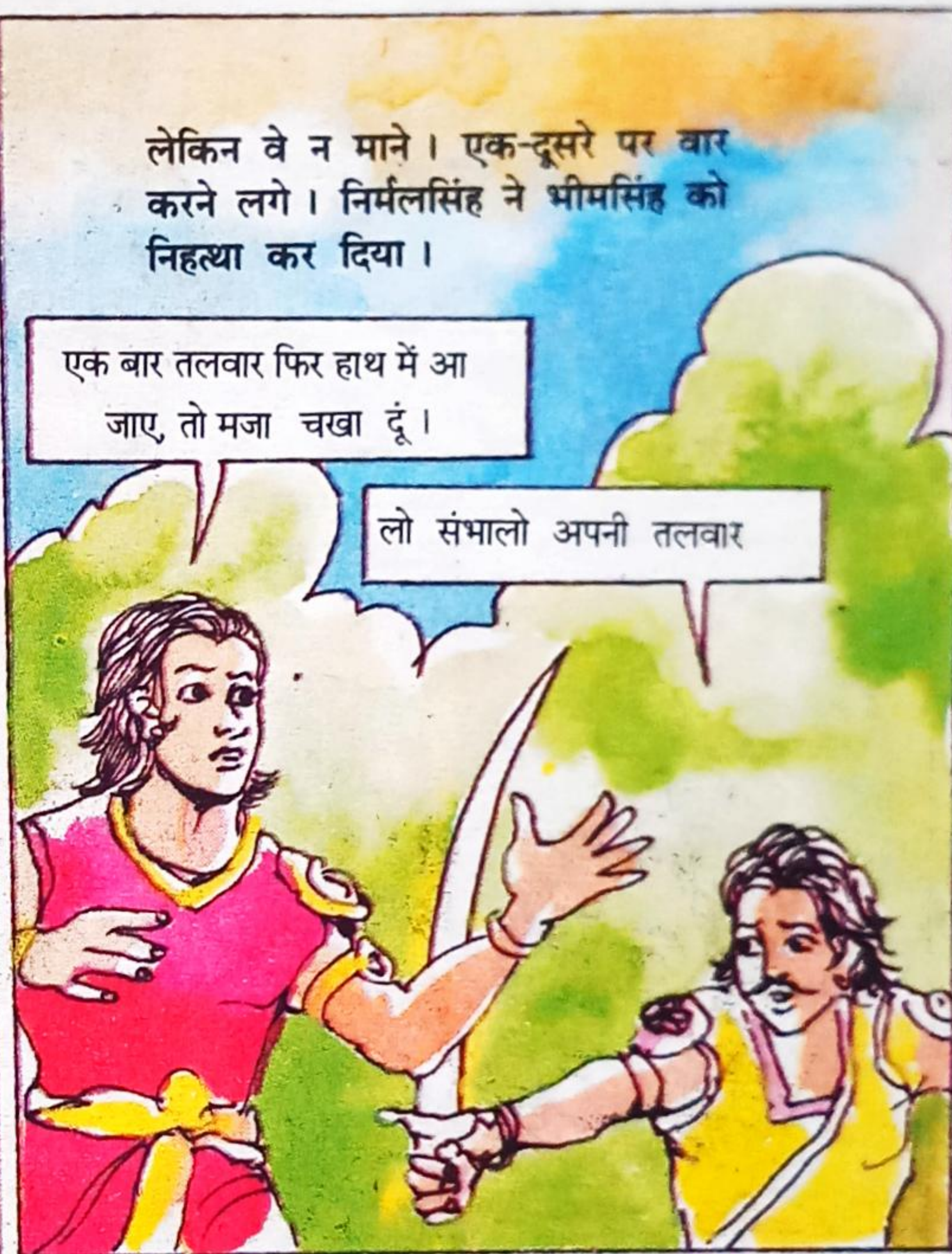
सैनिकों के समझाने पर लड़ाई थम गई। निर्मल ने सामने पेड़ पर लगे फलों को देखा...

भीम, तुम धनुष से फल तोड़कर दिखा दो। मैं हार मानकर अपना धनुष तुम्हें दे दूंगा।

मैं निशाना न लगा सका, तो अपना धनुष तुम्हें...
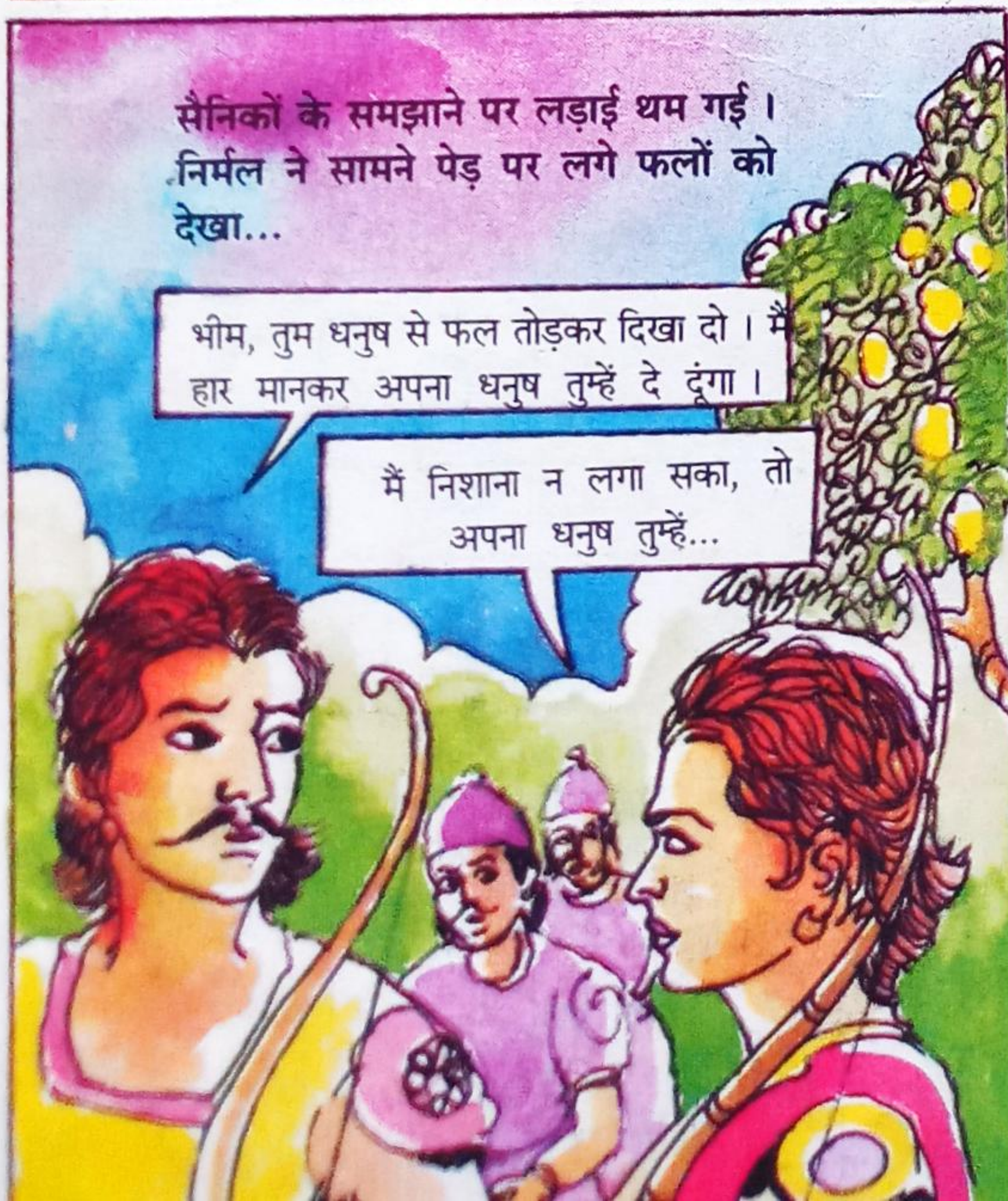
भीमसिंह ने धनुष संभाला। निशाना लगाया, मगर...

अरे, राजकुमार का निशाना खाली चला गया।
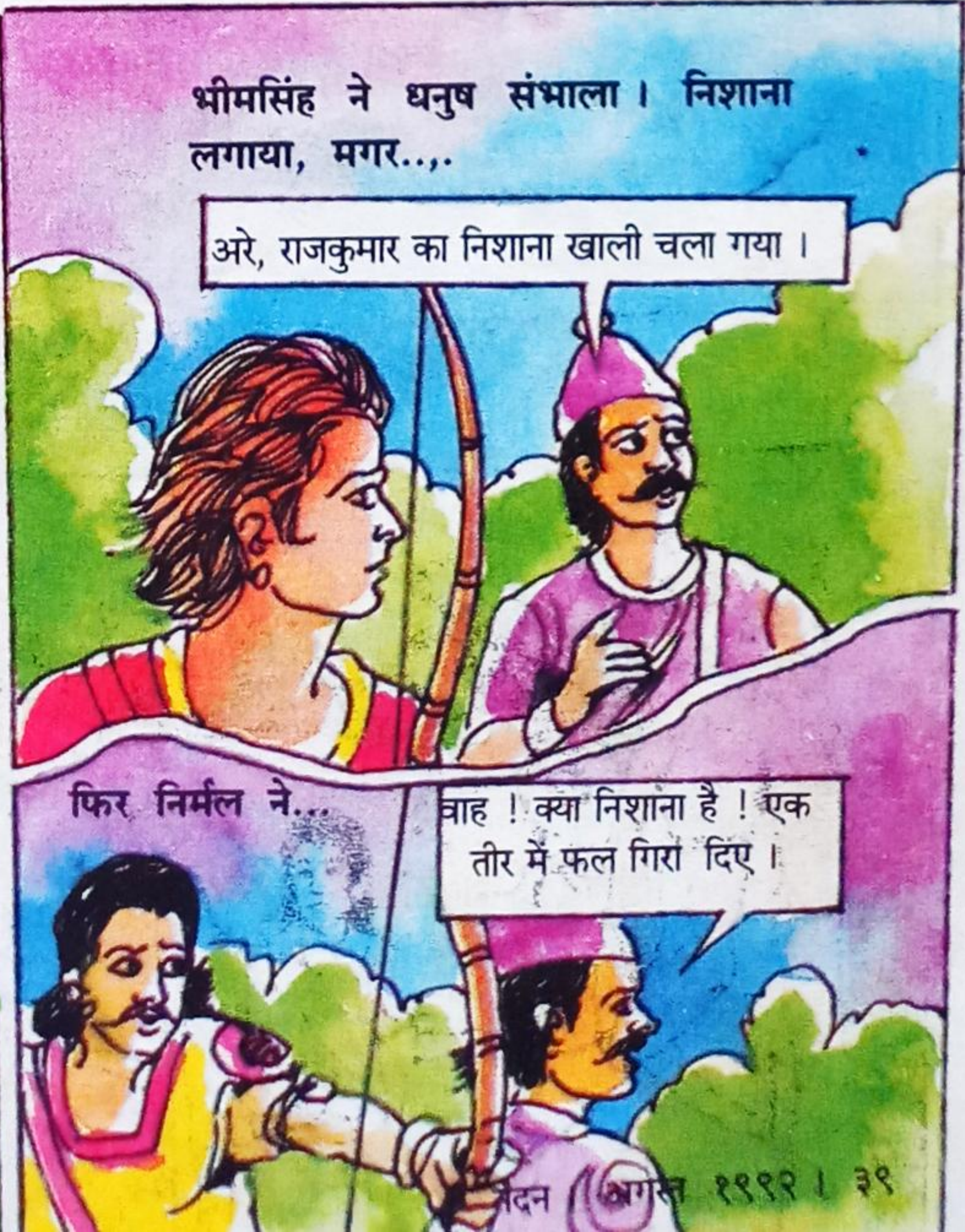
फिर निर्मल ने...

वाह ! क्या निशाना है ! एक तीर में फल गिरा दिए।

भीमसिंह उदास था। उसने धनुष निर्मल को दे दिया तभी एक सैनिक ने

निर्मलसिंह, धनुष मुझे दो। निशाना न लगा पाया, तो तुम्हारा दास बन जाऊंगा। निशाना लगा दिया, तो धनुष भीमसिंह को लौटा देना।

नहीं, यह ठीक नहीं

निर्मलसिंह धनुष-बाण लेकर भीम की ओर लपका...

राजकुमार भीम! धनुष रख लो।

मैं हार गया। फिर मैं धनुष का क्या करूंगा?

निर्मलसिंह ने भीमसिंह को गले लगाया। तभी अभय मुनि और निर्मलसिंह के पिता राजा विमलसिंह वहां आ गए। भीम को देखते ही...

तुम नहीं, तुम्हारा घमंड हारा है राजकुमार। यह धनुष अच्छे कामों के लिए है।

निर्मल, भीम मेरे मित्र विक्रमसिंह का बेटा है

एक सैनिक ने उन्हें सब कुछ बता दिया। विमलसिंह ने दोनों को समझाया...

मिल-जुलकर रहने में ही भलाई है।

आपका कहना बिल्कुल ठीक है

तुम सबका कल्याण हो

# बेटा बहादुर

—मैडेलिन जेड. डोटी

अगस्त के अंतिम दिन थे। भीषण गर्मी पड़ रही थी। बेल्जियम के उस गांव में दूर-दूर तक कोई व्यक्ति नहीं दिखाई दे रहा था। एक झोंपड़ी में एक औरत बिस्तर पर लेटी थी। पास में उसका बेटा बैठा कागज हिला-हिलाकर मक्खियां उड़ा रहा था। उसकी मां सोई हुई थी। वह बीमार लग रही थी।

अचानक बाहर घोड़ों की टापें सुनाई दीं। चारों ओर भगदड़-सी मच गई। तभी मां ने आंखें खोलकर बेटे की ओर देखा। पूछा—"यह शोर कैसा है ?"

बालक खिड़की के पास गया। उसने देखा, औरतें गली में एकत्र हो रही हैं। मां को यह बताकर वह फुर्ती से बाहर भाग गया। उसकी मां की आंखों में अजीब-सा भय दिखाई देने लगा। अगले ही पल बालक हांफता हुआ लौटा। —"मां, जर्मन आ रहे हैं, जर्मन।"

अचानक मां का चेहरा सफेद पड़ने लगा, शरीर कांपने लगा। वह चीख उठी। बच्चे ने मां का हाथ कसकर पकड़ लिया। पूछने लगा—"मां, क्या हुआ ?" मां ने बेटे का सिर सहला दिया। बोली—"बेटा, मैं ठीक हूं। पर तू आंटी को बुला ला।"

बालक दौड़ता हुआ बाहर गया। आंटी गांव की अकेली महिला डाक्टर या दाई थी। वह चौराहे पर ही मिल गई। गांव में सब बेहद घबराए हुए थे, जर्मन सैनिक जो आ रहे थे। पर बच्चे को तो अपनी मां की चिंता थी। अगले ही पल वह आंटी को अपने घर की तरफ ले जा रहा था।

कुछ देर बाद उसकी मां ने एक लड़की को जन्म दिया। बाहर सड़क पर बैलगाड़ियों का शोर था। लोग अपना सामान लाद कर गांव से जा रहे थे। दाई ने खिड़की से झांका, तो लोगों ने उससे भी चलने को कहा। दाई कुछ पल सोच-विचार में पड़ी रही, फिर तेजी से बाहर चली गई।

बेटे ने देखा, मां के पास एक नन्ही लड़की लेटी है। अब मां उसे ठीक नजर आ रही थी। उसे देखकर मां मुसकरा दी। लेकिन फिर उसके चेहरे पर चिंता झलक उठी। वह इस भागदौड़ का मतलब समझती थी। बच्ची को छाती से चिपटा लिया। फिर कहा—"मेरे लाल, जितनी जल्दी हो सके, तुम यहां से चले जाओ।"

बच्चे का पिता युद्ध के मोर्चे पर गया हुआ था। उसकी मां बिस्तर से उठ नहीं सकती थी। पर अब यह गांव छोड़ने में ही भलाई थी। वह गाड़ी की तलाश में बाहर निकला, लेकिन तब तक गांव वाले बहुत दूर निकल चुके थे। गांव में कोई नहीं था। कोई गाड़ी नहीं थी। बालक की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

तभी मां ने पुकारा—"बेटा, मुझे छोड़कर यहां से चला जा।"

—"मां, मैं तुम्हें छोड़कर कभी नहीं जाऊंगा।"

मां उसकी भावनाएं समझती थी, पर दोनों बच्चों का जीवन अधिक मूल्यवान था। उसने बालक से कहा—"बेटा, अपनी छोटी बहन के बारे में सोच। यह कैसे जीवित रहेगी भला ? तू इसे लेकर यहां से तुरंत चला जा। भाग जा। हालैंड चला जा।"

लेकिन बालक टस से मस नहीं हुआ। मां समझ गई कि बच्चे के मन में उलझन है—एक तरफ प्यार, दूसरी तरफ मां का आदेश। सोचते-सोचते उसकी आंखों से आंसू बह चले। वह रुंधे गले से बोली—"बेटा! अगर तू नहीं गया, तो हम सब मार दिए जाएंगे।"

अचानक दूर से बिगुल बजने की आवाज सुनाई

दी। औरत ने बच्ची को उठाकर बेटे की ओर बढ़ा दिया। बोली—''तुझे मेरी कसम। अब देर न कर। इसे सुरक्षित स्थान पर ले जा।''

अब बच्चा वहां नहीं रुका, वह सब कुछ समझ चुका था। बाहर जाने को मुड़ा, फिर मां के गले से लिपट गया और रो पड़ा। बाहर सड़क पर जूतों की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। बालक ने अपनी नन्ही बहन को सावधानी से संभाला। हाथ हिलाकर मां से विदा ली। पिछले दरवाजे से निकलकर खेतों में विलीन हो गया।

उसे हालैंड जाने का मार्ग मालूम था, पर वह खेतों में से जा रहा था, ताकि उसकी बहन पर किसी की नजर न पड़े। सांझ ढले तक वह चलता ही रहा। आगे एक छोटा-सा झरना दिखाई दिया। बालक ने प्यास बुझाई। फिर बहन के होंठों पर गीली अंगुलियां फिराकर, उसके मुंह में पानी की बूंदें टपका दीं।

बच्ची कभी-कभार रो पड़ती थी, नहीं तो सो ही रही थी। बच्चा अब बुरी तरह थक गया था। वह एक पेड़ के नीचे जा बैठा। सोचने लगा—'क्या मुन्नी के साथ खुले में रात बिताना ठीक होगा ? अगर किसी फार्म पर जाऊं, तो कोई इसे छीन न ले। मां ने हालैंड जाने को कहा था। वह तो अभी दूर है।'

गर्मी थी, इसलिए उसने खुले में ही रात बिताने का निश्चय किया। बहन को गोदी में लेकर चलना उसे अच्छा लग रहा था। उसने धीरे से बहन को प्यार किया। उसका सिर सहलाया, फिर न जाने कब उसकी आंख लग गई।

अचानक बच्ची के कुनमुनाने से लड़के की नींद टूटी। दिन निकल आया था। पहले तो उसे लगा, जैसे वह अपने घर में हो। लेकिन बहन की ऊं-ऊं सुनकर सब कुछ याद आ गया। उसने बहन के होंठों को पानी से गीला किया, पर वह रोए जा रही थी। एकाएक भाई को ध्यान आया, वह भूखी होगी।

उसने बहन को उठाया और चल दिया। सामने एक फार्म हाऊस था। उसकी चिमनी से धुआं निकल रहा था। फार्म हाऊस पर एक दयालु महिला मिली। उसने बच्चे को कुछ खाने को दे दिया। बच्चे ने दूध मांगा, तो वह समझी, शायद बिल्ली के बच्चे के लिए मांग रहा है। थोड़ा-सा दूध लेकर वह तेजी से आगे चल दिया। उसने अपनी बहन के बारे में कुछ नहीं बताया।

पर एक दिन की बच्ची को दूध कैसे पिलाए ? मुंह में डालते ही वह दूध बाहर निकाल देती थी। आखिर उसने अंगुली दूध में भिगोकर बच्ची के होंठों से लगाई। ऐसा कई बार किया, तो कुछ दूध बच्ची के पेट में पहुंच ही गया।

भूख शांत हुई, तो बदन में कुछ फुर्ती आ गई। बालक तेज-तेज चलने लगा। रह-रहकर उसे मां का ध्यान आ रहा था। वह कहता—'हे ईश्वर, मां ठीक हो।'

लड़का बहन को लेकर, अब खेतों के बीच से जा रहा था। गर्मी बढ़ने के साथ उसकी नन्ही बहन लगातार रोए जा रही थी। दोपहर के समय वह एक नदी के तट पर जा पहुंचा। तट पर बैठकर अपने सूजे हुए पैरों को पानी में लटका दिया। फिर बहन को घुटनों पर लिटाया। अपना रूमाल गीला करके उसका बदन पोंछने लगा। इससे गर्मी शांत हुई और बच्ची ने रोना बंद कर दिया। भाई उसे उठाकर फिर आगे बढ़ चला।

अगले दिन हालैंड में बच्चा एक शरणार्थी शिविर में पहुंचा। वहां बेल्जियम से आए लोग रह रहे थे। उसे एक दयालु महिला ने तरस खाकर वहां पहुंचा दिया था। क्योंकि वह थकान के कारण चल नहीं पा रहा था।

वहां उसे ताजा सूप पीने को दिया गया। लड़के से बहुत पूछा गया, पर वह चुप ही रहा। कुछ देर बाद उसे लगा कि अब कोई खतरा नहीं है, तो उसने मैले तौलिए में लिपटी तीन दिन की बहन को बाहर निकाला। शिविर में काम करने वाली एक औरत ने बच्ची को गोदी में लिया और प्यार करने लगी। अपनी बहन को सुरक्षित देखकर भाई ने चैन की सांस ली और अगले ही पल वहीं लेटकर गहरी नींद में डूब गया।

**(प्रस्तुत : जगदीश विभाकर)**

## पानी करता शैतानी

बादल गरजे, नाचे मोर,
बारिश आई, करती शोर।

बैठ गई है उड़ती धूल,
खोलो छाता, जाओ स्कूल।

इंद्रधनुष क्या खूब तना,
उस मौसम में यह करना—

बूंदों का सरगम सुन लें,
नदिया की कलकल गुन लें।

पानी करता शैतानी,
हम भी कर लें मनमानी !

—देवव्रत जोशी

## चिड़िया का घर

बैठी थी चिड़िया वन में,
थी उदास अपने मन में।
पास नहीं है मेरे घर,
बच्चों को बिल्ली का डर।
जगह सुरक्षित पाऊंगी,
घर मैं वहां बनाऊंगी।
उड़ी फुर्र से नभ में वह,
कमरे में घुस आई वह।
गोल-गोल कुछ बड़ी-बड़ी,
दिखी उसे दीवार घड़ी।
झट से बैठ गई चिड़िया,
हुई प्रसन्न बहुत चिड़िया।
उस पर नीड़ बना डाला,
उसमें बच्चों को पाला।
एक-एक करके गिन के,
चिड़िया ने रखे तिनके।

—रामभरोसे गुप्त 'राकेश'

## आए बादल

आए बादल
छाए बादल
पानी बरसा झूम के,
बेदम पौधे
हरे हो गए
धरती को झट चूम के।

मोर पपीहे
नाचें-गाएं
दूर-दूर हरियाली है,
मेंढ़क दादा
खुशी मनाएं
पोखर अब नहीं खाली है।
बादल भैया
पानी लाए
कहां-कहां से ढूंढ़ के।

खेत, बाग-वन
घर के आंगन
भीग-भीग ठंडाए हैं,
भीगी गलियां
भीगे घर हैं
जल से खूब नहाए हैं।
नन्हे-मुन्ने
खुशी दिखाएं
बौछारों में घूम के।

—श्यामकुमार दास

## कागज की नाव

झड़ी लगी है—झर-झर-झर !
आसमान में कुछ गड़बड़
कैसी मची हुई हड़बड़
होता है भारी हुल्लड़
झड़ी लगी है—झर-झर-झर !
बादल आएं उमड़-उमड़
घिरें घटाएं घुमड़-घुमड़
आवारा घूमें फक्कड़
झड़ी लगी है—झर-झर-झर !
ढोल बोलते धमड़-धमड़
बजते हैं ताशे तड़बड़
या नक्कारे गड़-गड़-गड़
झड़ी लगी है—झर-झर-झर !
इंद्रधनुष किसने खींचा
रंगों से जिसको सींचा
कलाकार वह कौन सुघड़
झड़ी लगी है—झर-झर-झर !
कागज की जब नाव चलें
मेल-जोल के फूल खिलें
तैराएं हम आगे बढ़
झड़ी लगी है—झर-झर-झर !
मनभावन इस मौसम में
खूब नहाएं रिमझिम में
आम चूसते फिर बढ़-चढ़
झड़ी लगी है—झर-झर-झर !

—बालकृष्ण गर्ग

# तुमने मेरे लिए

—ईश्वरलाल प. वैश्य

किसी गांव में एक गरीब मजदूर रहता था। कड़ी मेहनत करके जैसे-तैसे अपने परिवार का पेट पालता था। एक बार गांव में महामारी फैल गई। उसके परिवार के सभी सदस्य मौत के शिकार हो गए। पर वह किसी प्रकार बच गया। आखिर उसने गांव छोड़ दिया। जंगल में एक झोंपड़ी बनाकर रहने लगा।

वह कभी-कभी गांव में आता। अपने पुराने घर के खंडहर को देखता, तो रो पड़ता। फिर सड़क के किनारे बैठ जाता। कोई उसे पहचान कर दया वश कुछ खाने को देता, तो ले लेता। पर स्वयं किसी से कभी कुछ न मांगता। कुछ बोलता भी नहीं था। इसी तरह गांव में थोड़ा समय बिताकर जंगल में वापस चला जाता। रात कभी गांव में न बिताता।

एक शाम कोई शिकारी उसकी झोंपड़ी में आया। वह जंगल में रास्ता भूल गया था। उसने बताया कि वह शिकार की तलाश में आया था। साथियों से बिछुड़ गया है। वह रात बिताने का स्थान चाहता था। मजदूर ने इशारे से शिकारी को झोंपड़ी में बुला लिया। फिर अपनी गुदड़ी उसके बैठने के लिए बिछा दी। शिकारी बैठ गया। उसी शाम मजदूर गांव से दो रोटियां लाया था। पानी के कुल्हड़ के साथ उसने दोनों रोटियां शिकारी को दे दीं। शिकारी दिन भर का भूखा और थका हुआ था। रूखी-सूखी रोटियां खाकर उसने पानी पिया और गुदड़ी पर लेट गया। जल्दी ही वह गहरी नींद में डूब गया।

शिकारी के सो जाने के बाद मजदूर को अपनी सुध आई। अब वह क्या करे ? न तो उसके पास दूसरी गुदड़ी थी, न झोंपड़ी में दूसरे आदमी के सोने की जगह। सर्दी का मौसम था। अंधेरा होने के बाद से बर्फीली हवा चलने लगी थी। मजदूर किसी प्रकार झोंपड़ी के दरवाजे में जमीन पर ही लेट गया। उसका आधा शरीर झोंपड़ी के अंदर और आधा बाहर खुले में था। रात भर वह ठंड से ठिठुरता रहा। उसकी दुर्बल देह शीत लहर की मार न सह सकी।

सुबह शिकारी की नींद खुली। उसने देखा, मजदूर मर चुका था। यह देख, शिकारी को बहुत दुःख हुआ। दरअसल वह शिकारी नहीं, वहां का राजा था। उसने जानबूझकर अपना असली परिचय नहीं दिया था। राजा का मन ग्लानि से भर उठा। वह खड़ा-खड़ा सोच रहा था —'इस गरीब ने मेरे कारण ठंड सही और मर गया।' राजा उसकी मृत्यु के लिए अपने को जिम्मेदार मान रहा था।

थोड़ी ही देर में सैनिक राजा को ढूंढ़ते हुए आ पहुंचे। राजा के कहने पर सैनिकों ने मजदूर का दाह संस्कार कर दिया। फिर राजा सैनिकों के साथ नगर वापस चला गया। इस घटना का राजा के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसके मन में रह-रहकर एक बात आती —'उसकी मृत्यु का दोषी मैं हूं।' और राजा का मन अशांत हो जाता था। प्रायश्चित्त के रूप में राजा ने खूब दान दिया, पर मन को चैन नहीं आया।

राजा की उदासी दरबारियों से न छिप सकी। उन्होंने कारण जानना चाहा। बहुत पूछने पर राजा ने उस रात की घटना बताते हुए कहा —"मैं आज उस अज्ञात व्यक्ति के कारण ही जीवित हूं। मुझे लगता है, उसकी मृत्यु का दोषी मैं हूं।"

राजा की मानसिक अशांति इतनी बढ़ी कि वह बीमार हो गया। राजवैद्य ने इलाज किया, पर हालत में सुधार न हुआ। मंत्री से सलाह लेकर राजपंडित एक प्रसिद्ध ज्योतिषी को बुला लाया। ज्योतिषी ने गणना

करने के बाद कहा —"पड़ोसी राज्य में एक धर्मात्मा सेठ रहता है। उसका नाम देवदत्त है। वही राजा की समस्या का समाधान कर सकता है।"

मंत्री ने राजपंडित को पड़ोसी राज्य की राजधानी में भेजा। उसने वहां जाकर देवदत्त सेठ के बारे में पूछा। उसे सभी जानते थे। एक व्यक्ति राजपंडित को सेठ देवदत्त की हवेली तक छोड़ आया। मेहमान को आया देख, सेठ ने बढ़कर स्वागत किया। आदरपूर्वक बैठाया, फिर हंसकर कहा —"पंडित जी, मैंने आपके आने का कारण जान लिया है। राजा की समस्या का हल मेरे छह मास के पौत्र के पास है। तीन दिन बाद आप उसे राजा के पास ले जाना। वह सब ठीक कर देगा।"

सेठ देवदत्त की बात सुन राजपंडित चकित रह गया। समझ में नहीं आया कि सेठ जी की बात का क्या मतलब है। लेकिन मामला राजा का था। इसलिए तीन दिन बाद राजपंडित उसके पौत्र को राजधानी ले गया। और वहां राजा के पलंग के पास एक पालने में लिटा दिया।

राजा को देखकर शिशु उठ बैठा। उसने कहा —"राजन, मैं पूर्वजन्म में गरीब मजदूर था। मेरी झोंपड़ी में आपने शिकारी के रूप में रात गुजारी थी। मृत्यु ने मेरे पिछले जन्म के सारे दुःख दूर कर दिए। मेरे निमित्त आपने जो दान-पुण्य किया, उसी से मुझे सेठ के घर में जन्म मिला है। मैं बहुत सुखी हूं। आप अपने को मेरी मृत्यु का दोषी न मानें। मैंने आपके लिए जितना किया था, उससे कहीं अधिक आप मेरे लिए कर चुके हैं।"

नन्हे बालक के मुंह से यह सब सुनकर राजा आश्चर्य चकित रह गया। फिर वह समझ गया कि शिशु में अवश्य कोई दैवी शक्ति है, नहीं तो वह ऐसी बात कैसे कहता! राजा का मानसिक संताप कम होने लगा। जल्दी ही स्वास्थ्य में सुधार दिखाई देने लगा। कुछ दिन बाद राजपंडित शिशु को देवदत्त सेठ के घर छोड़ आया।

बाद में राजा ने स्वयं जाकर सेठ देवदत्त को धन्यवाद दिया। ●

# आए भगवान

—संतोष खन्ना

एक बार किसी क्षेत्र में भयंकर अकाल पड़ा। गांव वाले रोजी-रोटी की तलाश में अन्य स्थानों पर जाने लगे। दो कोस की दूरी पर एक कारखाना था। कई गांव वाले वहीं मेहनत-मजदूरी कर बाल-बच्चों को भुखमरी से बचाने की कोशिश कर रहे थे।

बिहारी को कई दिन से बुखार आ रहा था। इसलिए वह नहीं जा सका था। बुखार उतरा, तो उसने निश्चय किया कि वह भी कारखाने में काम करने जाएगा।

सूर्य उदय होने से पहले ही बिहारी घर से चल दिया। कई दिन की बीमारी के कारण वह तेज नहीं चल पा रहा था। जब वह जंगल से गुजर रहा था, तो दोपहर हो चुकी थी। गर्मी और प्यास के मारे बुरा हाल था। पतझड़ के पत्ते की तरह उसका पीला चेहरा धूप से काला पड़ने लगा। थोड़ी दूरी पर उसे एक व्यक्ति जाता दिखाई दिया। कांपती टांगों से वह दौड़ा, हांफते हुए आवाज लगाई—"जरा रुको भाई, यहां कहीं पानी मिलेगा?"

उस व्यक्ति ने पीछे मुड़कर देखा। बोला—"बिहारी, मैं हूं रामसिंह। आगे झरना है। वहीं पानी पिएंगे, चलो।"

सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए बिहारी ने कहा—"जंगल में हिंसक जानवरों के भय से प्राण सूख रहे थे। अच्छा हुआ, तुम मिल गए। एक और एक ग्यारह होते हैं।"

दोनों झरने के पास पहुंचे, तो वहीं गांव का मुखिया भी मिल गया। तीनों ने झरने के शीतल जल से प्यास बुझाई। फिर आगे चलने को हुए, तो मुखिया की निगाह एक झाड़ी के पास चमकती वस्तु पर जा पड़ी। उसने दो कदम आगे बढ़, ध्यान से देखा। वह सोने का सिक्का था। उसका दिमाग तेजी से सोचने लगा—'सोने का सिक्का? पुराने जमाने का लगता है। अच्छा ग्राहक मिल जाए, तो अपने वारे-न्यारे। लेकिन इन दोनों को पता चलेगा, तो हिस्सा

मांगेंगे ।' और मुखिया कोई तरकीब सोचने लगा ।

फिर एकाएक उबासी लेते हुए बोला—''मित्रो, थोड़ा सुस्ता लें । झरने के पास थोड़ी ठंडक है, पूरा जंगल तो गरम भट्टी हो रहा है ।''

''दिन में पहुंच जाएं,तो कल से काम पर लगेंगे । बैठ गए सो बैठ गए ।''—बिहारी ने चलने की उतावली दिखाई ।

''ठेकेदार मेरा जानकार है । कल से काम जरूर मिल जाएगा, चिंता न करो ।''—कहकर मुखिया वहीं पेड़ के नीचे पसर गया । विवश हो बिहारी और रामसिंह भी बैठ गए । घने जंगल में वे तीसरे साथी को अकेला छोड़कर नहीं जाना चाहते थे ।

मुखिया पेट में दर्द का बहाना बनाते हुए उठा । ''अभी आया ।''-कहकर, उस झाड़ी की ओर बढ़ गया, जहां सोने का सिक्का पड़ा था । उसने पीछे मुड़कर देखा । उसके साथियों को संदेह नहीं हुआ था । वह सिक्का अपनी जेब में रख सकता था । सिक्का उठाने के लिए जैसे ही हाथ बढ़ाया, उसके मुंह से जोर की चीख निकली । वह पीछे को दौड़ा ।

बिहारी और रामसिंह हड़बड़ाकर उठे । ''क्या हुआ ?''—उन्होंने पूछा ।

दोनों मुखिया के पास पहुंचे, तो देखा कि सामने चमकते सिक्के पर एक सांप फन फैलाए बैठा है ।

''काटा तो नहीं सांप ने ?''—बिहारी ने मुखिया से पूछा ।

—''नहीं, सांप ने तो नहीं, पर लोभ का सर्प मुझे पहले ही डस गया था । सोचा था,तुम दोनों को सोने के सिक्के का पता न चले ।''

''सांप जा रहा है ।''—रामसिंह उत्साहित हो फुसफुसाया और आगे बढ़कर सोने का सिक्का उठा लिया । सांप तब तक गायब हो चुका था ।

मुखिया ने झट सिक्का झपट लिया ।''सिक्का वास्तव में काफी कीमती है ।''—उसे उलटते-पलटते हुए बोला ।

''सिक्का कितना भी कीमती क्यों न हो, आपकी जान से अधिक मूल्यवान नहीं हो सकता । इंसान के हाथ के पसीने से कीमती कोई चीज नहीं है ।''—बिहारी बोला ।

''मैं बेईमानी नहीं करूंगा । यह सिक्का शहर में बेच देंगे । उसकी राशि आपस में बांट लेंगे ।''—मुखिया ने कहा ।

''ठीक है ।''—रामसिंह ने हां में हां मिलाई ।

''लगता है, बिहारी को सिक्के की कोई खुशी नहीं हुई । आपको भी देंगे हिस्सा, आखिर आप हमारे मित्र हैं ।''—मुखिया ने सिक्के को हथेली पर रगड़ा ।

''मुझे ऐसी वस्तु में रुचि नहीं, जिस पर मेरे पसीने के निशान न हों ।''—बिहारी ने कह दिया ।

मुखिया ने कहा—''हमने कोई चोरी नहीं की । ईश्वर ने दिया है हमें यह सिक्का ।अकाल की इस कठिन घड़ी में ईश्वर मदद करना चाहता है हमारी ।''

''ईश्वर की चीजें ईश्वर को लौटा देनी चाहिए ।''—बिहारी ने कहा ।

उसकी बात सुन, रामसिंह के दिमाग में खलबली मच गई । 'इसका तो दिमाग खराब है । हमने न किसी का हक मारा है, न ही सिक्का चुराया है । जंगल में पड़ा मिला है हमें । हम न उठाते,तो कोई और उठा लेता । पर मुखिया भी पूरा काइयां है । इसने कैसे झपट लिया सिक्का ? वास्तव में सिक्का ईश्वर ने मुझे दिया है । मुझे

देखते ही सांप बिल में जा घुसा था।'—एक तरफ खड़ा रामसिंह सोच रहा था।

फिर वह मुखिया के हाथ से सिक्का छीनकर दौड़ने लगा। बिहारी और मुखिया दोनों हक्के-बक्के रह गए। "चलो, पीछा करें उसका। वह अकेला सिक्के को हड़पने न पाए।"—मुखिया उस तरफ दौड़ने को हुआ जिधर रामसिंह भागा था।

पर बिहारी अपनी जगह से नहीं हिला।

—"आओ, वह दूर निकल जाएगा।"

"सिक्के के लोभ में हमें अपने रास्ते से नहीं भटकना चाहिए।"—बिहारी ने शांत भाव से कहा

"बचाओ, बचाओ।"—तभी दूर से रामसिंह के चिल्लाने का स्वर सुनाई दिया। बिहारी उस ओर दौड़ पड़ा।

"शेर की दहाड़ नहीं सुनी?"—मुखिया ने बिहारी को रोकते हुए कहा। "हमें खतरे में नहीं जाना चाहिए।"

"हमारा मित्र विपत्ति में है।"—बिहारी ने कहा और उस तरफ दौड़ने लगा।

कुछ दूर दौड़ने के बाद दोनों ने देखा कि रामसिंह बेहोश पड़ा है। सोने का सिक्का पास ही घास में गिरा पड़ा था। मुखिया ने झटपट सिक्के को उठा लिया। बिहारी रामसिंह को हिलाने-डुलाने लगा। कुछ ही देर में रामसिंह को होश आ गया। वह एकाएक उठा और भय से इधर-उधर देखने लगा।

"डरो मत।"—बिहारी ने उसे ढाढ़स बंधाया।

"क्या शेर चला गया?"—रामसिंह ने पूछा।

—"यहां तो कोई शेर नहीं, शायद तुम्हें भ्रम हुआ था।"

"शेर की दहाड़ सुनकर मैं बेहोश हो गया था। मुझे क्षमा करना। लोभवश मैंने यह नीच काम कर डाला। मुझे न तो सिक्का चाहिए, न सिक्के में हिस्सा।"—रामसिंह बोला।

मुखिया ने सोने का सिक्का बिहारी को थमाते हुए कहा—"यह अपने पास रखिए। जब हाथ में आता है, तो लोभ मन को भरमाने लगता है।"

"भगवान की वस्तु भगवान को सौंप देनी चाहिए।"—बिहारी ने कहा।

तीनों एक मंदिर में पहुंचे। बिहारी सिक्का ईश्वर को अर्पित करने लगा। तभी उसे एक दबी-सी सिसकी सुनाई दी। उसने देखा, एक महिला गोद में बच्चा लिए सुबक रही थी।

बिहारी ने तत्काल उसके पास जाकर पूछा—"क्या बात है बहन? रो क्यों रही हो?"

"मेरा बच्चा बहुत बीमार है भैया।"—उसने रोते-रोते कहा—"मेरे पास इलाज के लिए पैसे नहीं हैं।"

"ईश्वर का आशीर्वाद लो। इसे शीघ्र शहर में किसी डाक्टर के पास ले जाओ।"—कहकर बिहारी ने सोने का सिक्का उसे दे दिया।

कुछ देर बाद पुजारी बाबा ने सबको पुष्पप्रसाद देते हुए कहा—"आज ईश्वर प्रकट हुए। बरसों की मेरी पूजा-अर्चना सफल हुई।"

"अच्छा! कहां?"—बिहारी और मुखिया के होंठ विस्मय से खुले रह गए।

"यहीं, तुम लोगों के वेश में!"—कहकर पुजारी बाबा मुसकराए।

मंदिर में बजते घंटे मानो पुजारी बाबा की बात की पुष्टि कर रहे थे। ●

# चटपट

● दिनेश—मैंने तुम्हें पचास रुपए देकर गलती की।
रमेश—पचास और दे दो। गलती सुधर जाएगी।

● एक बाक्सर—ऐसा मुक्का मारूंगा, सारे दांत टूट जाएंगे।
दूसरा बाक्सर—दांत टूटेंगे तब जब होंगे। मेरे दांत तो पहले ही टूट चुके हैं।

● एक पड़ोसी—यह तो बताओ, तुमने मेरे घर का शीशा क्यों तोड़ा।
दूसरा पड़ोसी—बता दिया, तो मेरे घर का शीशा कैसे बचेगा ?

● बेटी—मम्मी, भइया ने मेरा बक्सा तोड़कर सारे खिलौने निकाल लिए।
मां—बेटी, तुम्हें खिलौने बाहर रखने चाहिएं थे, तब बक्सा तो न टूटता।

● विभा—मैं एक घंटे से बोले जा रही हूं, पर तुम हो कि जवाब ही नहीं देतीं।
रमा—जवाब तो तब दूंगी, जब तुम सुनो।

● पंकज—यार, आज तुम स्कूल जाने की जिद क्यों कर रहे हो ?
नीरज—तुम्हें पता नहीं, कई अध्यापक छुट्टी पर हैं।

● पत्नी—तुम बाजार से खट्टे आम उठा लाए।
पति—क्या करता ? दुकानदार ने आम चखने का मौका ही नहीं दिया।

● एक आदमी—एक तो मेरा कपड़ा फाड़ दिया और ऊपर से पैसे मांगते हो ?
धोबी—पर कपड़ा तो धुलाई के बाद फटा है।

● पिता—बेटा, आज रेडियो की आवाज साफ नहीं आ रही ?
बेटा—लगता है, मेरी तरह इसका भी गला खराब हो गया है।

● अधिकारी—मेरी इजाजत बगैर इस आफिस में कोई परिंदा पर नहीं मार सकता।
कर्मचारी—साहब, परिंदा यहां है ही नहीं, पर कहां से मारेगा।

●अध्यापक— आपसी फूट से नुकसान ही नुकसान है।
एक छात्र— जी, तभी तो आए दिन हम में से कोई न कोई पिटता रहता है।

● लेखक— तुम मेरी रचना पढ़कर भी नहीं हंसे !
पाठक— क्योंकि यहां लिखा है— हंसना मना है।

● एक राहगीर— तुम्हारा जूता खटखट क्यों करता है ?
दूसरा राहगीर— ताकि तुम जैसे लोग औरों को आने-जाने का रास्ता दे दें।

● आयोजक— कविवर, आप तो सम्मेलन में अकेले आने वाले थे, यह दूसरे कौन हैं ?
कवि— भाई, श्रोता भी साथ लेकर चलता हूं।

Pawan
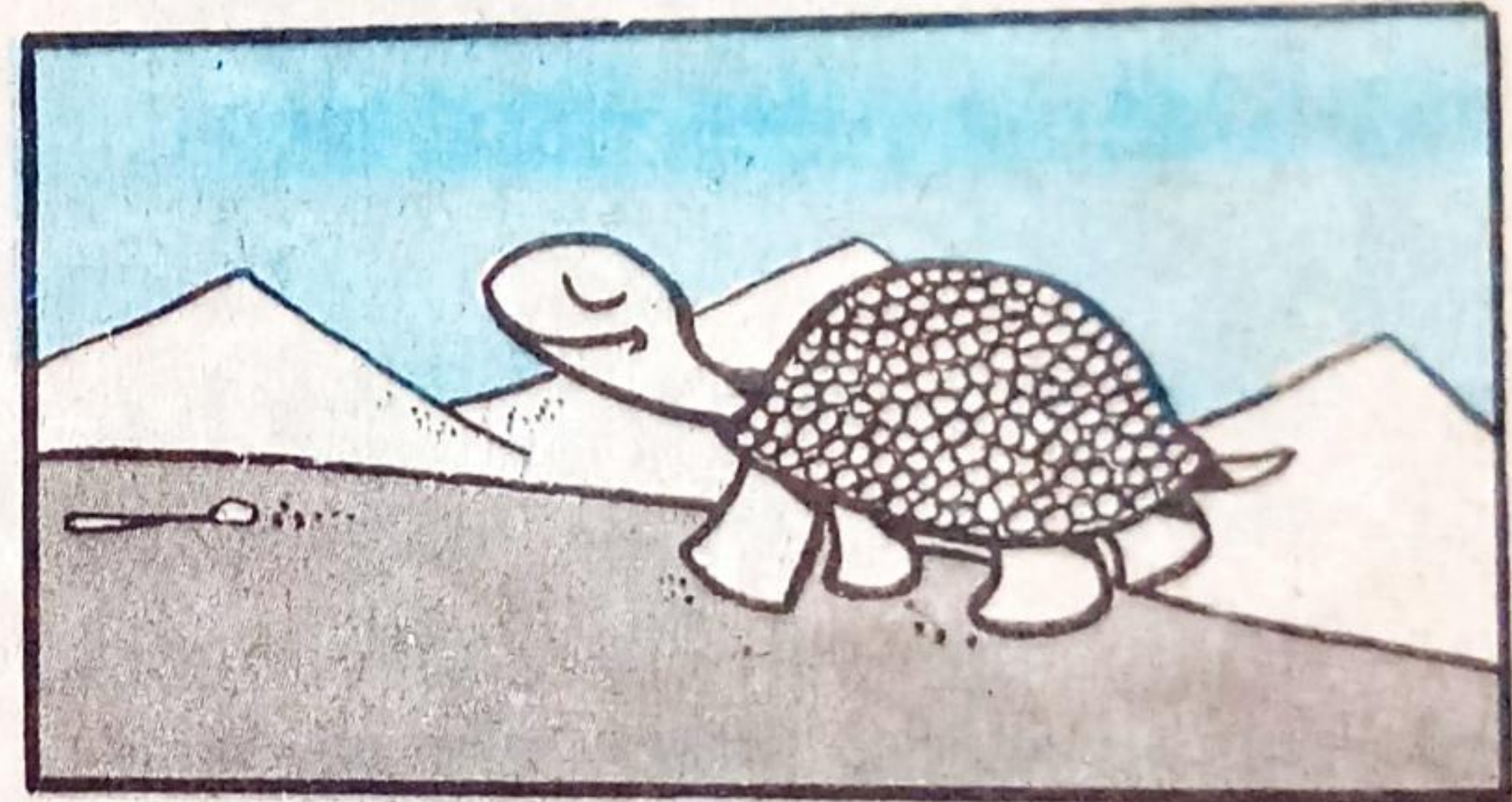
# तेनालीराम (२६२)

## खेत किसके

एक बार विजयनगर दरबार में बड़ा विचित्र मुकदमा आया। दीनानाथ नाम के एक किसान ने रो-रोकर फरियाद की— "मेरे खेत नंदू पटवारी और रामस्वरूप जमींदार ने हड़प लिए हैं। न्याय कर मेरे खेत उनसे दिलाए जाएं।"

राजा ने तुरंत पटवारी को बुलवाया। उससे पूछताछ की। पटवारी बोला— "महाराज, लगान के लेखे में वे खेत रामस्वरूप के ही हैं।"

राजा ने लेखे की जांच कराई। सचमुच वे खेत रामस्वरूप के नाम ही थे। हड़पने का प्रश्न नहीं था। दीनानाथ का मुकदमा खारिज कर दिया गया।

दीनानाथ तेनालीराम से मिला। तेनालीराम को उसकी बातों में सचाई लगी। उसने दीनानाथ को एक सप्ताह बाद दरबार में फिर फरियाद करने को कहा। एक सप्ताह बाद दीनानाथ फिर दरबार में पहुंचा। पटवारी और जमींदार से अपने खेत दिलाने की फरियाद की।

राजा ने उसे फटकारा— "बार-बार आकर समय बरबाद क्यों करते हो? सरकारी कागजों में जब वे खेत जमींदार के नाम हैं, तो तुम्हें कैसे दिलाए जा सकते हैं?"

तेनालीराम ने हाथ जोड़कर कहा— "कृपया पटवारी को एक बार फिर बुलाया जाए।"

सारा दरबार चकित। राजा गुस्से से बोले— "तेनालीराम, सरकारी दस्तावेजों को झूठा साबित करने की कोशिश की, तो तुम्हें दंड मिलेगा।"

पटवारी को दुबारा बुलाया गया, तो तेनालीराम ने उससे पूछा—"वे खेत रामस्वरूप के नाम कब से हैं?" पटवारी सकपका गया। तेनालीराम ने बही उसके हाथ से ले ली। स्वयं देख उसे राजा के सामने रख दिया। राजा ने देखा— वे खेत पिछले डेढ़-दो सौ सालों से रामस्वरूप के नाम ही चले आ रहे थे।

"अन्नदाता, फिर यह रामस्वरूप, जमींदार कैसे हो सकता है? जमींदार की उम्र तो सिर्फ पचास साल की है।"— तेनालीराम ने कहा कि राजा कृष्णदेव राय भड़क उठे। मामले की छानबीन गहराई से कराई, तो पता चला कि वे खेत दीनानाथ के पड़दादा रामस्वरूप के थे। गलती से उनके पिता का नाम बही में दर्ज होने से रह गया था। उसी का फायदा रामस्वरूप जमींदार ने उठाना चाहा था।

राजा ने दीनानाथ को उसके खेत दिलवाकर पटवारी और जमींदार को कठोर दंड दिया। तेनालीराम की प्रशंसा की।

रामानुजाचार्य

# हमारे आचार्य

वल्लभाचार्य

मध्वाचार्य
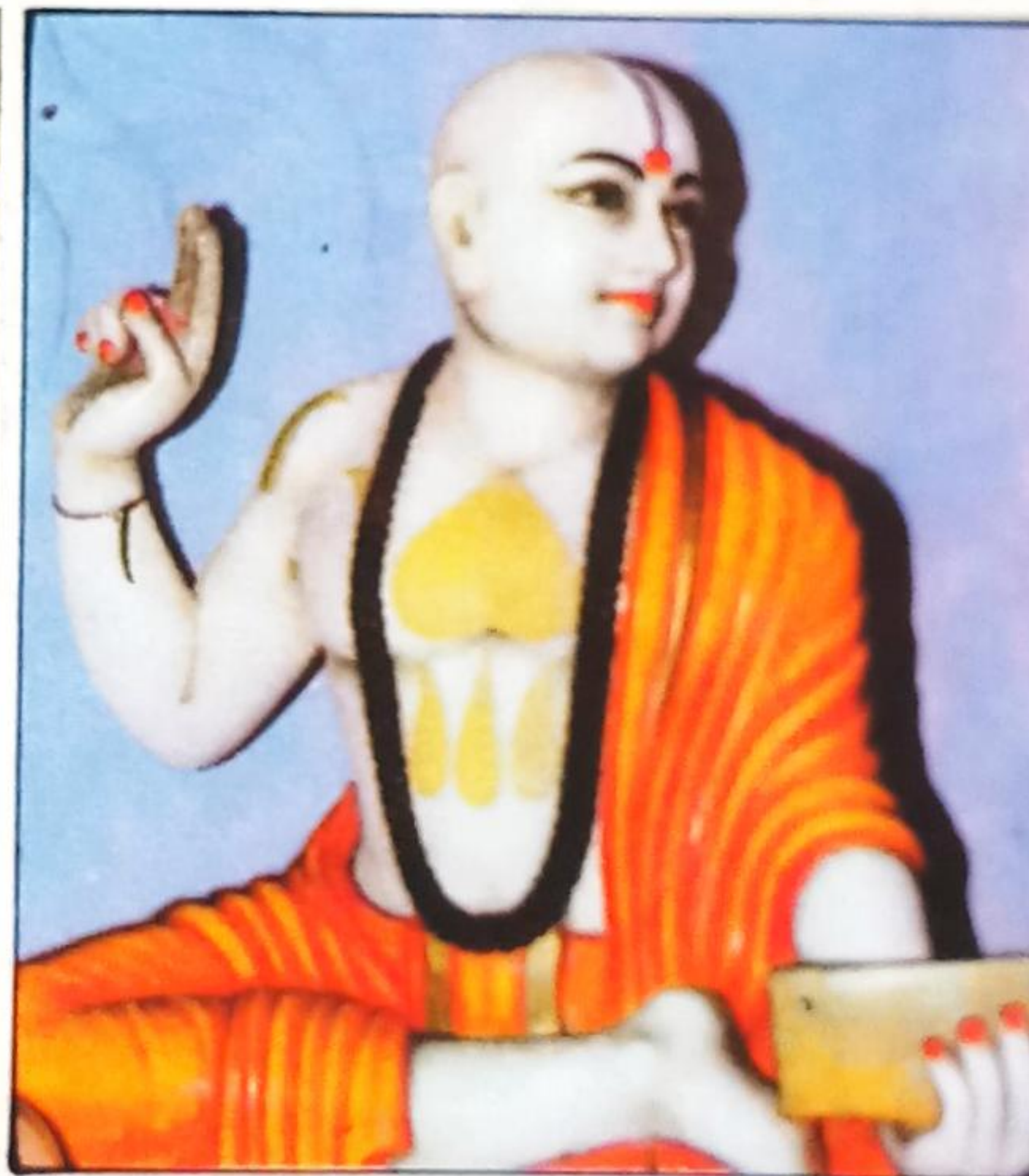
रामानंदाचार्य

पुराने गुरुकुलों में वेद, शास्त्र, पुराण आदि पढ़ाए जाते थे। पढ़ानेवालों को आचार्य कहा जाता था। कुछ ऐसे आचार्य हुए, जिन्होंने वेद, पुराण, शास्त्र आदि प्राचीन ग्रंथों में बताई बातों को अपने ढंग से देखा-समझा। अपने शिष्यों को उसी तरह समझाया। उसी परम्परा के कुछ आचार्य ----

निम्बार्काचार्य
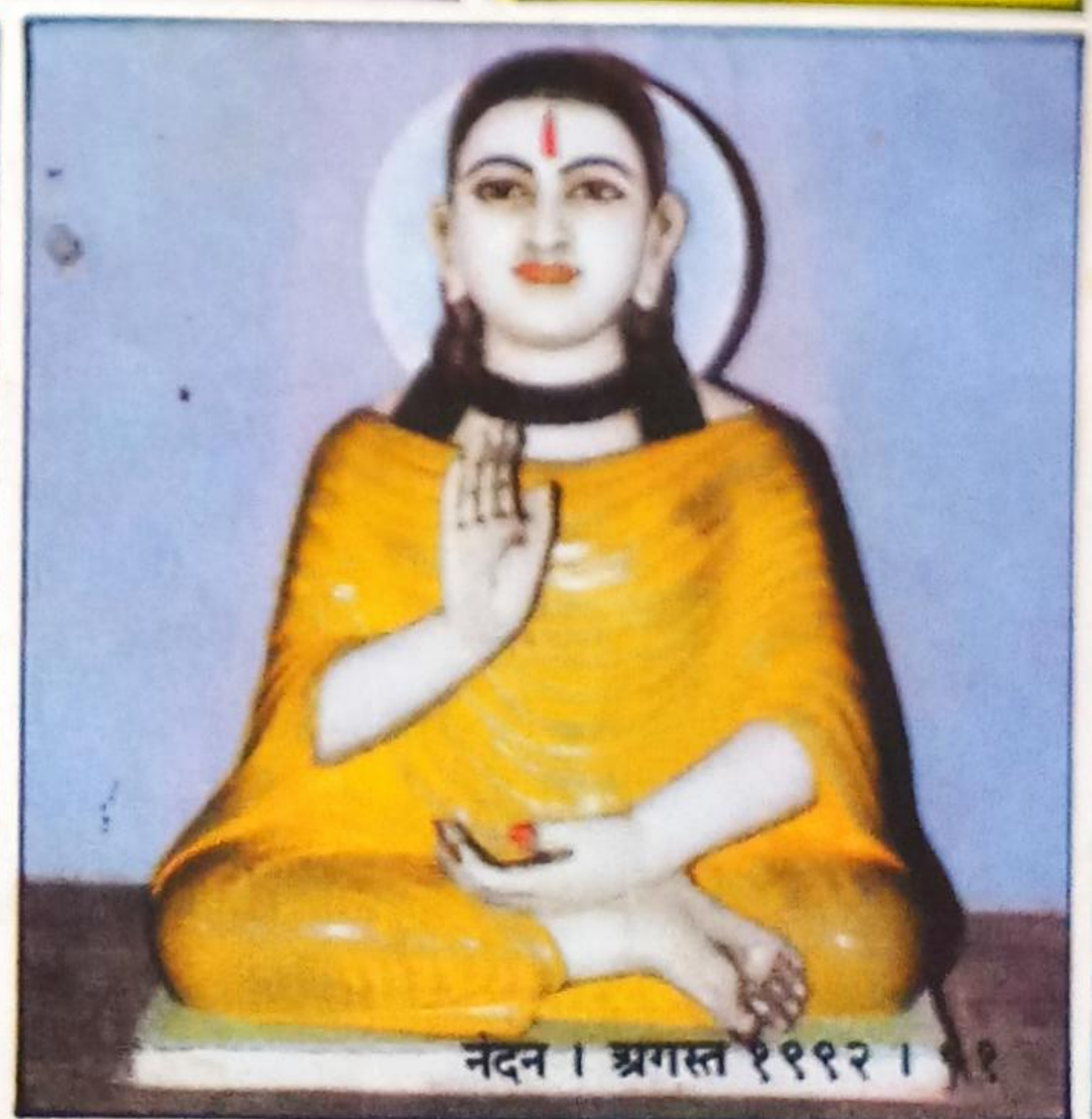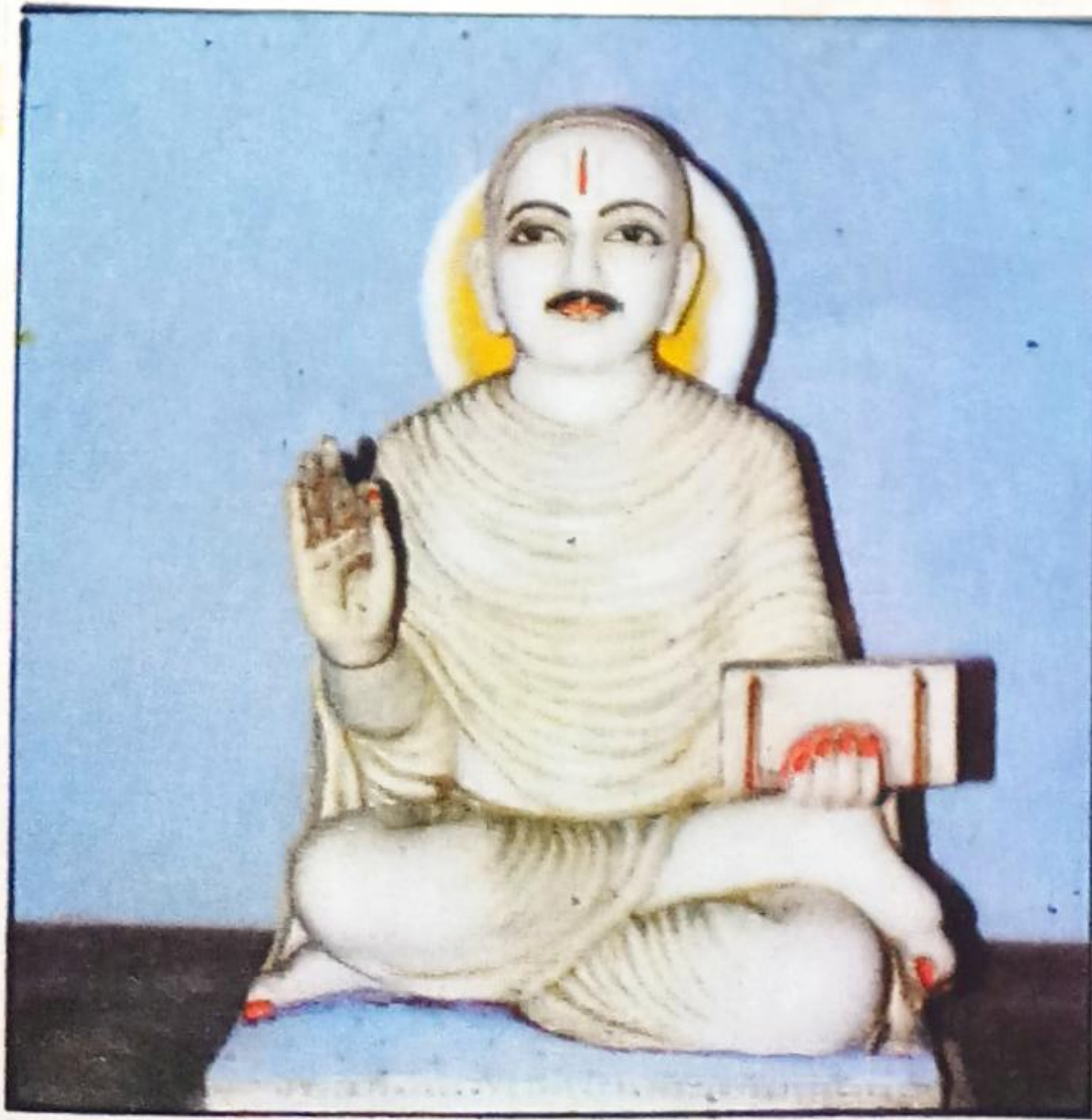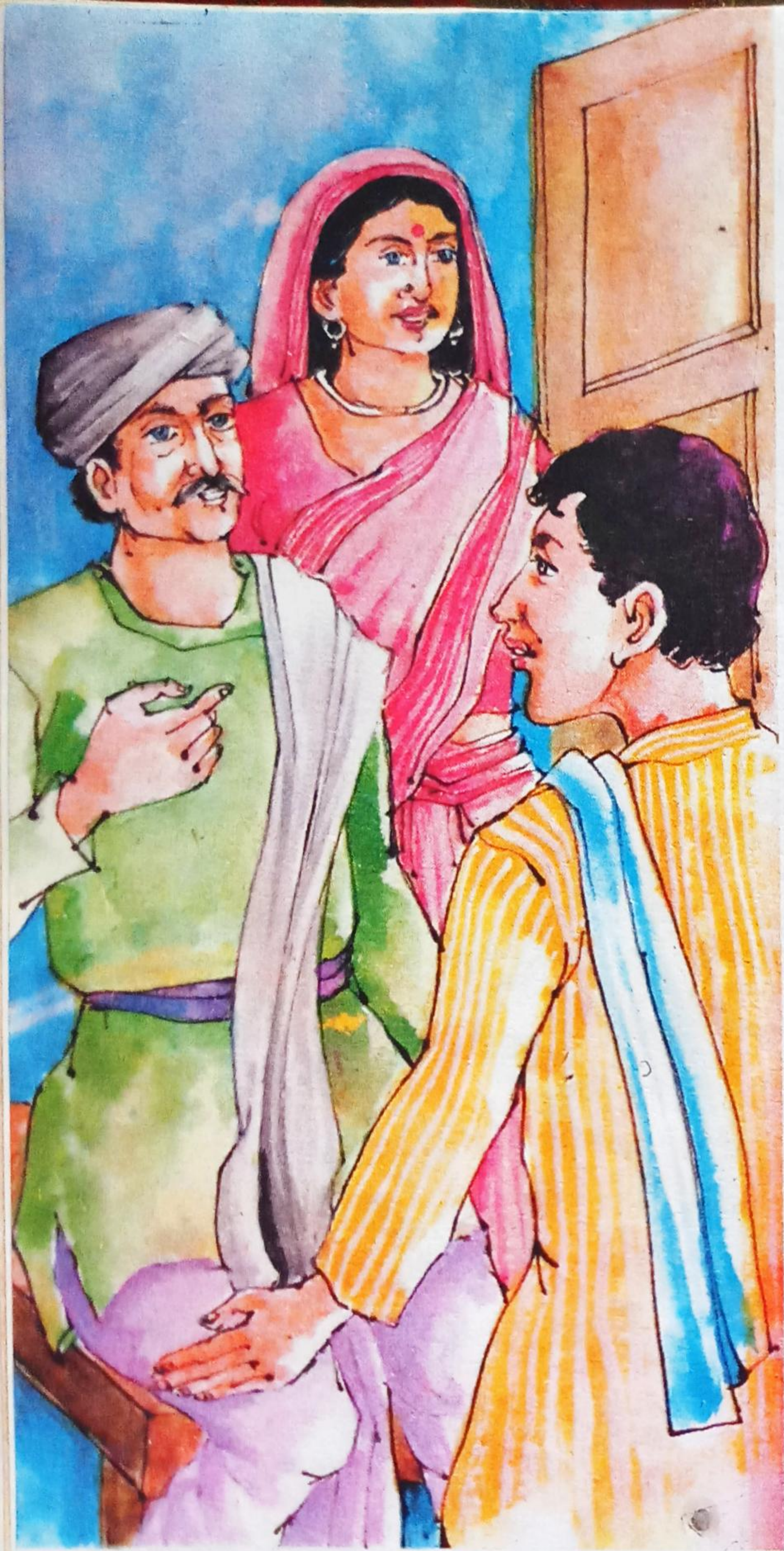
# तीन में एक

—श्याम पुजारी

सेठ छविराम और उसकी पत्नी दुलारी बूढ़े हो चले थे। वे आराम की जिंदगी गुजार रहे थे। उनके तीन लड़के थे। बड़े का नाम हीरा, मंझले का मोती और छोटे का नाम पन्ना था। तीनों अलग-अलग व्यापार करते थे। पन्ना का व्यापार काफी चमक रहा था। इस कारण, उसके दोनों बड़े भाई उससे ईर्ष्या करते थे।

सेठ छविराम छोटे बेटे पन्ना को बहुत चाहता था, क्योंकि वह बुद्धिमान और सच्चा था। किंतु उसकी पत्नी तीनों बेटों को बराबर प्यार करती थी।

अक्सर दुलारी पति से पूछ बैठती—"आप पन्ना को अधिक प्यार क्यों करते हैं ? हीरा और मोती भी तो अपने बेटे हैं।" छविराम उसकी बातें हंसकर टाल देता था। कहता—"जब समय आएगा, तब तुम्हें सब मालूम हो जाएगा।"

एक दिन छविराम ने पत्नी से कहा—"आज मैं तुम्हारे सामने तीनों बेटों को बुलाता हूं। तुम्हें यह बात खुद ही मालूम हो जाएगी कि मैं पन्ना को अधिक प्यार क्यों करता हूं।" फिर उसने पन्ना को बुलाया।

"पिता जी, मुझे क्यों बुलाया है ?"—पन्ना बोला। छविराम ने कहा—"देखो बेटा, तुम मेरे सबसे छोटे लड़के हो। इस हवेली में मैंने तीन कलश सोने की मुहरों से भरकर गाड़ रखे हैं। मैं चाहता हूं, वह सारा धन तुम ले लो। अब हम बूढ़े हुए। जीवन का कोई भरोसा नहीं है।"

—"नहीं पिता जी, मुझे कुछ नहीं चाहिए। फिर आप मुझे सारा धन दे रहे हैं। मुझसे बड़े दो और भाई भी हैं। उनका भी धन पर उतना ही हक है, जितना मेरा। यह धन उन दोनों में ही बांट दें।"

"ठीक है बेटा, तुम्हारी जैसी इच्छा। अब तुम जा सकते हो।"—छविराम ने कहा। पन्ना चला गया। अब छविराम ने मोती को बुलाया। उसे सारी बात बताई। फिर पूछा—"बोलो बेटा, तुम्हारा क्या विचार है ?"

"पिता जी, पन्ना के पास तो बहुत सारा धन है। उसका व्यापार भी ठीक चल रहा है। उसे और धन देने की क्या आवश्यकता है ? आप सारा धन मुझे और हीरा को दे दें।"

—"ठीक है बेटा, मैं इस बारे में सोचूंगा। अब तुम जा सकते हो।" फिर छविराम ने तीसरे बेटे हीरा को बुलाकर कहा—"बेटा, तुम मेरे सबसे बड़े लड़के हो। इसीलिए सबसे पहले तुम्हें बताना जरूरी हो जाता

है।'' इसके बाद छविराम ने हीरा को कलश के बारे में बता दिया।

हीरा खुशी से उछल पड़ा। बोला—''पिता जी, मैं आपका सबसे बड़ा लड़का हूं। दोनों छोटे भाइयों से मेरे अधिकार भी ज्यादा हैं। वैसे भी माता-पिता के बाद बड़े बेटे पर अधिक जिम्मेदारियां आ जाती हैं। पहले आप यह धन मुझे दें।'' कहकर हीरा चला गया।

छविराम दुलारी से बोला—''तुमने अपने तीनों बेटों की बातें सुन लीं। पन्ना ईमानदार और मेहनती है, इसी कारण मैं उसे सबसे ज्यादा प्यार करता हूं।'' दुलारी भी हीरा-मोती की कपट भरी बातें सुनकर, हैरान रह गई थी। वह जान गई कि पन्ना पिता को सबसे प्यारा क्यों था। उसके मन में भी पन्ना के लिए अधिक प्यार उमड़ आया।

एक रात छविराम ने पन्ना को बुलाया। बोला—''बेटा, तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें जमीन में गड़ा धन निकालकर दे दूं।'' छविराम पन्ना को हवेली के पिछवाड़े ले गया। जमीन में गड़े तीन कलश खोदकर निकाले और पन्ना को दे दिए।

पन्ना ने कहा—''पिता जी, आपने अपनी इच्छानुसार सारा धन मुझे दे दिया। यह मेरा हो गया। अब मैं चाहता हूं कि हम तीनों भाई एक-एक कलश आपस में बांट लें। आशा है, आपको कोई आपत्ति नहीं होगी।''

छविराम पन्ना की उदारता देखकर दंग रह गया। जब बाप-बेटे कलश हवेली में ले जा रहे थे, तो राज-सैनिकों ने उन्हें देख लिया। वे समझे कि कलशों में चोरी का धन है। वे छविराम तथा पन्ना को पकड़कर ले गए। छविराम ने उन्हें बहुत समझाना चाहा, पर कोई लाभ न हुआ। सुबह दोनों को धन के साथ दरबार में पेश किया गया। राजा ने कहा—''छविराम, जमीन में गड़ा धन राज्य की सम्पत्ति होता है। तुमने राज्य का धन क्यों निकाला ?''

पन्ना ने हाथ जोड़कर कहा—''महाराज, अपराध क्षमा हो। यह धन पिता जी ने चोर-डाकुओं के भय से जमीन में छिपाकर रखा था। यह धन राज्य का नहीं है। हम तीनों भाइयों को देने के लिए पिता ने इसे बाहर निकाला है।''

''यह धन राजकोष में जमा होगा। इस पर तुम लोगों का कोई अधिकार नहीं है।''—राजा ने कहा।

पन्ना बोला—''महाराज, आप राजा हैं। न्याय करेंगे। इस तरह जनता के धन को जबरदस्ती राजकोष में जमा करना ठीक नहीं। इससे प्रजा का विश्वास डगमगा जाएगा। आप जांच करा लें, यह धन पिता जी का ही है। फिर भी आप जो आदेश देंगे, हमें मान्य होगा।''

पन्ना का निर्भीक स्वर सुनकर राजा सोच में पड़ गए। विचार करने पर उन्हें पन्ना की बात ठीक लगी। उन्होंने पिता-पुत्र को रिहा करने का आदेश दिया। मुहरों के तीनों कलश भी उन्हें लौटा दिए गए।

घर लौटकर पन्ना ने कहा—''पिता जी, यह धन हम तीनों भाइयों का है।'' और उसने भाइयों को बुलाकर मुहरों का एक-एक कलश उन्हें दे दिया।

अब बड़े भाइयों को भी पछतावा हुआ। वे पन्ना से क्षमा मांगने लगे। जवाब में पन्ना मुसकराकर बोला—''बड़े आप हैं। क्षमा तो मुझे मांगनी चाहिए।'' इसके बाद तीनों भाई मिल-जुलकर रहने लगे। ●

# लोक परलोक

—मालती सिंह

एक किसान था, रघू। उसका एक ही बेटा था—मोहन। मोहन तीन वर्ष का था, तो उसकी मां स्वर्ग सिधार गई थी। रघू का जीवन भी सूना हो गया था। लोगों ने बहुत समझाया, पर रघू ने दूसरी शादी नहीं की। वह नहीं चाहता था कि मोहन पर सौतेली मां का साया पड़े।

मोहन ग्यारह वर्ष का था, तो बीमार पड़ा। रघू ने अच्छे से अच्छे डाक्टर से उसका इलाज करवाया। इसी दौरान इलाज के लिए पैसा जुटाने में उसे अपनी जमीन व मकान रेहन रखने पड़े।

मोहन स्वस्थ हो गया, पर कुछ ही दिन बाद उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा क्योंकि रघू की मृत्यु हो गई। उसने जैसे-तैसे पिता का दाह संस्कार कर दिया। अब वह एकदम बेसहारा, अनाथ रह गया था। रघू की मृत्यु के दूसरे ही दिन महाजन रेहन के कागज लेकर दरवाजे पर आ धमका। उसने मोहन से कहा—

"तुम्हारे पिता ने तुम्हारे इलाज के लिए कई हजार रुपए उधार लिए थे। या तो रकम चुकाओ या मकान खाली कर दो। जब मेरी रकम लौटा दोगे, तो मैं तुम्हारे खेत और मकान वापस कर दूंगा।"

मोहन हक्का-बक्का रह गया। वह क्या करता। घर में तो एक पैसा भी नहीं था। कई गांव वालों ने भी महाजन का पक्ष लिया। मोहन ने आंसू भरी आंखों के साथ अपने घर से विदा ली। वहां से अपने मामा के घर चला गया। कुछ दिन वहां रहा पर उसका मन नहीं लगा। आखिर एक दिन उसने मामा से कुछ रुपए लिए और शहर आ गया।

शहर आकर मामा के दिए रुपयों से उसने एक ठेला खरीद लिया और फल बेचने का धंधा शुरू कर दिया। वह सुबह से रात तक कड़ी मेहनत करता। सही दाम, ठीक तोल और मधुर व्यवहार—इनके बल पर उसका काम चल निकला।

दो-तीन वर्ष बाद मोहन ने एक दुकान ले ली। अब सब उसे फलवाला मोहन के नाम से जानने लगे। दूर-दूर से ग्राहक उसकी दुकान पर आने लगे। काम बढ़ा, आमदनी अच्छी हो गई। दुकान पर दो नौकर भी रख लिए। मोहन खुश था। वह लोगों से कहता था—"यह सब मेरे बड़ों के आशीर्वाद का फल है।"

तीन-चार वर्षों में ही मोहन ने अच्छा धन कमा लिया। उसका फलों का व्यापार दिन दूना-रात चौगुना बढ़ रहा था। कुछ समय बाद उसने कपड़ों की एक बड़ी दुकान भी खोल ली। पैसा जैसे बरस रहा था—लक्ष्मी प्रसन्न थीं। अब शहर के बड़े व्यापारियों में उसकी गिनती होने लगी थी। एक शानदार हवेली में रहने लगा था। धीरे-धीरे दस वर्ष बीत गए। शहर के मशहूर जौहरी की बेटी से उसका विवाह हो गया।

एक दिन मोहन ने अपने गांव जाने का निश्चय किया। वह एक शानदार गाड़ी में बैठकर गांव पहुंचा। मोहन का रूप इतना बदल गया था कि गांव में कोई न पहचान सका।

मोहन सीधा महाजन के घर पहुंचा। अपना परिचय दिया, तो महाजन आंखें फाड़े उसे देखता रह गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। मोहन ने कहा—"मैं अपना मकान छुड़ाने आया हूं। अपनी रकम लेकर घर के कागज मुझे वापस कर दीजिए।"

"सिर्फ घर के?"—महाजन ने कुछ हैरानी से पूछा। मोहन का ठाठ-बाट देखकर वह सब समझ गया था।

"हां, केवल घर के कागज वापस चाहिएं।"—मोहन ने गंभीरता से कहा—"जल्दी बोलिए, कितने रुपए हैं?"

महाजन ने कुछ सोचकर कहा—"बेटे, रकम

की भी खूब कही । रघू ने मुझसे पांच हजार रुपए लिए थे । ब्याज जोड़ूं तो पंद्रह हजार हो जाएंगे । पर तुम्हारे पिता से मेरे पुराने संबंध थे । इसलिए तुम मुझे दस हजार रुपए ही दे दो ।''

मोहन ने कहा—''मेरे लिए दस-बीस हजार रुपए की कोई कीमत नहीं । और मुझे घर भी वापस नहीं चाहिए । मुझे तो बस घर के आंगन में लगे नीम के पेड़ की जरूरत है । बताइए, कितने रुपए दूं—दस, बीस या पच्चीस हजार !''

—''पर तुम इतनी अधिक रकम क्यों देना चाहते हो ?''

जवाब में मोहन ने अपनी जेब से एक बहुत पुराना कागज निकाला । महाजन को दिखाकर बोला—''यह मेरे दादा के हाथ का लिखा हुआ है । उन्होंने कई हजार चांदी के सिक्के मकान के आंगन में पेड़ के नीचे गाड़े थे । बाद में उन्हें कभी सिक्कों की जरूरत ही नहीं पड़ी । तभी उनकी मृत्यु हो गई । वह पिता जी को भी कुछ बता नहीं सके । यह खत उनके पुराने कागजों में मुझे मिला था । मुझे पक्का विश्वास है कि सिक्के अब भी वहीं होंगे । इसीलिए मैं खोदकर सिक्के निकालना चाहता हूं ।''

चांदी के हजारों सिक्कों का नाम सुनकर महाजन के मन में लालच आ गया । उसने झट कहा—''बेटा, आज तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं । पर मेरा धंधा अब नहीं चलता । बड़ा परिवार है । मैंने समय पर तुम्हारे पिता की मदद की थी, इसे मत भूलो ।''

''आखिर आप कहना क्या चाहते हैं ?''—मोहन ने पूछा ।

—''यही कि तुम मुझे जो रुपए देने वाले थे, उन्हें अपने पास रखो । चाहो तो मैं कुछ रकम और भी दे सकता हूं । पर मकान की सब चीजें मेरे ही पास रहने दो ।''

मोहन ने कहा—''पिता जी ने मकान आपके पास बंधक रखा था, उसके आंगन में गड़ा हुआ धन नहीं । मैं नहीं चाहता कि मामला थाना-कचहरी तक जाए । जो पंद्रह हजार आप मुझसे मांग रहे थे, उतने ही मुझे दे दीजिए, तो मैं मकान तथा पेड़ पर अपना दावा छोड़ दूंगा ।''

महाजन ने ज्यादा बात करना ठीक न समझा, नहीं तो मामला हाथ से निकलने का डर था । उसने झट पंद्रह हजार रुपए गिनकर मोहन को दे दिए । मोहन रकम लेकर मन ही मन हंसता हुआ लौट गया ।

महाजन को रात भर नींद न आई । सुबह उसने मजदूर बुलवाकर पेड़ को कटवाने का काम शुरू करा दिया । पेड़ के नीचे की जमीन गहराई तक खोद डाली गई पर कहीं कुछ न मिला । अब जाकर महाजन को लगा कि उसके साथ धोखा हुआ है । उसने मोहन को खोजने का प्रयास किया, पर मोहन अपना पता भी नहीं छोड़ गया था ।

शाम को महाजन पस्त होकर चारपाई पर गिर पड़ा । पत्नी से कहने लगा—''मैं लुट गया । वह बदमाश छोकरा मुझे धोखा दे गया । अब मैं क्या करूं ?''

पत्नी ने समझाया—''देखो, हमारे पास इतना धन है, पर खाने वाला कोई नहीं । अब यह चक्कर छोड़ो । वह पाप की कमाई थी । जो हुआ ठीक हुआ । मैं तो कहती हूं, भगवान में ध्यान लगाओ तो परलोक सुधर जाए ।''

पत्नी की बात सुनकर महाजन चुप हो गया । उसे लगा, पत्नी ठीक ही कह रही है । परलोक सुधारने की बात ने जैसे उसकी आंखें खोल दी थीं । ●

# मोती बरसते हैं मेरे आंगन में

— जयप्रकाश भारती

भारत मां के आंचल में बेशकीमती नगीना है गोवा।

उत्तर भारत में आम तौर पर समझते हैं कि गोवा में ईसाई अधिक हैं। सोचा था कि सड़कों पर यूरोपीय फैशन के कपड़े पहने लोग अधिक दिखेंगे। लेकिन ऐसा कुछ नहीं है। यह ठीक है कि ईसाई सबसे पहले यहीं आए। पर वह चार सौ साल से भी पहले की बात है। गोवा की सड़कों पर महाराष्ट्र के सादे लिबास में स्त्री-पुरुष अधिक दिखाई देते हैं। वे कोंकणी या मराठी बोलते हैं। हिंदी सभी समझ और बोल लेते हैं। भोजन में चावल मुख्य होता है।

जल-मार्गों का जाल फैला है गोवा में। मांडवी, जुवारी, तेराखुल, शापोरा, साल और तलपन प्रसिद्ध नदियां हैं। सड़कें घुमावदार और ऊंची-नीची हैं। जिधर भी जाएंगे, जल निगाहों से ओझल नहीं होगा। जून के महीने में अधिकांश भारत गर्मी में झुलसता है, पर गोवा में रिमझिम फुहारें पड़ने लगती हैं। गोवा का एक लोकगीत है—"मेरे आंगन में मोती बरसते हैं, भला मैं अपना देश छोड़कर परदेस क्यों जाऊं!"

समंदर के सुनहरे तटों से घिरा है गोवा। उन किनारों पर नारियल के पेड़ झूमते हैं। बादल झुक-झुककर उन पेड़ों को छू लेना चाहते हैं। दूध जैसी धवल समंदर की लहरें बढ़-चढ़कर पेड़ों को सींचा करती हैं। सैलानी इन्हीं तटों की बहारों का आनंद लेने खिंचे चले आते हैं। रात की चांदनी में ये किनारे चांदी की तरह चम-चम चमकते हैं। इनमें कुछ हैं—कलंगुट, कोलवा, दोना पोला, श्रीदाओ, वेगेटोर, मैनड्रम-मोरजिम, बेतुल-पटोलम। कलंगुट तट पणजी से पंद्रह किलोमीटर दूर है, पर गोवा में सबसे सुंदर है।

गोवा में छोटे-छोटे कई सौ गांव हैं। दो मुख्य जिले हैं, उत्तर और दक्षिण। पणजी यहां की राजधानी है—शांत शहर है, पेड़ों और फूलों से भरा-भरा। यों तो पूरा गोवा ही हरा-हरा है। बीच-बीच में बोगनबेलिया की बेलें और सुर्ख रंग के गुलमोहर के पेड़। लगता है, प्रकृति ने कोई बड़ी पेंटिंग बना दी हो।

गोवा में गिरजाघर खूब हैं और हिंदू मंदिर भी। श्रीमंगेश मंदिर बड़ा मशहूर है। इसके चारों तरफ हरे पहाड़ हैं। श्रीगोपाल गणपति का मंदिर फर्मागुडी में है। कहते हैं, यह मूर्ति चरवाहों को मिली थी। अन्य प्रमुख मंदिर हैं— शांता दुर्गा, श्री नागेश, महालक्ष्मी, कालिका देवी, विट्ठल मंदिर और मल्लिकार्जुन। पुराने गोवा के कई गिरजाघर खास तौर से प्रसिद्ध हैं—बोझीसस की बेसीलिका। यहां संत फ्रांसिस का पवित्र शव कीमती मंजूषा में रखा है। यह गिरजाघर बालक ईसा मसीह को समर्पित है। से केथेड्रल गोवा का सबसे सुंदर गिरजाघर माना जाता है।

काजू, काली मिर्च, सुपारी, किस्म-किस्म के मसाले और धान यहां खूब पैदा होता है। आम और नारियल के बगीचे भी हर तरफ नजर आते हैं। समुद्री पानी से नमक तैयार किया जाता है। सीप, मूंगे, मछलियां, छोटे-बड़े शंख और कौड़ियां यहां के विशेष उपहार हैं।

गोवा आने वाले सैलानियों की तादाद तेजी से बढ़ी है। पर्यटन विभाग ने ठहरने के लिए नए और आधुनिक होटल बनाए हैं। वर्षा शुरू होने पर हंसी-खुशी का नया त्योहार शुरू किया है। वैसे तो आए दिन यहां पर तीज-त्योहार मनाए जाते हैं। रंग-बिरंगी यात्राएं निकला करती हैं। एक ओर गोवा में बहुत-कुछ पुराना है, तो स्वाधीन गोवा नए को अपनाकर आगे बढ़ा है। रोशनी से जगमगाता पानी का जहाज यात्रियों को लेकर चलता है और कई घंटे घूमता रहता है। सभी यात्रियों को दूर किसी गांव के किनारे छोड़ देता है, जहां नाच-गाना हो रहा हो। गोवा के तरह-तरह के भोजन और पकवान का आनंद भी आप ले सकते हैं।

# नंदन ज्ञान पहेली

**१००० रु॰ पुरस्कार**
**कोई शुल्क नहीं**
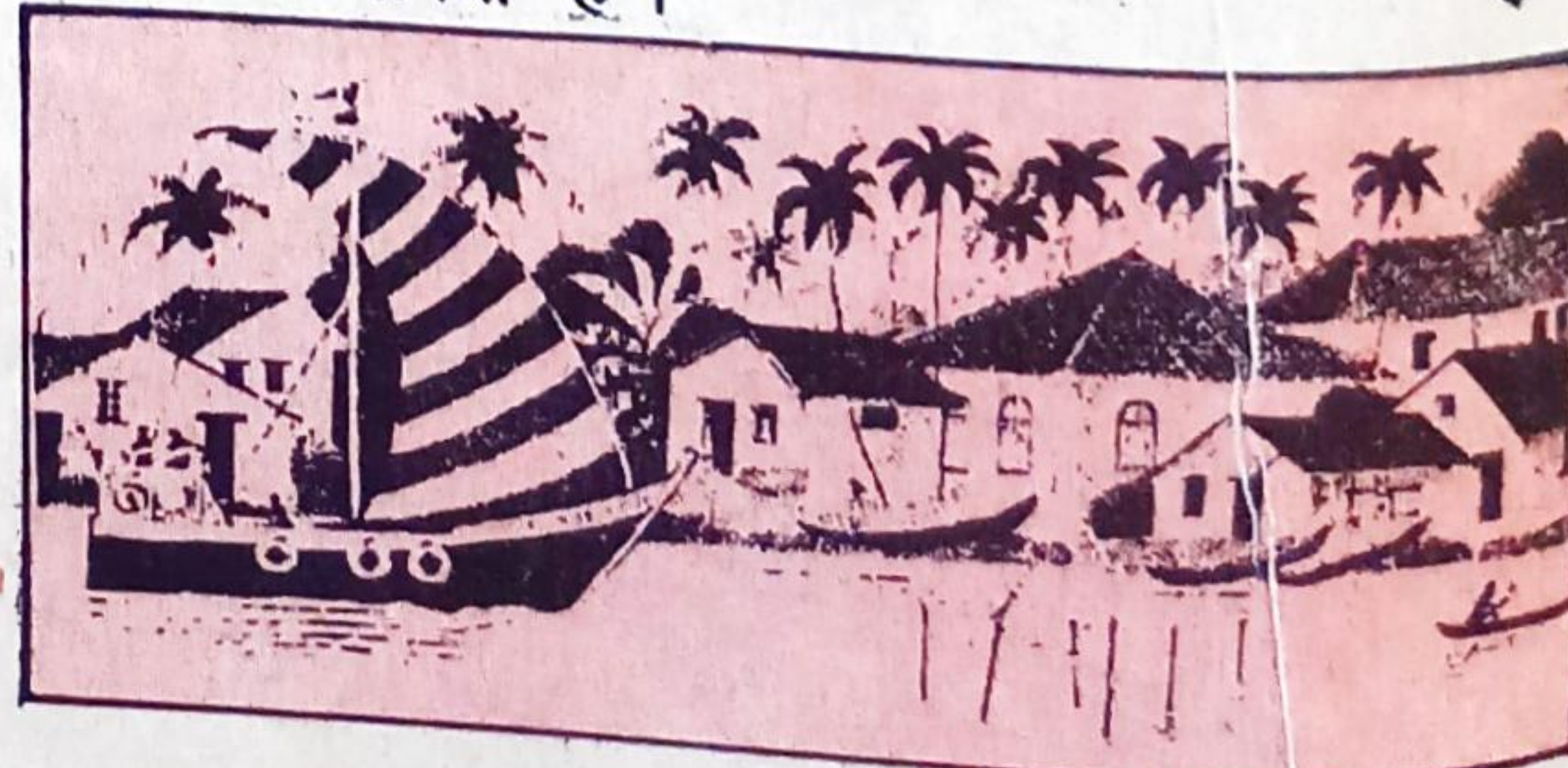
## नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

## संकेत

### बाएं से दाएं

१. मेरे लिए यह—ही चंदन है।
(माटी/माला)

२.—मुझे पसंद नहीं है अम्मां।
(भालू/भात)

४. सुनो, यह काम—मत करना।
(कभी/कल)

८. जी, यह बड़ा—है।
(बेटा/खोटा)

९. तुम कब से—रहे हो अनुज ?
(रो/खा)

**१२. भारत का एक प्रसिद्ध नृत्य।**

### ऊपर से नीचे

३. आश्चर्य ! बच्चा—मांग रहा है।
(तोप/कप)

५. यह—अनमोल है विप्र।
(पान/पात्र)

६. जल्दी बाजार से—लेकर आओ।
(मावा/माल)

७. आखिर कृष्ण ने ही उसे—।
(मारा/तारा)

१०.— ने तुम्हें क्या सौगात दी शिप्रा ?
(नाना/मैना)

**११. कभी यहां भी घूमने जाएं !**

काटिए

## नंदन ज्ञान-पहेली : २८४

नाम ____________________

उम्र ________ पता ____________________

____________________

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मा | | | २ भा | | | ३ |
| | ४ क | | | | | प |
| ५ पा | | | ६ मा | | ७ | |
| | | | | | रा | |
| | ८ | टा | | ९ | | १० |
| ११ | अंतिम तिथि: १५-८-९२ | | | | | ना |
| टी | | १२ | थ | | लि | |

नं॰ ज्ञा॰ प॰ २८४

## नाचा शेर

सोनारी गांव बियाबान जंगल के बीच बसा था। वहां के लोग जंगल से लकड़ी, फल-फूल तोड़, पास के शहर में बेचकर जीवन व्यतीत करते रहे थे।

एक रात गांव में हाहाकार मच गया। एक शेर रात को गांव के मुखिया को ही उठा ले गया। उसके दो दिन बाद ही जंगल में फल-फूल बीनती दो औरतों को शेर ने अपना शिकार बनाया।

एक दिन सभी गावों के लोगों ने मिलकर राजा के दरबार में फरियाद की। राजा बड़ा दयालु और प्रजा का सेवक था। उसने राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया—'जो उस शेर को जिंदा या मुर्दा पकड़ लाएगा, उसे मुहमांगा इनाम और दरबार में नौकरी दी जाएगी।'

राज्य के कई शिकारियों ने अपना भाग्य आजमाया लेकिन कोई भी शेर को न मार सका। एक दिन भोलू नामक एक आदमी ढोलक लिए दरबार में आया। उसने शेर को जिंदा दरबार में लाने का दावा किया। उसने शेर के लिए एक बड़ा पिंजरा बनाने को कहा, जिसमें दो दरवाजे होने थे।

भोलू ढोलक बजाता हुआ जंगल की ओर चल पड़ा। उस ढोलक की आवाज कुछ विचित्र सी थी। अचानक वही भयानक शेर जंगल से दहाड़ता हुआ बाहर आया। यह क्या ? शेर रुक गया। भोलू के ढोलक की थाप पर वह नाच उठा। अब भोलू आगे-आगे ढोलक बजाता हुआ और शेर नाचता हुआ पीछे-पीछे।

दरबार की ओर पहुंचते-पहुंचते हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी। अजीब नजारा था। दरबार के बीचोंबीच वह पिंजरा रखा था। भोलू धीरे-धीरे पिंजरे के अंदर ढोलक बजाते हुए घुसा। पीछे-पीछे शेर भी अंदर आया। भोलू दूसरे दरवाजे से जैसे ही बाहर निकला दोनों दरवाजे बंद हो गए। शेर अंदर गुर्राने लगा क्योंकि ढोलक की आवाज बंद हो चुकी थी। भयानक शेर पिंजरे में बंद हो गया था। राजा ने भोलू को गले लगा लिया। उसे बहुत-सा इनाम दिया और दरबार में अच्छी नौकरी दे दी।

—बंटी, जमशेदपुर

## जादुई ढोल

रघुनाथ अपने चाचा के साथ रहता था। उसके माता-पिता का देहांत हो चुका था। रघुनाथ के चाचा उसे बहुत चाहते थे। एक शाम रघु के चाचा घर नहीं लौटे। रघु हाथ में लालटेन लेकर उन्हें लेने चल पड़ा। जंगल से गुजरते समय उसके सामने एक परछाईं आ गई। उस परछाईं ने रघु से कहा—'रघु, डरो मत, मैं हरिया किसान हूं। जमींदार के आदमियों ने मुझे मार डाला था। मेरे मरने के बाद तुमने मेरी पत्नी और बच्चों की जो सहायता की है, उससे मैं बहुत प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें यह ढोल देता हूं। इस ढोल को बजाते हुए तुम जो कहोगे, वही होगा।'

दूसरे दिन रघु सुबह उठकर बाहर आया, तो उसने देखा जमींदार के आदमी उसके पड़ोस में रहनेवाले किसान को कोड़े से मार रहे हैं। भीतर गया और ढोल बजाते हुए बोला—"हे जादुई ढोल, जमींदार के आदमियों की इसी कोड़े से पिटाई करवा दे।" कोड़ा जमींदार के आदमियों पर बरस पड़ा। अपने आदमियों की हालत देखकर, जमींदार भाग खड़ा हुआ।

राजा को जब यह घटना मालूम हुई, तो उन्होंने रघु को महल में बुलवाया। तभी एक सिपाही ने आकर यह सूचना दी कि एक शेर ने पूरे राज्य में तहलका मचा दिया है। वह सिपाही पूरी सूचना भी नहीं दे पाया था तभी रघु बीच में बोल उठा—"महाराज यदि आपकी आज्ञा हो, तो मैं अभी शेर को आपके सामने पेश कर दूं।"

रघु महल से बाहर आ गया और ढोल बजाकर, बोला—"हे जादुई ढोल, वह शेर मेरे सामने तुरंत प्रकट हो।" ऐसा ही हुआ। रघु ने ढोल बजाते हुए कहा—"हे जादुई ढोल, इस शेर को नचा दे।" रघु का इतना कहना था कि शेर को नाचते देख सभी लोग तालियां बजाने लगे।

—हरींद्रकुमार, कलकत्ता

**इनकी भी कहानियां पसंद की गईं : अमित लोहानी, काशीपुर; अरविंद कुमार अग्रवाल, कोटा; ललित मदान, भटिंडा।**

# गाओ नंदनार

—टेकल गोपाल कृष्ण

तमिलनाडु में चिदंबरम नामक एक मशहूर शहर है। यहां का नटराज मंदिर सुप्रसिद्ध है। भरत नाट्यम करने वाले नटराज की प्रतिमा को नमस्कार करके ही अपना प्रदर्शन शुरू करते हैं।

यह बहुत पुरानी बात है, इस शहर के पास एक गांव में नंदनार नामक एक मजदूर रहता था। वह अकेला था, बहुत ईमानदार और मेहनती। खेत में ही एक झुग्गी डालकर रहता था। सूर्योदय से पहले कावेरी नदी में नहाकर फिर नटराज के भक्ति गीत गाकर वह खेत में काम पर लग जाता। उसका मालिक जमींदार नंदनार की मेहनत से बहुत प्रसन्न था। वह कभी-कभी मित्रों से कहता—"नंदनार को ब्राह्मण के यहां जन्म लेना था। वह छोटी जाति में क्यों पैदा हुआ, यह भगवान ही जानें।"

कई साल बीत गए। नंदनार की उम्र ढलने लगी। एक बार शिव रात्रि से पहले नंदनार जमींदार के पास रात में पहुंचा। बोला—"मालिक, कल शिवरात्रि है। मैं चिदंबरम् जाकर नटराज के दर्शन करना चाहता हूं। आप मुझे एक दिन की छुट्टी दे दें।"

जमींदार सोच में पड़ गया—'नंदनार महाभक्त है। यह बात मैं तो जानता हूं। लेकिन मंदिर के पुजारी इसे नहीं जानते। छोटी जाति का समझ, इसे भगवान नटराज के दर्शन नहीं करने देंगे। इससे नंदनार को दुःख होगा।' कुछ देर बाद बोला—"सुनो नंदनार, तुम बहुत अच्छे आदमी हो। तुमने जिंदगी भर मेरी सेवा की है। एक छोटी सी बात के लिए मैं तुम्हें नहीं रोकना चाहता लेकिन फसल तैयार खड़ी है। ऐसे में छोड़ कर जाना ठीक नहीं है। तुम रात में खेत की कटाई पूरी कर लो, फिर सवेरे चले जाना।"

नंदनार चुपचाप खेत पर चला आया। खेत को एक बार देखा। सोचने लगा—'इतना बड़ा खेत रात में भला कैसे कट सकता है। जमींदार ने छुट्टी देने के लिए यह शर्त क्यों लगाई?' भगवान नटराज के गीत गाता हुआ वह फसल काटने लगा। फिर पता नहीं कब नींद आ गई।

सवेरे उठकर देखा, सारा खेत कटा पड़ा है। एक तरफ फसल का ढेर लगा हुआ था। नंदनार को आश्चर्य हुआ। वह चिल्ला उठा—"यह सब नटराज की महिमा है। भगवान, तुमने मेरे लिए, इतना कष्ट क्यों उठाया। तेरे बदन में कितना दर्द होता होगा, मैं जानता हूं।" उसने नदी में स्नान किया। नटराज के गुण गाते हुए सूर्योदय से पहले ही जमींदार की हवेली पर पहुंचा।

नंदनार चिल्लाया—"मालिक! गजब हो गया। रात को नटराजजी ने आकर सारी फसल काट दी। आइए, देखिए उनका चमत्कार।"

जमींदार एक क्षण के लिए स्तब्ध हो गया। उसे मालूम था, नंदसार कभी झूठ नहीं बोलता। वह बोला—"तुम ठहरो, मैं चलता हूं।" दोनों खेत पर पहुंचे। जमींदार ने देखा, नंदनार ने सच कहा था। जमींदार नंदनार के पांव पर गिर पड़ा—"नंदनार, मैं कितना पापी हूं। तुम्हें भगवान के दर्शन से रोकना चाहा था। तुम्हारी आत्मा पवित्र है। मुझे क्षमा कर देना।"

नंदनार ने जमींदार को उठाया और कहा—"मालिक, इसमें आपका कोई दोष नहीं है।" जमींदार ने फौरन इस खबर को सारे गांव वालों को बता दिया। लोग खेत के पास इकट्ठे हो गए। नंदनार को सबने नमस्कार किया। एक बैलगाड़ी में बैठाया, माला पहनाकर जुलूस में चिदंबरम् ले गए। शिव रात्रि के दिन इस चमत्कारी घटना को सुनकर भक्त नंदनार के दर्शन के लिए टूट पड़े। मंदिर के पुजारियों ने माला पहनाकर नंदनार का स्वागत किया। नंदनार ने नटराजजी के दर्शन करके एक भक्ति गीत गाया। लोग इस गीत से बहुत प्रभावित हुए। जमींदार ने नंदनार से विनम्र स्वर में कहा—"आज से वह खेत आपका है। आप मंदिर में ही रहिए। भगवान के गुणगान कीजिए।" यह कहकर उनसे विदा लेकर गांव चला गया। कई साल तक नंदनार भगवान के भक्तिगीत गाते रहे, फिर एक दिन नटराज में विलीन हो गए। ●

# चोट पर चोट

— बृजेश अचल

देवपुर गांव में गौतम नाम का ग्वाला अपनी गायों के साथ रहता था। वह दूध बेचकर अपना भरण-पोषण करता था।

एक बार देवपुर में पानी नहीं बरसा। नदी और तालाब सूख गए। कुओं में भी पानी नहीं रहा। पेड़ पत्तों से रहित हो गए। जमीन में चौड़ी-चौड़ी दरारें हो गईं। पशुओं के लिए घास और चारा तक नहीं रहा।

ऐसे में गौतम का देवपुर में रहना दूभर हो गया था। वह अपनी गायों को साथ लेकर चल दिया। चलते-चलते हरे-भरे प्रदेश में पहुंचा। वह पहाड़ी रास्ते को जल्दी-जल्दी पार कर रहा था। इसी दौरान रास्ते में एक पत्थर से टकराकर गिर पड़ा। पैर में मोच आ गई। दर्द के कारण वह बहुत देर तक उठ भी न सका। इस बीच गायें आगे निकल गईं। वे एक किसान के खेत में घुस गईं। फसल चट कर दी। किसान अपने खेत में आया, तो क्रोध से कांप उठा। उसने गायों को खेत से बाहर निकाल दिया और गायों के मालिक का रास्ता देखने लगा।

कुछ देर बाद लंगड़ाता हुआ गौतम आया, तो किसान बोला—"चलो राजा के पास। तुम्हें मेरी नष्ट हुई फसल का हर्जाना देना होगा।"

वे दोनों राजा के दरबार में पहुंचे। राजा न्याय और बुद्धिमानी के लिए प्रसिद्ध था। किसान ने राजा से कहा—"महाराज, मेरे साथ न्याय होना चाहिए। मेरे खेत की पूरी फसल नष्ट हो चुकी है।"

गौतम ने भी कहा—"महाराज, मुझसे बड़ी गलती हो गई। चोट के कारण मैं पीछे रह गया था। इसी बीच गायों ने फसल नष्ट कर दी। इस गलती के कारण आप जो सजा देंगे, मैं स्वीकार करूंगा।"

राजा ने अपने मंत्री को भेजकर खेत के नुकसान का हिसाब लगवाया। मंत्री ने कहा—"महाराज, किसान के हर्जाने की पूर्ति गौतम की सारी गायें किसान को देकर ही की जा सकती है।"

राजा ने अपने अन्य मंत्रियों से भी सलाह ली। सभी ने यही दोहराया। आखिर राजा ने अपना निर्णय सुना दिया—"किसान को सारी गायें दी जाएं।"

इस निर्णय से गौतम को बहुत निराशा हुई। वह राज दरबार से बाहर जा रहा था। तभी उसे राजकुमार मिला। गौतम को उदास देख, राजकुमार ने इसका कारण पूछा। गौतम ने सब हाल कह सुनाया।

राजकुमार ने कहा—"आओ मेरे साथ।"

गौतम को लेकर राजकुमार दरबार में पहुंचा। अपने पिता को प्रणाम कर, वह बोला—"पिता जी, गौतम के साथ न्याय होना चाहिए। ऐसा न्याय भला किस काम का, जो किसी का सब कुछ छीन ले। गौतम से गलती हुई, पर उसने जानबूझ कर यह नहीं किया। फिर उसका सब कुछ ये गायें ही तो हैं।

"मेरा सुझाव है, गौतम की गायें हमेशा के लिए किसान को न देकर, छह महीनों के लिए ही दी जाएं। इन महीनों में किसान गायों का दूध बेचकर अपना नुकसान पूरा कर लेगा। इसके बाद गौतम की सभी गायें उसे लौटा दी जाएं।"

राजा ने बुद्धिमान राजकुमार की बात मान ली। इस फैसले से किसान और गौतम दोनों खुश हो गए।

# चीटू-नीटू

बाहर बारिश हो रही है, छाते को चूहे कुतर गए

इन चूहों का इलाज करना होगा, चूहेदानी लगाते हैं

चार चूहे फंस गए, इन्हें सुबह बाहर फेंक आएंगे

अरे, चूहे तो चूहेदानी ही कुतर कर भाग गए

रामू से बिल्ली मांग लाएं, वह तो एक दिन में...

मूर्खों, पहले तो चूहों से परेशान थे, अब यह बिल्ली, देखो सारा दूध पी गई

चूहे भगाने की दवा

क्यों न इसे आजमाएं, जहां-जहां चूहे हैं, वहीं डाल देंगे

वे क्या भागेंगे, इतनी बारिश में इन्होंने हमें ही घर से भगा दिया

## पुरस्कृत चित्र

कोकिला, आयु १० वर्ष, पु[illegible] श्री के. के. मनचंदा, डायरे[illegible] आफ इंडस्ट्रीज, पोर्ट ब्ले[illegible] अंडमान-निकोबार द्वीप सम[illegible]

इनके चित्र भी प[illegible] आए—रचिता मरवा[illegible] बम्बई-८०; ट्विंक[illegible] सिकंद्राबाद (आं. प्र. [illegible] वसुधा लोहानी, लखन[illegible] विदुषी भटनागर, भोपाल।

## शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई सुंदर-सा छोटा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ अगस्त १९९२ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। पसंद आए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अक्तूबर '९२ अंक

बाल सभा
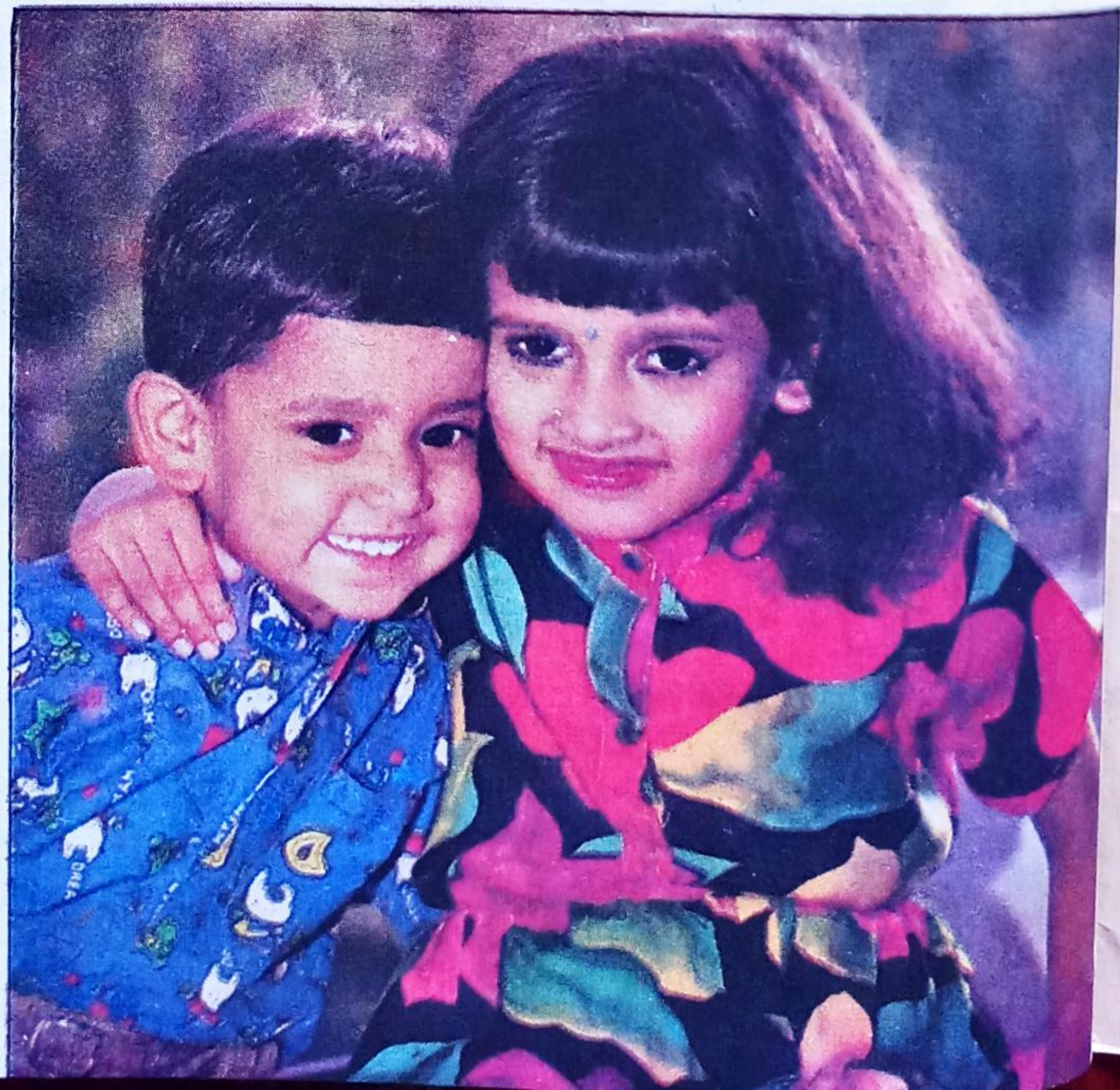
नेहल मनीष अलका अनिलकुमार निशितप्रिया

# तीन बहनें

— ब्रह्मदेव

तीन बहनें थीं। पिता नहीं थे। उनकी मां उनकी देखभाल करती थी। जब तीनों बड़ी हुईं, तो परियों जैसी सुंदर हो गईं। फिर समय पर मां ने उनकी शादी कर दी।

कई साल बीत गए। एक बार बूढ़ी मां बीमार पड़ी। उसे लगा कि तीनों बेटियों से एक बार मिल ले। उसने एक सुनहरी गिलहरी को बुलाया और कहा— ''मेरे अंतिम दिन आ गए हैं। मैं अपनी तीनों बेटियों को देखना चाहती हूं। तीनों को बुला लाओ।''

सुनहरी गिलहरी पहले सबसे बड़ी लड़की के पास गई। वह बर्तन धो रही थी। गिलहरी ने बताया— ''तुम्हारी मां बहुत बीमार है। तुम्हें बुलाया है।'' लड़की बोली— ''बस, दो ढक्कन धोने बाकी हैं। उन्हें धोकर अभी आती हूं।''

गिलहरी को गुस्सा आ गया। वह बोली— ''तू सदा ढक्कनों में ही रहेगी।'' उसके इतना कहते ही दोनों ढक्कन उछलकर लड़की के सिर और पैरों की तरफ आ गए। वह उनमें दब गई, और कछुई बन गई।

अब सुनहरी गिलहरी मंझली लड़की के पास गई। वह कुछ बुन रही थी। गिलहरी ने मां की बीमारी की बात कही। वह बोली— ''बस, थोड़ी-सी बुनाई बाकी है, समाप्त करके चलती हूं।''

गिलहरी को गुस्सा आ गया। वह बोली— ''जा, तू हमेशा बुनाई ही करती रहेगी।'' मंझली लड़की उसी समय मकड़ी बन गई। और अब तक जाले ही बुन रही है।

अब सुनहरी गिलहरी, सबसे छोटी लड़की के पास गई। वह रोटियां सेक रही थी। उसे भी गिलहरी ने मां की बात सुनाई। सुनते ही, उसने हाथ का काम छोड़ दिया। बोली— ''अरे! मेरी मां बीमार हैं! वह एकदम अकेली हैं।'' कहती हुई वह बिना हाथ धोए ही घर से भाग निकली। मां के पास पहुंचकर उसने मां की खूब सेवा की।

सुनहरी गिलहरी ने उसे जाते हुए देखा, तो बोली— ''तू हमेशा लोगों को मीठा-मीठा प्यार देगी।''

सबसे छोटी लड़की ने आनंद से जीवन जिया। मरने के बाद मधुमक्खी बन गई। •
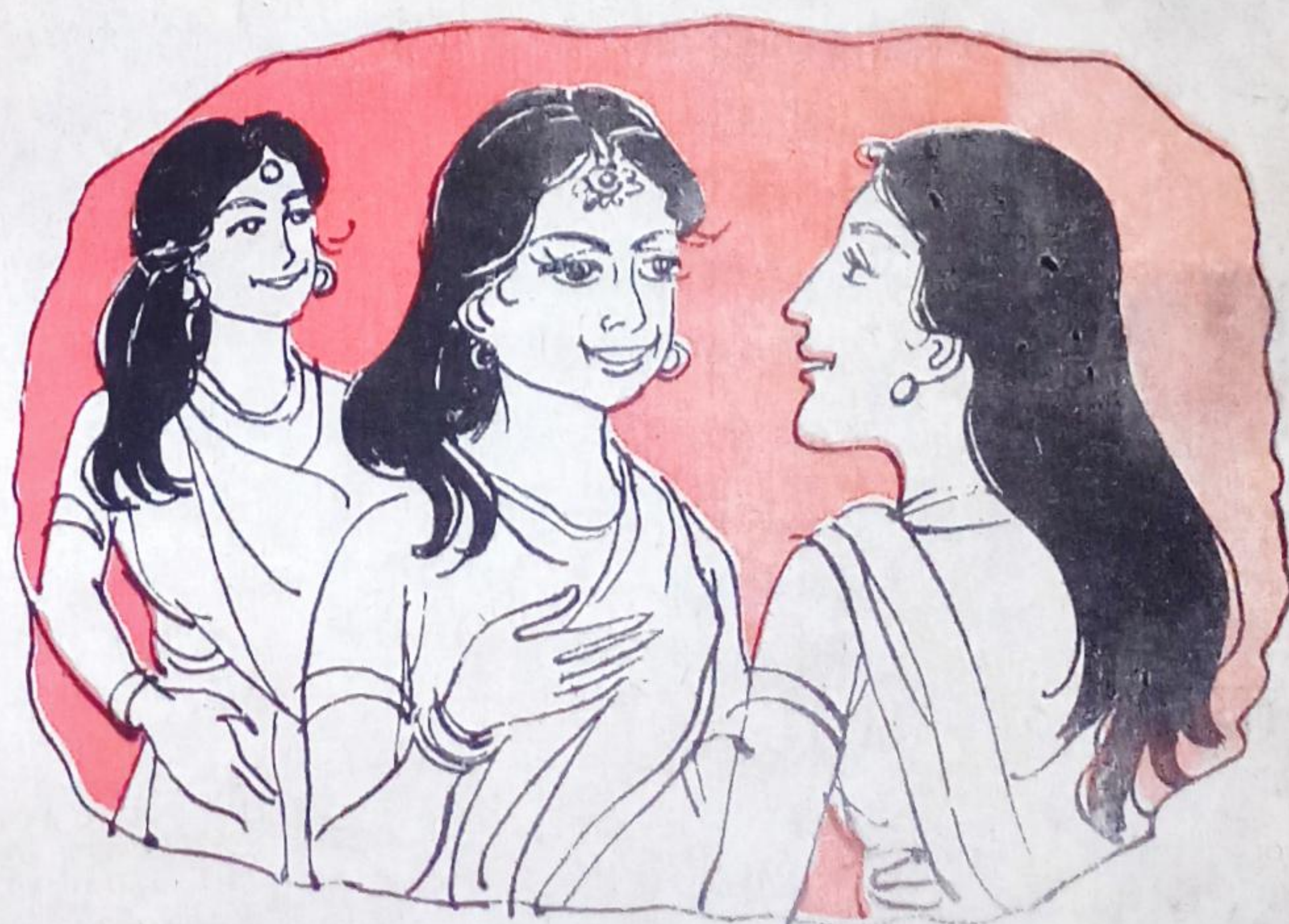
# शीर्षक बताइए : परिणाम

ढेर सारे शीर्षक मिले । जून '९२ में छपे रंगीन चित्र पर पुरस्कार के लिए ये शीर्षक चुने गए—

**चाहे सुबह हो या शाम, खाओ आम-खिलाओ आम ।**

—मेहा चौधरी, दिलीपकुमार चौधरी, ४३/२, ओल्ड एरिया, क्यू टाइप, आर्डिनेंस फैक्ट्री स्टाफ, पो. रायपुर, जि. देहरादून (उ. प्र.) ।

**आम फलों का राजा है, रहता हरदम ताजा है ।**

—विनोदकुमार भाटिया, निकट—जी.एफ.ओ.डी., ग्रा.+पो. कंद्रौरी, जि. कांगड़ा (हि. प्र.) ।

**मैंने डाली पकड़ी हाथ, खींचो फोटो इसके साथ ।**

—गायत्री शर्मा, ब्रह्मानंद शर्मा, गांधी चौक (पोस्ट आफिस के पास) सुल्तानपुर (राज.) ।

**लूंगी बस केवल दो आम, नहीं यहां लालच का काम ।**

—प्रभुदयाल माहेश्वरी, ७३ बी, सी-४-डी., जनकपुरी नई दिल्ली ।

**इनके शीर्षक भी पसंद आए :** योगेश रंजन, झज्जर (हरि.); अविनाशकुमार, गाजीपुर (उ.प्र.); पिंकी, बंगलौर; सिद्धार्थकुमार, जम्मू ।

## आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. आदमी की कमीज का दायां कालर बड़ा है ।
२. उसकी टाई पर डिजाइन है ।
३. छाते के ऊपर निकला डंडा छोटा है ।
४. गैस पर रखी केतली से भाप निकल रही है ।
५. गैस के चूल्हे पर तीन की जगह दो बटन हैं ।
६. लड़के के पास रखा चम्मच गायब है ।
७. लड़के के हाथ का कप डिजाइनदार है ।
८. खड़ी औरत का मुंह बंद है ।
९. औरत के पास सिंक से अधिक झाग बह रहा है ।
१०. बैठे आदमी के बाईं तरफ दो बोतलें रखी हैं ।

# नंदन ज्ञान-पहेली : २८२

## परिणाम

इस बार पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया । इतने सर्वशुद्ध हल आ गए कि पुरस्कार देने के लिए लाटरी का सहारा लेना पड़ा । पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है :

**सर्वशुद्ध : बीस : प्रत्येक को पचास रुपए**

१. बबीता, दिल्ली; २. स्मिता श्रीवास्तव, लखनऊ; ३. ऋतु वर्मा, गाजियाबाद; ४. पराग दलाल, उज्जैन; ५. पंकजकुमार सुमन, पटना; ६. सोनाली ठाकुर, रायपुर; ७. शालू प्रीत कौर, अमृतसर; ८. अतुल तनेजा, नई दिल्ली; ९. मीना रानी, कलायत (कैथल); १०. लवि सक्सेना, मुरादाबाद; ११. मनोजकुमार गुप्ता, पंडरिया (बिलासपुर); १२. गुरप्रकाश सिंह सासन, श्यामपुर (देहरादून); १३. विनोदकुमार, बयाना (राज.); १४. मनु गर्ग, जहांगीराबाद (उ.प्र.); १५. महेन्द्रसिंह भाटी, जोधपुर; १६. वैभव अग्रवाल, गढ़मुक्तेश्वर; १७. मो. आसिफ मेमन, कांकेर (बस्तर); १८. विभोर मंगल, सहारनपुर; १९. अनिल विज, अबोहर; २०. सुनीलकुमार साहू, भिलाई नगर (म.प्र.) ।

# ये लो रुपए

—मधुलता राय

एक गांव में मंगत और जगत नाम के दो पड़ोसी रहते थे। दोनों अच्छे मित्र थे। उन्हीं के चलते उनकी पत्नी व बच्चे भी घुलमिल कर रहते थे। किसी के मन में छलकपट नहीं था।

मंगत धोबी था। गांव भर के कपड़े धोकर अपना व अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। महीने में थोड़ा-बहुत पैसा बचा भी लेता था। जगत अहीर था। उसकी दो भैंसें और तीन गायें थीं। घर के पीछे उसकी थोड़ी-बहुत जमीन भी थी, जिसमें वह सब्जियां उगाता था। दूध और सब्जी बेचकर वह अपना खर्च चलाता था। हर महीने काफी बचत हो जाती। दोनों हंसी-खुशी जीवन बिता रहे थे।

लेकिन एक दिन दोनों में अनबन हो गई। मंगत का गधा उसी रात रस्सी तुड़ाकर जगत की सारी सब्जियां चर गया था। जगत गधे का कान पकड़े मंगत के घर ले गया। शिकायत की कि उसका गधा सारी सब्जियां चर गया है।

"क्या कहूं दोस्त !..." मंगत ने एक गहरी सांस लेकर कहा— "जाने कब यह रस्सी तुड़ाकर भागा और तुम्हारा खेत चर गया।"

—"यह सब तुम्हारी लापरवाही के कारण हुआ है। उसकी रस्सी कमजोर हो गई थी और तुमने उस पर ध्यान ही नहीं दिया।" फिर वह तेवर बदलकर बोला— "मैं कुछ नहीं जानता, तुम दो सौ रुपए दो। वैसे हिसाब जोड़ूं तो पांच सौ से कम नहीं पड़ेंगे।"

"अरे यार, कैसी बातें करते हो ?"— मंगत ने हंसने का प्रयत्न करते हुए कहा— "एक जानवर से गलती हो और तुम मुझसे हर्जाना मांगने लगो, यह तो ठीक नहीं।"

"दोस्ती अपनी जगह पर है।"—जगत गंभीरतापूर्वक बोला— "यह व्यापार व पैसे का मामला है। गलती तुमसे हुई हो या तुम्हारे गधे से, हर्जाना तो तुम्हें ही चुकाना पड़ेगा। अगर न चुकाया, तो मैं गधे को ले जाऊंगा। इसे बेचकर पैसे वसूल कर लूंगा।"

इस पर मंगत को भी गुस्सा आ गया। दोनों में तू-तू-मैं-मैं होने लगी। फिर वे हाथापाई पर उतर आए। देखते ही देखते पूरा गांव मंगत के दरवाजे पर इकट्ठा हो गया। लोगों ने किसी तरह समझा-बुझाकर उन्हें अलग कर दिया।

शाम को पंचायत बैठी। पंचों ने दोनों की बातें सुनीं और सर्वसम्मति से यह फैसला दिया— "मंगत के गधे ने जगत को काफी नुकसान पहुंचाया है। अतः मंगत जगत को दो सौ रुपए दे।" बेचारा मंगत कर भी क्या सकता था। बड़ी मुश्किल से उसने तीन-साढ़े तीन सौ रुपए जमा किए थे। उनमें से दो सौ रुपए उसने जगत को दे दिए। उस दिन से उनकी पत्नी व बच्चों की भी दोस्ती टूट गई।

इसके कुछ दिनों बाद मंगत गांव से बाहर कपड़े धो रहा था। कुछ कपड़े उसने पोखर के बाहर सूखने के लिए फैला रखे थे। तभी जगत की एक गाय आ गई और देखते ही देखते एक नई साड़ी आधी चबा गई।

मंगत घाट पर कपड़े छोड़, बाहर निकला और गाय की गर्दन में अंगोछा डाल गांव भर के लोगों को दिखाता हुआ, जगत के घर ले आया।

उस दिन भी पंचायत बैठी, मंगत ने कहा— "यह साड़ी बहुत ही कीमती है, करीब सात-आठ सौ रुपए की। लेकिन जगत मेरा दोस्त रह चुका है, अतः पांच सौ रुपए ही दे दे।" पंचों ने मंगत के हक में फैसला सुनाया। जगत को उसे पांच सौ रुपए देने पड़े।

दूसरे दिन मंगत जगत के घर गया और उसे तीन सौ रुपए लौटाते हुए बोला— "माफ करना दोस्त, पंचायत में मैंने झूठ बोला था। साड़ी दो सौ रुपए की थी। अब हमारा हिसाब-किताब बराबर हो गया।" और दोनों एक-दूसरे के गले से लगकर खुशी के मारे रो पड़े। ●

# फूल ने कहा

—जयप्रकाश मिश्र

विजयनगर और गंगानगर पड़ोसी राज्य थे। गंगानगर विजयनगर के पूर्व में स्थित था। विजयनगर में कृष्ण प्रताप का शासन था। गंगानगर के राजा थे असीम सेन।

विजयनगर तथा गंगानगर के बीच पुश्तैनी दुश्मनी थी। कई पीढ़ियों से दोनों राज्यों के बीच संबंध कटे हुए थे। इसीलिए सीमाओं पर तनाव रहता था। दोनों राज्यों की सेनाओं के बीच मुठभेड़ हो जाया करती थी। इसलिए तनाव घटने की जगह और भी बढ़ जाता था।

कभी विजयनगर वाले सीमा पार करके दूसरे के पशु उठा लाते, तो कुछ दिन बाद गंगानगर के सैनिक भी बदले की कार्यवाही करते। इसी तरह समय बीत रहा था। पुश्तैनी दुश्मनी थी दो राजघरानों की, पर कष्ट भोगने पड़ते थे साधारण जनता को। सीमा के निकट रहने वालों को हर समय संकट झेलना पड़ता था। न दिन में चैन था, न रातों को नींद आती थी। सच तो यह था कि दोनों राज्यों की प्रजा इस बात से तंग आ चुकी थी।

एक बार कृष्ण प्रताप बीमार पड़े और उनकी मृत्यु हो गई। इस पर असीम सेन बहुत प्रसन्न हुए। लगा जैसे उन्होंने विजयनगर को पराजित कर दिया हो। पर यह खुशी अधिक दिन तक न रही। एक रात अचानक असीम सेन की भी मृत्यु हो गई।

कृष्ण प्रताप का सबसे बड़ा बेटा राघवेंद्र सिंहासन पर बैठा। उधर असीम सेन के इकलौते बेटे हरि सेन ने सत्ता संभाली। दोनों ही अपने पूर्वजों की तुलना में अधिक उदार और समझदार थे। वे चाहते थे कि कई पीढ़ियों से चली आ रही दुश्मनी समाप्त हो जाए। दोनों राज्य मित्र पड़ोसी बनकर रहें।

उन्होंने समझ लिया था कि आमने-सामने की लड़ाई में वे एक-दूसरे को कभी नहीं हरा सकेंगे। लेकिन सवाल यही था कि दोस्ती का हाथ कौन बढ़ाए? जो पहल करता, उसे कायर भी समझा जा सकता था। इसी आशंका के कारण वे चुप थे। पर संघर्ष दोनों के मन में चल रहा था।

एक दिन विजयनगर के राजदरबार में एक अजनबी आया। उसने महाराज राघवेंद्र से मिलने की इच्छा प्रकट की। राजदरबार के अधिकारियों ने अजनबी का नाम-पता पूछा। उसके आने का उद्देश्य जानना चाहा। लेकिन अजनबी ने किसी को कुछ न बताया। उसने कहा—"मुझे जो कुछ कहना है, महाराज से कहूंगा। वैसे आप लोग बिल्कुल चिंता न करें। मैं जो कुछ भी करूंगा, उसमें आपका और आपके राज्य का हित ही होगा।"

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि अजनबी कौन है? और अपने बारे में क्यों नहीं बता रहा है। अंत में काफी सोच-विचार के बाद महाराज राघवेंद्र को अजनबी के बारे में बताया गया। उन्होंने उसे बुलवा लिया।

अजनबी को महाराजा के सामने ले जाया गया। उसने महाराज राघवेंद्र को सिर झुकाकर प्रणाम किया। फिर बोला—"महाराज, मैं समझ रहा हूं कि सब मेरा परिचय जानने को उत्सुक हैं। मेरी प्रार्थना है कि इस बारे में मुझसे कुछ न पूछा जाए। मैं अपने साथ एक विशेष संदेश लाया हूं। यदि आज्ञा हो, तो निवेदन करूं।"

महाराज राघवेंद्र ने कहा—"ठीक है, तुमसे कोई कुछ नहीं पूछेगा। अब अपने आने का उद्देश्य बताओ।"

अजनबी ने एक पुड़िया में से दो बीज निकाले। उन्हें राघवेंद्र को देते हुए बोला—"महाराज, यह प्रेम का संदेश है। आप स्वयं इसे जमीन में बो दें। इसका

अंकुर आपको प्रेम का संदेश देगा। फिर जब इस पर फूल लगेंगे, तो आप सब कुछ समझ जाएंगे। आपके राज्य में एक से बढ़ कर एक विद्वान, गुणवान हैं। यदि कठिनाई होगी, तो वे लोग उस संदेश का अर्थ आपको समझा देंगे, इसका मुझे विश्वास है।'' इतना कहकर उसने आज्ञा ली और जैसे आया था, वैसे ही चला गया।

महाराज राघवेंद्र की उत्सुकता और भी बढ़ गई। वह कुछ देर तक बीजों को उलट-पलटकर देखते रहे। फिर उठकर उद्यान में चले गए। दोनों बीजों को बो दिया। फिर सेवकों से कहा—''इन बीजों का ध्यान रखना। वैसे हम स्वयं इनकी देखरेख करेंगे। देखें, ये बीज प्रेम-प्यार का कौन-सा संदेश देते हैं हमें ?''

कुछ ही दिनों में बीजों से अंकुर फूट निकले। राजा स्वयं रोज उद्यान में आते थे। धीरे-धीरे वहां दो नन्हें पौधे झूमने लगे। राजा बड़े जतन से पौधों की देखरेख कर रहे थे। पर बात अब भी समझ में नहीं आ रही थी।

पौधे बड़े हुए। फिर उन पर एक-एक फूल निकल आया। पीले फूल जो पूरब की ओर झुके हुए थे। उद्यान में वैसे अन्य पौधे नहीं थे। महाराज ने पता लगवाया। मालूम हुआ, वे फूल सूरजमुखी के थे।

महाराजा राघवेंद्र हवा में झूमते सूरजमुखी के फूलों के सामने खड़े सोचते रहे— 'आखिर इसका अर्थ क्या है ? वह अजनबी कह रहा था कि इन पौधों पर लगने वाले फूल प्यार का संदेश देंगे। कैसा संदेश ! किसने भेजा है ?' आखिर उन्होंने वहीं, उद्यान में विशेष दरबार का आयोजन किया। राज्य के जाने-माने विद्वानों को बुलवाया गया। उन्हीं में वयोवृद्ध विद्वान रघुपति नारायण भी थे। राजा के पूछने पर सबने अपने-अपने विचार बताए। कोई कुछ कह रहा था, तो कोई कुछ। पर राजा संतुष्ट नहीं थे। कोई भी विद्वान उनके प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया था।

आखिर रघुपति नारायण उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा—''महाराज, आज्ञा हो, तो मैं भी अपने विचार आपके सामने प्रस्तुत करूं।''

''हां, हां, आप अपनी बात कहिए।''—महाराज बोले।

''महाराज, फूल प्रेम और श्रद्धा का प्रतीक होता है। इसलिए जिसने भी इन बीजों को आपके पास भेजा था, वह निश्चय ही आपके प्रति मैत्री की भावना रखता है। अब प्रश्न है कि इन फूलों के बीज किसने भेजे ? महाराज देखें, फूल पूरब की ओर झुके हैं। क्या यह इस बात का संकेत नहीं है कि बीज पूर्व दिशा से आए। उधर गंगानगर है। मुझे तो लगता है, ये बीज रजा हरि सेन ने भेजे हैं आपके पास !''— रघुपति नारायण ने कहा।

उनकी बात सुनकर महाराजा राघवेंद्र बहुत खुश हुए। उन्होंने तुरंत कहा—''हां, अब सारी बात स्पष्ट हो गई है। गंगानगर पूर्व में है। दोनों राज्यों के बीच शत्रुता है। और हरि सेन ने फूलों के बीज भेजकर हमारी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया है। मैं भी कुछ ऐसी ही बात सोच रहा था।'' महाराज के होठों पर हंसी थी।

''राजा हरि सेन ने बिना कहे ही अपने मन के भाव आपके सामने प्रकट कर दिए हैं।''— रघुपतिनारायण ने आगे कहा।

''पंडित जी, तो अब हमें क्या करना चाहिए ?''— महाराज पूछ रहे थे।

''पुष्प का उत्तर पुष्प ही होता है। मित्रता के लिए बढ़ा हुआ हाथ अवश्य थाम लेना चाहिए। आप भी उन्हें फूल भेंट कर दीजिए। उन्हें उनके संदेश का समुचित उत्तर मिल जाएगा।''—पंडित रघुपति नारायण के इतना कहते ही सब वाह-वाह कर उठे।

शीघ्र ही विजयनगर का दूत एक विशेष पेटी में फूल रखकर गंगानगर के लिए चल दिया। महाराज हरिसेन ने पेटी खोलकर फूल देखे, तो प्रसन्नता से हंस पड़े। उन्होंने दूत से कहा—''मुझे यह भेंट स्वीकार है।''

और फिर एक दिन महाराज राघवेंद्र ने हरि सेन को विशेष निमंत्रण भेजा। दोनों राजा गले मिल रहे थे और दोनों राज्यों की प्रजा नई मैत्री की खुशी में दीवाली मना रही थी। ●

# रथ का पहिया

—योगराज थानी

बहुत पुरानी बात है, यूनान के नगर एलिस में एक राजा राज्य करता था। उसका नाम ओनोमास था। उसकी एक पुत्री थी— हिप्पोडेमिया। राजकुमारी की उम्र विवाह के लायक हो गई थी। दूर-दूर से नवयुवक राजा के पास आते। राजकुमारी से विवाह करने की इच्छा प्रकट करते।

राजा ओनोमास बड़े विचित्र स्वभाव का था। उसने घोषणा की—'जो भी रथ में मुझसे आगे निकल जाएगा और मुझे रथ दौड़ में हरा देगा, वही हिप्पोडेमिया से विवाह कर सकेगा।' साथ ही यह भी शर्त थी कि हारने वाले युवक को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।

युवकों में शर्त जीतने की होड़ लग गई। लेकिन एक-एक करके तेरह युवक अपनी जान से हाथ धो बैठे।

उसके बाद एक और युवक ओनोमास के पास आया। उसका नाम था— पेलोप्स। वह कई दिन पहले एलिस में आया था। वह किसी तरह राजा के सारथि से मिला। उससे कहा— "तुम मेरी सहायता करना।" फिर उसे काफी धन दिया। निश्चित दिन रथों की दौड़ शुरू हुई। राजा ने पेलोप्स के रथ के निकट पहुंचकर अपना भाला उठाया। तभी उसके सारथि ने रथ के पहिए की कील निकाल दी। कील निकलते ही तेजी से दौड़ता हुआ रथ गिरकर टूट गया।

निर्दयी और क्रूर राजा की मृत्यु के बाद पेलोप्स ने राजकुमारी हिप्पोडेमिया से विवाह किया। उसने एलिस का राज्य भी प्राप्त किया। इसके बाद पेलोप्स ने ओलम्पिया में ओलम्पिक खेलों और धार्मिक समारोहों का आयोजन किया। कहते हैं, यह घटना ई.पू. ८८४ में हुई थी।

प्राचीन ओलम्पिक खेलों का आयोजन धार्मिक समारोह के रूप में होता था।

# वह कौन ?

प्राचीन ओलम्पिक खेलों में महिलाएं भाग नहीं ले सकती थीं। न स्टेडियम में खेल देखने के लिए जा सकती थीं। ऐसा करने वाली औरत को दंड मिलता था। ओलम्पिक चैम्पियन रोहड्स की एक पुत्री थी। उसका नाम फेरेनिस था। फेरेनिस का पुत्र था पिसीरोड्स। जिस समय वह ओलम्पिक खेलों में भाग ले रहा था, तो उसकी मां फेरेनिस ने पुरुषों का वेश बना लिया। फिर वह स्टेडियम में चली गई। पूछने पर उसने कहा—"मैं प्रशिक्षक हूं।" पुरुष वेश में फेरेनिस दर्शकों के बीच जा बैठी। किसी को उस पर संदेह नहीं हुआ। पिसीरोड्स प्रतियोगिता में जीत गया। यह देख,फेरेनिस खुशी से पागल हो गई। वह अपने पुत्र को गले लगाने के लिए दौड़ पड़ी। अब सबको पता चला कि वह धोखे से स्टेडियम में आई थी।

यह एक गम्भीर अपराध था। प्रायः ऐसा करने वाली औरतों को कड़ा दंड दिया जाता था। मगर फेरेनिस के पिता और भाई ओलम्पिक चैम्पियन रह चुके थे। और अब उसके पुत्र ने यह श्रेय प्राप्त किया था। इसी कारण फेरेनिस को क्षमा कर दिया गया।

वैसे १९०० में पेरिस में हुए ओलम्पिक खेलों से महिलाओं ने इस प्रतियोगिताओं में भाग लेना शुरू किया था।

## एक-दो-बारह

प्राचीन यूनान का योद्धा था— हरक्यूलीज । एक बार उसके मन में इच्छा हुई कि अपनी बहादुरी के कारनामे दिखाए जाएं । हरक्यूलीज के बारे में कहा जाता है कि वह आधा मनुष्य था और आधा देवता । यूनानी और रोमवासी उसकी पूजा देवता के रूप में किया करते थे ।

हरक्यूलीज को देवताओं का वरदान प्राप्त था । जब वह बहुत छोटा था, तो दो विषैले सांप पालने के दोनों तरफ बैठ गए । लेकिन बच्चे ने सांपों को गर्दन से पकड़कर मार दिया । देखने वाले आश्चर्य चकित रह गए थे ।

जब हरक्यूलीज बड़ा हुआ, तो उसने राजा की सेवा करने की इच्छा प्रकट की । राजा ने उसे वीरता के बारह कठिन कार्य बताए, जिन्हें कोई नहीं कर पाया था । हरक्यूलीज ने अपनी वीरता से उन्हें पूरा किया । कहा जाता है कि उन्हीं की स्मृति में ओलम्पिक खेलों का आरम्भ हुआ था ।

## हम जीत गए

ओलम्पिक खेलों में मैराथन दौड़ का मुकाबला सब से कठिन माना जाता है । इसमें खिलाड़ी को २६ मील ३८५ गज की दूरी तय करनी होती है । इस दौड़ का इतिहास बहुत प्राचीन है ।

ईसा पूर्व ४९० की बात है । पर्शिया और यूनान के बीच युद्ध हुआ । यूनान की सेना ने पर्शिया की विशाल सेना को हरा दिया । एक बहादुर सिपाही फिडिपिडेस ने लड़ाई में भाग लिया । वह बहुत वीरता से लड़ा । विजयी सेनापति ने उसने अपने नगर में विजय का शुभ समाचार पहुंचाने का आदेश दिया । फिडिपिडेस थका हुआ था, पर उसने यह जिम्मेदारी स्वीकार कर ली । वह ऊबड़-खाबड़ रास्तों से भागने लगा ।

युद्ध में लहूलुहान हो चुका था । पर वह भागता रहा । तन की शक्ति समाप्त होने पर, वह मन की शक्ति से भागता चला गया । जब वह नगर के चौराहे पर पहुंचा, तो डगमगा रहा था । उसके मुंह से अंतिम वाक्य यह निकला— "खुशियां मनाओ । हम जीत गए हैं । शांति नष्ट होने से बच गई ।" और फिर धरती पर गिर पड़ा । उसकी मृत्यु हो गई ।

उसी सैनिक की याद में हर ओलम्पिक में मैराथन दौड़ का आयोजन होता है । न दौड़ पाने की स्थिति में साहस के साथ दौड़ते जाना, यही इसका उद्देश्य है । कहते हैं, मैराथन दौड़ का फासला वही है— जो घायल फिडिपिडेस ने पार किया था ।

मनोबल इस दौड़ का मुख्य आधार होता है । यदि इसके इतिहास पर नजर दौड़ाएं, तो पता चलता है कि इस दौड़ को एक बार यूनान के गड़रिए ने, पेरिस के डबलरोटी बनाने वाले के बेटे ने जीता, तो कभी दक्षिण अफ्रीका के एक सिपाही ने, सिलाई मशीन के एक सेल्समैन ने, कभी किसी अखबार विक्रेता ने । इथोपिया के एक शाही सिपाही ने नंगे पैर दौड़ कर दो बार ओलम्पिक रिकार्ड तोड़ा । इथोपिया के अबेबे विकिला ने १९६० और १९६४ के ओलम्पिक खेलों में लगातार दो बार स्वर्ण पदक प्राप्त किए थे ।

## पहला विजेता

यह ई.पू. ७७६ की घटना है । ओलम्पिया स्टेडियम में बैठे ४५ हजार दर्शक अचानक उठ खड़े हुए और जोर-जोर से तालियां बजाने लगे । खेल के मैदान में हो रही पैदल दौड़ प्रतियोगिता में एक खिलाड़ी भागकर सबसे आगे पहुंच गया था । उसका नाम था कोरोबुस और वह एक बावर्ची था । वह ओलम्पिक खेलों के इतिहास में अमर हो गया । शुरू-शुरू में इन खेलों में केवल एक प्रतियोगिता होती थी— पुरुषों की पैदल दौड़ । इसकी दूरी स्टेडियम की लम्बाई यानी लगभग २०० गज के बराबर होती थी ।

# पत्र-मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ———————————— आयु ————

पूरा पता ————————————

————————————

रुचि ————————————

**पुस्तक पढ़ने एवं लेखन में रुचि :**

१. दिलीपकुमार मोदी, १५ वर्ष, द्वारा सीताराम मोदी, राव कुटीर, पालित पारा, कटक; २. विकास जैन, १६, जैन फोटोस्टेट, १३/४३१-ए, नुनिहाई, आगरा; ३. कुणाल शर्मा, १५, २९३-एम, कीमती अपार्टमेंट, खाली वाला टैंक, इंदौर; ४. रूपेशकुमार झा, १४, भोलानाथ झा, ग्रा.+पो. डभारी बभनी, सुपौल (बि.); ५. प्रकाश मोहन, १३, दीनानाथ सिंह, भारतीय स्टेट बैंक, सासाराम (बि.); ६. अभिषेक जैन, १४, सी-२३२, दयानंद मार्ग, तिलक नगर, जयपुर; ७. केशवसिंह चौहान, १५, प्रेमवीरसिंह चौहान, शिवपुरी, गंजडुंडवारा, एटा; ८. वीरेंद्र बोथरा, १६, मेघराज अमरचंद बोथरा, पुरानी लेन, गंगाशहर, बीकानेर; ९. संजीवकुमार राणा, १६, कालूराम, जानसठ रोड, भूठ, खतौली, मुजफ्फरनगर; १०. यूसुफ अहमद, १६, कुर्ला पाइप रोड, १७/१० एल.आई.जी. कालोनी, मुंबई; ११. जयप्रकाश कुमार, १५, डा. लालमोहन सिंह, जंदाहा, वैशाली; १२. ओमप्रकाश बिष्ट, १६, सैक्टर १, म.न. ए/३४१, राउरकेला (उड़ीसा); १३. अजयकुमार चौधरी, १५, राकेश रोशन, धर्मशाला रोड, कोआथ, रोहतास (बि.); १४. राजेशकुमार, १४, १०२, शक्तिनगर, जालंधर सिटी; १५.हेमंत शिवनानी, १४, ५१८/१४ नला बाजार, अजमेर; १६. अमरेशकुमार वर्मा, १३, राजेशकुमार वर्मा, छोटकी नवादा (बि.); १७. जौली चंदवरिया, १६, ६४ पुलिया शर्की, रामलीला मढ़ी, एटा; १८. राकेश गुप्ता, १४, म.नं. ४०८, वार्ड नं. १, आई.टी.आई. कालोनी गेट, नारनौल (हरि.); १९. प्रदीपकुमार, १४, रविराज टैक्सटाइल्स, गांधी रोड, पिलखुवा, गाजियाबाद; २०. संदीपकुमार, १६, म.नं. ३४, निकट आर्यसमाज मंदिर, मो. पधानान, मंडी धनौरा; २१. प्रेमरंजन खत्री, १२, खत्री इलेक्ट्रिक, ग्रा.+पो. पालीगंज, पटना; २२. चितरंजन, १६, धीरेंद्र इलेक्ट्रिकल्स, रोहडू, शिमला; २३. संजयकुमार पंजवानी, १५, कृष्णचंद्र पंजवानी, लाल बाग, गली ६, राजनांद गांव (म.प्र.); २४. अनिमेषकुमार, १४, अरुणकुमार, निकट रूपम सिनेमा, आरा; २५. नारायण वेद, १६, गरोठ रोड (डिम्पल चौराहा) शामगढ़, मंदसौर; २६. रविकुमार गाडिया, १४, बौथी माता चौक, बैरगनिया, सीतामढ़ी; २७. वीरेंद्र मिश्रा, १६, १२/१५७, उर्रहट, रीवा।

**खेल, संगीत एवं चित्रकला में रुचि :**

१. योगेश लखानी, १६ वर्ष, लखानी जनरल स्टोर, बस स्टैंड, बेगूं, चित्तौड़गढ़; २. अफजल हुसैन, १५, रुई की दुकान, तिनाली, पो. डिगबोई (असम); ३. नीरजकुमार, १६, एन. शर्मा, डाक निरीक्षक, भभुआ, रोहतास (बि.); ४. कंवलजीत, १३, एल-९३-डी, साकेत, नई दिल्ली; ५. सत्यप्रकाश, १५, जयकरण गुप्त, एडवोकेट, भीखनपुर, भागलपुर; ६. सोना मिश्र, १६, बी.एम. मिश्रा, धन्वंतरि फार्मेसी, चंदौसी, मुरादाबाद; ७. रित्रेशकुमार, १६, गिरवर प्रसाद, १४३, डिफेंस कालोनी, कंकड़ बाग, पटना; ८. अमित गर्ग, १४, १७५, डासना गेट, गाजियाबाद; ९. रवीशचंद्र, १४, पशुपतिनाथ जायसवाल, १४, ग्रा.+पो. कल्याणपुर, मुंगेर; १०. आलोक पटैरिया, १६, आलोक सदन, रघुराज गंज, हरपालपुर (म.प्र.); ११. प्रमोदकुमार, १३, बी-२३२, रेलवे कालोनी, अम्बाला छावनी; १२. गगन गुलाटी, १३, १३३-बी, मजलिस पार्क, आजादपुर, दिल्ली; १३. अमितकुमार, १४, डी/५०, गली-१०, ब्रह्मपुरी, दिल्ली; १४. अभिषेक जैन, १३, जनता मेडिकल स्टोर, खेकड़ा, मेरठ; १५. हरपाल छाबड़ा, १२, एम/३२१४, संजय कोयला नगर, शहडोल (म.प्र.); १६. अमित बंसल, १२, २-ई/९२ नेहरू नगर, गाजियाबाद; १७. सीतू भाटिया, १४, ८५५, वैलकम हाउस, जी.टी. रोड, सीलमपुर-३, शाहदरा, दिल्ली; १८. रवि चौहान, १५, प्लाट-१, म.नं. १२९, मुगलसराय, वाराणसी; १९. रूबिया गुप्ता, १४, मल्होत्रा गली, म.नं. ९४, जम्मू; २०. अनुभा उपाध्याय, १४, ४० साउथ राज मोहल्ला, इंदौर; २१. कुमार आनंदरंजन, १४, दिवाकर पांडेय, यूको बैंक, सुखराज राय रोड, भागलपुर; २२. प्रतिभा जोशी, १३, डा. वाई.के. जोशी, निकट पूर्णिमा होटल, धार (म.प्र.)।

**डाक टिकट संग्रह, भ्रमण एवं पहेली में रुचि :**

१. क्रिनल पांडव, १२ वर्ष, डी-१/४, इनकम टैक्स कालोनी, इंदौर; २. दिव्य चतुर्वेदी, १७, नवीन गल्ला मंडी, देवनगर कालोनी, रायबरेली रोड, फैजाबाद; ३. मुनीश बंसल, १७, ओम्प्रकाश बंसल, महावीर ट्रेडिंग कम्पनी, जगरांव (पंजाब); ४. ललितकुमार राका, १५, कजोड़ीमल, राम चौक, पो. आमेट, राजसमंद (राज.); ५. विनोद अग्रवाल, १५, राजेश अग्रवाल, पुराने थाने के पास, जि. दमोह (म.प्र.); ६. मंजु अग्रवाल, १५, हनुमान प्रसाद अग्रवाल, पो. कतरासगढ़, धनबाद; ७. दीप्ति जैन, १३, ६६/१ ईस्ट आजाद नगर, दिल्ली।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

रजि. न. डी एल-२७००५/९२ आर. एन. आई न. १०५२५/६४